Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

Gaya

तर्पण

2016

पितृपक्ष मेला, गया (बिहार)

जिला प्रशासन, गया की प्रस्तुति

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

Gaya

तर्पण

2016

स्मारिका

प्रधान सम्पादक

गोवर्द्धन प्रसाद सदय

सम्पादन-सहयोगी

कंचन कुमार सिन्हा

डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी

डॉ० राम सिंहासन सिंह

डॉ० ब्रजराज मिश्र

संयोजक

दिलीप कुमार देव

जिला जन-सम्पर्क पदाधिकारी, गया

प्रकाशक

जिला प्रशासन, गया

राम नाथ कोविन्द

राज्यपाल, बिहार

सत्यमेव जयते

राजभवन, पटना – 800 002
दूरभाष : 0612–2217626
फैक्स : 0612–2786184

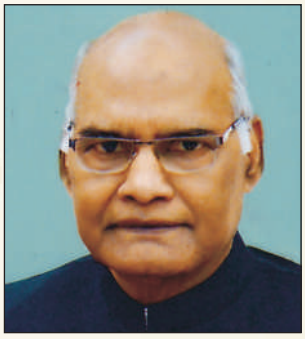

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि विश्वप्रसिद्ध 'पितृपक्ष मेला - 2016' का आयोजन आगामी 15 सितम्बर 2016 से प्रारंभ होने जा रहा है।

आशा है, अपने पितरों की आत्मा की शांति हेतु 'तर्पण' करने गया पहुँचने वाले देशी-विदेशी लाखों तीर्थ-यात्रियों को इस अवसर पर प्रशासन द्वारा हर संभव सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी।

इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली 'स्मारिका' मेले की ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता से परिचित करानेवाली तथा अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक रूप में प्रकाशित होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं 'पितृपक्ष मेला - 2016' के आयोजन एवं 'स्मारिका' के प्रकाशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

रामनाथ कोविन्द

(राम नाथ कोविन्द)

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री
बिहार

बिहार सरकार

आवास : 1, अणे मार्ग
पटना - 800001

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि पितृपक्ष मेला के अवसर पर जिला प्रशासन, गया ने एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस वर्ष यह मेला 15 सितम्बर, 2016 से प्रारंभ होगा और 30 सितम्बर, 2016 तक चलेगा।

आदिकाल से गया नगर का धार्मिक महत्त्व रहा है। गया ज्ञान, कर्म और अध्यात्म-चिन्तन का केन्द्र स्थल है। प्रत्येक साल देश-विदेश से लाखों लोग यहाँ अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए पिण्डदान करने आते हैं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। बाहर से आने वाले श्रद्धालु एक पवित्र कामना की पूर्त्ति हेतु आते हैं। अतः उनका दर्जा आदृत अतिथि का है। इन्हें हर प्रकार की सुविधा मुहैया कराना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि आने वाले लोग अपने जेहन में इस मोक्ष-धाम की उत्कृष्ट छवि लेकर लौटें।

आशा है, इस अवसर पर प्रकाश्य स्मारिका गया-महात्म्य का दर्पण होगी।

(नीतीश कुमार)

तेजस्वी प्रसाद यादव
Tejaswi Prasad Yadav

उप-मुख्यमंत्री
बिहार सरकार
Deputy Chief Minister
Govt. of Bihar

बिहार सरकार

संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला का आयोजन इस वर्ष दिनांक-15.09.2016 से 30.09.2016 तक विष्णु नगरी, गया में होने जा रहा है। गया शहर बिहार का एक महत्त्वपूर्ण पौराणिक एवं धार्मिक शहर है, जिसकी प्रसिद्धि पूरे विश्व में है।

पितृपक्ष मेला के अवसर पर देश-विदेश से लाखों तीर्थ-यात्री गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए तर्पण करते हैं। पितृपक्ष मेला के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन होना है। मुझे विश्वास है कि उक्त स्मारिका से गया जिला के पौराणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत की जानकारी के साथ-साथ अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों का समावेश होगा, जो आम नागरिकों के साथ-साथ तीर्थ यात्रियों/श्रद्धालुओं के लिए भी पठनीय, अनुकरणीय एवं संग्रहणीय होगा।

पितृपक्ष मेला, 2016 सफल आयोजन एवं उक्त अवसर पर प्रकाश्य स्मारिका के सफल एवं लोकोपयोगी प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(तेजस्वी प्रसाद यादव)

आवास : 5, देशरत्न मार्ग, पटना - 800 001 • टेलीफैक्स : 0612-2215888 • मेल : dycmbihar@gmail.com
Residence : 5, Desh Ratna Marg, Patna - 800 001 • Telefax : 0612-2215888 • E-mail : dycmbihar@gmail.com

अवधेश नारायण सिंह
सभापति
बिहार विधान परिषद्

बिहार सरकार

Awadhesh Narain Singh
Chairman
Bihar Legislative Council

संदेश

यह जानकर हर्ष हो रहा है कि विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला के अवसर पर गया जिला प्रशासन द्वारा ''स्मारिका'' प्रकाशित होने जा रही है।

सनातन परंपरा के अनुसार पितरों की शांति एवं मुक्ति के लिए आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष (पितृपक्ष) में पिण्डदान का अत्यन्त महत्त्व है। इस अवसर पर देश-विदेश से हिंदू धर्मावलम्बी अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति हेतु गया आकर तर्पण करते हैं। फल्गु नदी के किनारे पिण्डदान के लिए यह मोक्षदायिनी भूमि विश्व प्रसिद्ध है।

मैं विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेले की सफलता की कामना करता हूँ और इस अवसर पर प्रकाश्य 'स्मारिका' हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

29/8/16

(अवधेश नारायण सिंह)

2, कौटिल्य मार्ग, पटना - 800 001
2, Kautilya Marg, Patna - 800 001

Tel. : 0612-2215819, 2215245 (O) • Fax : 2215683
2215617 (R) • Mob. : 9431018630

कृष्णनन्दन प्रसाद वर्मा

मंत्री

लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग
सह-विधि विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

विश्वेश्वरैया भवन
बेली रोड, पटना
दूरभाष : 0612-2545180 (का)
फैक्स : 0612-2545181 (का)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि विश्व प्रसिद्ध गया पितृपक्ष मेला का आयोजन इस वर्ष 15 सितम्बर 2016 से 30 सितम्बर 2016 तक किया जा रहा है, साथ ही इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि इस स्मारिका में भगवान विष्णु की नगरी गया धाम से जुड़ी कई स्मृतियां होंगी, जिससे कि बाहर से आने वाले लोगों को गया तथा उसके इतिहास के बारे में जानकारियां मिलेगी। पितृपक्ष मेला गया का ऐतिहासिक धरोहर है। देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु अपने पूर्वजों की आत्मा की चीर शांति हेतु पिंडदान एवं तर्पण के लिए यहाँ एकत्रित होते हैं। उन्हें बेहतर सुविधा मिले, इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना हमसब की जिम्मेवारी है। यहाँ उनके ठहरने, बिजली, पानी एवं चिकित्सा आदि की सुनिश्चित व्यवस्था पर शासन का पूरा ध्यान है। विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेले में पहुँचे पिंडदानियों से गयाधाम मिनी भारत का नजारा पेश करेगा, ऐसा मुझे उम्मीद है।

गया में तीर्थों का प्राण है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को अपनेपन का भाव मिले यह हम सबों की कामना है, साथ ही इस आयोजन की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा)

बिहार सरकार

बिहार सरकार

दूरभाष : 0612-2217355 (का०+फैक्स), 0612-2217988 (आ०) मोबाईल : 9431019240

ई-मेल : madanmohanjha56@gmail.com

डा० मदन मोहन झा

मंत्री

राजस्व एवं भूमि सुधार

विभाग

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष भी गया की पावन धरती पर विश्वप्रसिद्ध पितृपक्ष मेला आगामी 15 सितम्बर, 2016 से प्रारंभ होकर 30 सितम्बर, 2016 तक चलेगा। इस अवसर पर देश-विदेश से लाखों तीर्थयात्री अपने पितरों की आत्मा की शान्ति हेतु तर्पण करने गया आते हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि पितृपक्ष मेला के अवसर पर इस वर्ष भी 'स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

पितृपक्ष मेला की सफलता तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मदन मोहन झा
7.9.2016

(डा० मदन मोहन झा)

39, हार्डिंग रोड, पटना - 800 015

अंजनी कुमार सिंह, भा०प्र०से०
Anjani Kumar Singh, I.A.S.
Chief Secretary

बिहार सरकार
मुख्य सचिवालय, पटना – 800 015
GOVERNMENT OF BIHAR
Main Secretariat, Patna - 800 015
Tel. No. : 0612-2215804 (O), Fax : 0612-2217085
e-mail : anjani41@yahoo.com

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 15 सितम्बर 2016 से प्रारंभ होकर 30 सितम्बर 2016 तक आयोजित होगा। इस अवसर पर देश-विदेश के लाखों तीर्थ यात्री गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए पिण्डदान एवं तर्पण करते है। यह मान्यता है कि पितृपक्ष के दौरान गया में पिण्डदान करने से उनके पूर्वजों की आत्मा को मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिल सकती है। गया पिण्ड दान के लिए अति पवित्र स्थल है। धार्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत श्राद्ध कर्म को विशिष्ट महत्ता प्रदान की गयी है। इसे भारतीय संस्कृति का महान अवदान माना गया है।

पितृपक्ष मेला आयोजन की स्मृतियों को अविस्मरणीय बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला प्रशासन के द्वारा एक स्मारिका 'तर्पण' का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही यह एक सराहनीय प्रयास है। मैं पितृपक्ष मेला 2016 के आयोजन की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अंजनी कुमार सिंह)

ब्रजेश मेहरोत्रा, भा.प्र.से.
प्रधान सचिव
सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग

बिहार सरकार

सूचना भवन, बेली रोड
पटना – 800 015
दूरभाष : 0612 - 2212390
फैक्स : 0612 - 2215926
ई–मेल : secy@prdbihar.gov.in

संदेश

आस्था एवं श्रद्धा के वशीभूत इहलोक-परलोक के साक्षात् संगम का समारोह है - पितृपक्ष मेला जहाँ लोग पितरों के लिए तर्पण, आहुति आदि क्रियाओं द्वारा अपने पितरों की आत्मा की शांति के साथ संतान होने के अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन करते हैं।

मगध प्रक्षेत्र के फल्गु तटीय गया शहर में प्रत्येक वर्ष आश्विन कृष्ण पक्ष में 15 दिवसीय इस आयोजन में पूरे विश्व से लोग आते हैं और अपने पितरों की आत्मा की शांति हेतु पूरी निष्ठा से संत पुरोहितों के निर्देशानुसार प्रक्रिया पूरी करते हैं। पितृपक्ष मेला - 2016 के इस पावन अवसर पर जिला प्रशासन, गया ने स्मारिका प्रकाशन का बीड़ा उठाया है। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है; क्योंकि इसके प्रकाशन से दूर-दूर तक इस सदियों पुरानी प्रचलित परंपरा से लोग अवगत होंगे और इसमें शामिल होने हेतु प्रोत्साहित भी होंगे। मैं इसके सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

(ब्रजेश मेहरोत्रा)

Prof. (Dr.) Md. Ishtiyaque
VICE-CHANCELLOR

अमृतं तु विद्या
मगध विश्वविद्यालय

MAGADH UNIVERSITY
NH-83, Bodhgaya, Gaya - 824 234. (Bihar) India
Mobile : +91-8757652429
Tele. : +91-631-2222714, 2220387 (R)
Fax : +91-631-2221717 (R), 2200572 (O)
Phone : +91-631-2200495 (O)
Website : www.magadhuniversity.ac.in
e-mail : mishtiaak@gmail.com

संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आस्था एवं विश्वास का महापर्व पितृपक्ष के पावन एवं शुभ अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक उत्साहवर्द्धक तथा सराहनीय कदम है। मुझे विश्वास है कि जिला प्रशासन अपने उद्देश्य और इस महत्त्वपूर्ण अवसर के आयोजन में सफल होगा। यह अवसर अपने पितरों के प्रति आस्था और श्रद्धा प्रदर्शित करने का है। इस पुनीत अवसर पर न केवल देश से अपितु विदेशों से हजारों श्रद्धालु अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए तर्पण-श्राद्ध हेतु गया आते है। पूर्वजों के प्रति अपनी श्रद्धा भावना की अभिव्यक्ति कर जो शान्ति मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

मुझे विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका देश-विदेश के श्रद्धालुओं के माध्यम से पितृपक्ष के पुनीत अवसर की महत्ता को प्रसारित करेगी।

मैं पितृपक्ष के सफल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

(मो० इश्तियाक)

Lian Kunga
I.A.S.
Divisional Commissioner
Magadh Division, Gaya

सत्यमेव जयते

दूरभाष : 0631 – 2225821 (O)
2229002 (R)
2221641 (F)
मोबाईल : 9473191426
ई–मेल : divcom-magadh-bih@nic.in

संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि गया में विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 15वीं सितम्बर 2016 से प्रारंभ होकर 30वीं सितम्बर 2016 तक आयोजित होगा। इस अवसर पर देश–विदेश के लाखों तीर्थ यात्री गया पहुँचकर अपने पितरों की आत्मा की चिर शांति के लिए पिण्डदान करने से उनके पूर्वजों की आत्मा को मोक्ष प्राप्ति मे सहायक मिल सकती है। गया पिण्ड दान के निए अति पवित्र स्थल है। धार्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत श्राद्ध कर्म को विशिष्ट महत्ता प्रदान की गयी है। इसे भारतीय संस्कृति का महान अवदान माना गया है।

पितृपक्ष मेला आयोजन के स्मृतियों को अविस्मरणीय बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला प्रशासन के द्वारा एक स्मारिका तर्पण का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही यह एक सराहनीय प्रयास है। मैं पितृपक्ष मेला 2016 के आयोजन की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(लियान कुंगा)

सौरभ कुमार, भा.पु.से.

पुलिस उप-महानिरीक्षक

मगध क्षेत्र, गया

दूरभाष : 0631-2223085 (का०)

0631-2222352 (आ०)

मोबाईल : 9431822960

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि आगामी 15 सितम्बर, 2016 से प्रारम्भ होकर 30 सितम्बर, 2016 तक चलने वाली पितृपक्ष मेला के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रकाशित की जाने वाली ''स्मारिका'' के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया है।

विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला में देश-विदेश से गया पहुँच कर अपने पितरों के आत्मा की शांति हेतु तर्पण करने आये लाखों श्रद्धालुओं की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली हेतु मेरी हार्दिक कामना है, तथा प्रकाशित होने वाली ''स्मारिका'' के लिए मेरी विशेष शुभकामनाएँ।

भवदीय

सौरभ कुमार, भा०पु०से०

गरिमा मलिक, भा.पु.से.
वरीय पुलिस अधीक्षक

सत्यमेव जयते

फोन नं० - 0631 - 2225901 (O)
2225902 (R)
मो० : 9431822973

संदेश

गया का पितृपक्ष मेला का अपना एक पौराणिक इतिहास रहा है। भागवत पुराण के अनुसार त्रेतायुग में 'गय' नाम के राजा के कारण इसका नाम गया पड़ा। यह कथा वायु पुराण की , जिसके अनुसार गय एक असुर था, जिसने अपनी तपस्या से यहाँ तक सिद्धि प्राप्त की कि उसे देखने और स्पर्श करने वाले लोग स्वर्ग जाने लगे। इससे यमराज तथा देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। श्री विष्णु के समझाने-बुझाने पर उस असुर ने प्राचीच गया नगर में प्राणोत्सर्ग किया। इस पर भगवान ने वरदान दिया कि यह स्थान संसार में पवित्रतम होगा। देवता लोग यहाँ विश्राम करेंगे तथा वह भाग गया तीर्थ क्षेत्र के नाम से जाना जाएगा और जो भी दाहक्रिया या पिण्डदान करेंगे, वह अपने पूर्वजों सहित ब्रह्मलोक में जाएँगे। इन्हीं सब मान्यताओं के आधार पर गया के फल्गु नदी के किनारे विष्णुपद मंदिर में पितृपक्ष मेला का प्रतिवर्ष आयोजन होता है। जिसमें प्रतिवर्ष हजारों हिन्दू यात्री मोक्ष प्राप्ति की निमित्त अपने पूर्वजों का श्राद्ध करने विष्णुपद मंदिर आते हैं, तथा पिण्डदान करते हैं।

पितृपक्ष मेला के अवसर पर 'स्मारिका' प्रकाशन का अपना महत्त्व होता है। पितृपक्ष मेला के आयोजन एवं 'स्मारिका' प्रकाशन के लिए शुभकामना प्रदान करती हूँ।

(गरिमा मलिक)
वरीय पुलिस अधीक्षक,गया

शुभाकांक्षा

श्री कुमार रवि, भा.प्र.से.

गया जी के सम्बन्ध में बहुत कुछ पढ़ने और जानने का सुअवसर बहुत पहले से ही मिलता रहा है। किन्तु, जब पिछले अगस्त माह के अंत में अल्प अवधि के लिए गया के जिलाधिकारी के रूप में पदस्थापित हुआ, तब मुझे इस पौराणिक नगर को नजदीक से समझने का मौका मिला। परन्तु, विगत वर्ष के पितृपक्ष महासंगम की तैयारियों के बीच ही मुझे जाना पड़ा तथा पुन: दिसम्बर में यहाँ फिर सेवा करने का मौका मिला। यहाँ की भूमि अनादि काल से आध्यात्मिक रही है। इसके पास ही बोधगया भी अवस्थित है, जो विश्व-धरोहर के रूप में सर्वविख्यात है। फलत: गया और बोधगया का महत्त्व सम्पूर्ण विश्व में विशिष्ट हो गया है।

गया जी में पितृपक्ष के अवसर पर फल्गु के तट पर जो महासंगम होता है, वह अपने-आप में अद्‌भुत तथा अद्वितीय है। इस अवसर पर लाखों की संख्या में यहाँ तीर्थ-यात्री आते हैं तथा देश-विदेश से आये हुए सनातन धर्मावलंबियों की उपस्थिति से गया की आबादी इस अवधि में दुगुनी-तिगुनी हो जाती है, जिस कारण जिला प्रशासन के लिए यह अवसर अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है। यहाँ पधारे सभी लोगों की सुरक्षा तथा उनकी समुचित देख-रेख की जिम्मेदारी प्रशासन पर होती है।

पितृपक्ष मेला प्रतिवर्ष लगता है। इस वर्ष यह 15 सितम्बर से शुरू हो रहा है। इसीलिए इस मेला को सफल बनाने की दृष्टि से तीन माह पूर्व से ही इसकी तैयारी में जिला प्रशासन जुट गया था। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न कार्यों को ससमय कराने हेतु आवास समिति, साफ-सफाई समिति, विद्युत-आपूर्त्ति एवं प्रकाश समिति, पेयजल एवं स्वास्थ्य समिति, जैसे दर्जन भर समितियों के माध्यम से कार्य प्रारंभ किया गया। विगत तीन माह से जिला प्रशासन के पदाधिकारियों के द्वारा की जा रही लगातार मेहनत के बदौलत मेला की तैयारी अंतिम चरण में है।

मैं गया-निवासियों, सामाजिक कार्यकत्ताओं एवं सिविल सोसायटी के सदस्यों का भी धन्यवाद देता हूँ कि इन सभी के द्वारा जिला प्रशासन के कार्यों में लगातार सहयोग किया जा रहा है।

हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि गया धाम में जो भी यात्री आयें, वे सहज ढंग से अपने धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करें। उन्हें किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो। वे हर दृष्टि से सुरक्षित रहते हुए अपना श्राद्ध-कर्म निष्पादित करें। ऐसे बड़े अयोजनों के अवसर पर आवासन, पेयजल, साफ-सफाई, परिवहन एवं सुरक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय होते हैं; जिसकी व्यवस्था पर तीर्थ-यात्रियों का किसी स्थान के प्रति विचार बनते हैं। आवासन हेतु अस्थायी रूप से 27 विद्यालयों में विशेष व्यवस्था की गयी हैं तथा सभी यात्रियों के लिए पेयजल एवं शौचालय की समुचित व्यवस्था की गयी है। नगर निगम के द्वारा साफ-सफाई हेतु तीन पालियों में मजदूरों की भी व्यवस्था की गयी है। सभी यात्रियों की सुविधा के लिए www.pinddaangaya.in के वेबसाईट तथा Android मोबाईल App भी प्रारंभ किया गया है। सभी यात्रियों के परिवहन के लिए दर निर्धारित कर वाहनों की रिंग-सेवा की व्यवस्था की गयी है। साथ ही नि:शक्त एवं वृद्धजनों के लिए भी विशेष व्यवस्था की जा रही है।

पितृपक्ष के अवसर पर प्रत्येक वर्ष एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। प्रस्तुत 'तर्पण-2016' उसी कड़ी का 21वाँ अवदान है। इसके माध्यम से हमारे तीर्थ-यात्रियों को गयाजी का धार्मिक तथा पौराणिक महत्त्व जानने तथा पितर-पूजा संबंधी अन्यान्य अनुष्ठानों की आध्यात्मिकता से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होगा।

अन्त में मैं भगवान विष्णु के चरणों में प्रणति निवेदित करते हुए पितृपक्ष-महासंगम की सर्वतोमुखी सफलता की अशेष कामना करता हूँ।

जिलाधिकारी-सह-अध्यक्ष
संवास सदन समिति, गया।

पितृपक्ष मेले को राजकीय दर्जा देने की अभूतपूर्व, ऐतिहासिक अधिसूचना

बिहार सरकार
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
अधिसूचना

संख्या 8 /नियम संशोधन (रा०मेला) – 03 09/2011 259 (8)/रा० दिनांक 02/09/2014

विभागीय अधिसूचना सं०–677 (8) रां० दिनांक 10.09.2009 द्वारा बिहार राज्य मेला प्राधिकार के प्रबंधन मे दिए गये निम्नांकित मेलों को राजकीय मेला का दर्जा दिया जाता है।

(i) पितृपक्ष मेला, गया

(ii) हरहिर क्षेत्र मेला, सोनपुर (सारण)

बिहार राज्यपाल के आदेश से
ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय, गुलजारबाग, पटना को अधिसूचना की दो प्रति एवं सी०डी० के साथ बिहार राजपत्र के असाधारण अंक में प्रकाशनार्थ प्रेषित करते हुए अनुरोध है कि उसकी 500 (पाँच सौ) अतिरिक्त प्रतियाँ राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग को उपलब्ध करायी जाय।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– माननीय मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, बिहार, पटना/माननीय मंत्री, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के आप्त सचिव, बिहार, पटना/मुख्य सचिव, बिहार, पटना/प्रधान सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के प्रधान आप्त सचिव, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी प्रमंडलीय आयुक्त, बिहार/सभी जिला पदाधिकारी, बिहार को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

ज्ञापांक – 259 दिनांक 02/9/14

प्रतिलिपि :– सभी विभाग/सभी विभागाध्यक्ष, बिहार, पटना को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारवाई हेतु प्रेषित।

ह०/–
(शशि भूषण तिवारी)
निदेशक–सह–
विशेष सचिव, भू–अर्जन।

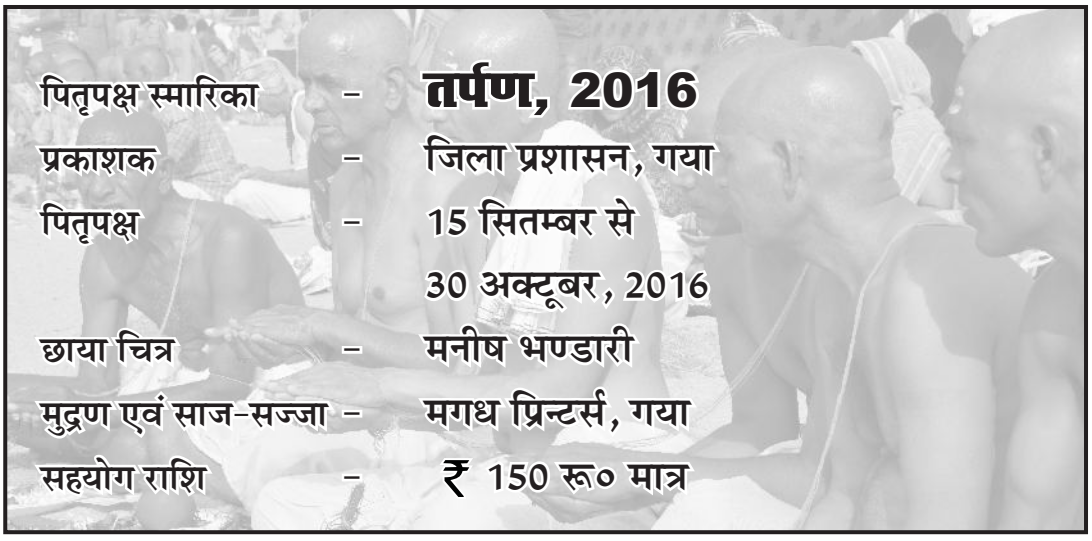

पितृपक्ष स्मारिका – **तर्पण, 2016**

प्रकाशक – जिला प्रशासन, गया

पितृपक्ष – 15 सितम्बर से 30 अक्टूबर, 2016

छाया चित्र – मनीष भण्डारी

मुद्रण एवं साज-सज्जा – मगध प्रिन्टर्स, गया

सहयोग राशि – ₹ 150 रू० मात्र

स्मारिका के सम्पादन-कार्य से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं। स्मारिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों के लिए स्वयं लेखक-गण उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

1. **सम्पादकीय** – श्री गोवर्द्धन प्रसाद सदय 1
2. **आध्यात्मिक दृष्टि से गया का गौरव** – ज०गु०रा० स्वामी वेंकटेश प्रपन्नाचार्य 3
3. **महालया में तिथि श्राद्ध** – आचार्य लाल भूषण मिश्र याज्ञिक 4
4. **श्राद्ध-कर्म का महत्त्व** – पं० रमेश शर्मा 5
5. **तस्मै स्वधा** – आचार्य नवीन चन्द्र मिश्र 'वैदिक' 7
6. **पितृपक्ष और पिण्डदान** – श्री अनिल सक्सेना 8
7. **तर्पण, श्राद्ध और विष्णु नगरी** – पं० बालमुकुन्द 'अगम्य' 10
8. **पितृ – श्राद्ध** – डा० अजय कुमार मिश्र 12
9. **श्रद्धा का अर्पण ही है श्राद्ध** – श्रीमती अनुराधा प्रसाद 13
10. **श्राद्ध एवं वेदियों का पुरातात्विक महत्व** – डा० शत्रुध्न दांगी 14
11. **महाकाल की आदि शक्ति महाकाली** – साहित्यवाचस्पति डा० श्री रंजन सूरिदेव 15
12. **भटकती प्रेतात्माओं को चिर-शान्ति का वरदान** – प्रोफ्रेसर लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा 17
13. **पितृपक्ष मेले का सांस्कृतिक महत्त्व** – श्री अशोक कुमार सिन्हा 19
14. **पितृपक्ष और गया की वेदियाँ** – डा० लाल देव यादव 21
15. **कथं मुक्तिर्भविष्यति ?** – डा० सच्चिदानन्द प्रेमी 24
16. **तर्पण और पिण्डदान का वैज्ञानिक महत्व** – श्री रामनरेश सिंह 'पयोद' 26
17. **पितरों का सम्मान ही पिण्डदान है** – श्री मुद्रिका सिंह 28
18. **पितृतीर्थ गया की पुरातन संस्कृति से आत्माभिमान एवं गौरव की वृद्धि होती है** – प्रो० महेश कुमार शरण 30
19. **काशी में मृत्यु और गया में श्राद्ध** – ई० पम्पी सिन्हा एवं ई० आशीष साकेत 33

20. **गया तीर्थ की देन है चैतन्य की देव-भक्ति** – डा० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि' 34
21. **गया-श्राद्ध का पौराणिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व** – डा० राधानन्दन सिंह 36
22. **कस्मै देवाय हविषाविधेम** – डा० एस.एन.पी. सिन्हा 38
23. **राम कथा : तुलसी और कम्बन के सन्दर्भ में** – डा० वंशीधर लाल 40
24. **त्रय-स्थली में गया जी श्रेष्ठ** – श्री सुमन्त 43
25. **आध्यात्मिक जीवन में गया धाम के अतिरिक्त कुम्भ पर्व की महत्ता** – डा० शिववंश पाण्डेय 44
26. **गया की प्राचीन साहित्य-साधना और साहित्य माला** – डा० राम निरंजन परिमलेन्दु 46
27. **भव-बंधनों से मुक्ति – मानव का लक्ष्य** – श्रीमती सुमित्रा कुमारी 48
28. **पिता का श्राद्ध करने गयाजी आये चैतन्य महाप्रभु** – श्री मुकेश कुमार सिन्हा 51
29. **ग्लोबल वार्मिंग : भयावह स्थिति** – डा० यू.एस. प्रसाद 52
30. **मनुष्य-जीवन की सार्थकता** – प्रो० (डा०) राधे मोहन प्रसाद 54
31. **होई हैं सोहू जो राम रचि राखा** – श्रीमती गीता कुमारी 55
32. **संस्कार एवं संस्कृति का प्रत्यक्ष स्थल गयाधाम** – श्रीमती चंचला रवि 57
33. **संस्कार एवं संस्कृति के संदर्भ में गयाजी** – डा० राम सिंहासन सिंह 58
34. **भारतीय संस्कृति में माता-पिता का स्थान** – डा० सोनू अन्नपूर्णा 61
35. **पर-हित सरिस धरम नहि भाई** – डा० संकेत नारायण सिंह 63
36. **पितृ-तृप्ति की श्रेष्ठ भूमि गयाधाम** – श्री प्रभात कुमार धवन 64
37. **गया संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक केन्द्र गया : एक झलक** – डा० विनय कुमार 66
38. **निःस्वार्थ सेवा ही धर्म है** – श्री अनिल स्वामी 68
39. **गयाश्राद्ध : कतिपय मिथक एवं उनका प्रात्याख्यान** – डा० राम निहोर पाण्डेय 69
40. **मनुष्य का धर्म** – श्री राकेश कुमार सिन्हा कुन्नु 73
41. **जगदीश चन्द्र माथुर और गया** – डा० मनोज कुमार अम्बष्ठ 74
42. **ऋतु आए फल होय** – श्री गौतम कुमार 76
43. **मंत्राधीना मोक्षः** – डा० कमला गोखरू 78
44. **काम-क्रोध लोभादि** – डा० नलिनी राठौर 79
45. **श्राद्ध-कर्मः क्या करें** – श्री कंचन कुमार 81
46. **गयासुर का तप-बल और गयाधाम** – श्री शिव वचन सिंह 83
47. **पितृ-पूजा के दैनिक कार्यक्रम** – पं० मणि लाल बारिक 85
48. **श्राद्ध और सात्विक भोजन** – डा० मंजु शर्मा 87
49. **गया और गयावाल पण्डे** – श्री नचिकेता वत्स 89
50. **अतिथि देवो भव** – श्री दिलीप कुमार देव 90

✦

सम्पादक की कलम से ....

विष्णु-चरण की आराधना का सात्विक स्वरूप

पितृपक्ष की अवधि गया-धाम के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। इस वर्ष यह अवधि 15 सितम्बर, 2016 से 30 सितम्बर तक की है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को ही पितृपक्ष कहा जाता है। इसे 'महालय' भी कहते हैं। किन्तु, आम जनता-जनार्दन के बीच यह 'महालया' के नाम से जाना जाता है। गयाधाम में इसी पितृपक्ष की अवधि में पितर-पूजा का भी विधान है, जिसे श्राद्ध-कर्म कहा जाता है। श्राद्ध शब्द श्रद्धा से जुड़ा है। श्रद्धापूर्वक ही श्राद्ध-कर्म (जिसे पितर-पूजा कहते हैं) सम्पन्न होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने श्रद्धास्पद व्यक्तियों के प्रति-श्रद्धा निवेदित करता है। श्रद्धा निवेदित करने का यह कार्य केवल जीवित व्यक्तियों के प्रति ही नहीं; वरन् अपने श्रद्धास्पद महानुभावों के मरणोपरांत भी किया जाता है और इसे ही श्राद्ध के नाम से अभिहित किया गया है। भारतीय संस्कृति में माता-पिता और गुरु को सर्वप्रथम श्रद्धास्पद माना गया है इसीलिए प्रत्येक सुपुत्र का यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपने माता-पिता तथा गुरु के मरणोपरान्त उनका श्राद्ध-कर्म सम्पन्न करे। ऐसा करने से दिवंगत आत्मा को संतुष्टि प्राप्त होती है। पितरों की संतुष्टि से श्राद्ध-कर्त्ताओं का जीवन आनन्द से भर जाता है। हमारे आर्ष-ग्रन्थों में इसके अनेकानेक प्रमाण मिलते हैं।

गयाधाम को तीर्थों का प्राण कहा गया है, क्योंकि गया-तीर्थ में ऐसा कोई भी स्थान नहीं है, जहाँ कोई-न-कोई तीर्थ विद्यमान न हो। यहाँ सभी तीर्थों का सान्निध्य रहता है। इसीलिए गया-तीर्थ सब तीर्थों में श्रेष्ठ है। अन्य तीर्थों में तो व्यक्ति केवल अपना उद्धार कर पाता है, किन्तु गया-तीर्थ में अपने दिवंगत श्रद्धास्पद महानुभावों का भी उद्धार कर सकते हैं। हमारे पुराणों तथा अन्य आर्ष-ग्रन्थों में कहा गया है कि ''फल्गु तीर्थ में स्नान करके, आदि गदाधर देव का दर्शन करने वाला मनुष्य अपने को तो तरता ही है, अपने से दस पीढ़ी पूर्व और दस पीढ़ी बाद में होने वाले का भी उद्धार करता है। दिव्य विष्णुपद का दर्शन घोर पापों का नाश करता है। केवल स्पर्श और पूजन से भी पाप का नाश होता है। यहाँ पितरों को दिया गया दान अक्षय फल प्रदान करता है। इसी कारण गया को मोक्ष-तीर्थ तथा मोक्ष-धाम भी कहा जाता है।

अनादि काल से देश-विदेश के लाखों सनातन धर्मावलंबी गयाधाम आकर अपने पितरों की आत्मा की चिर-शान्ति के लिए पितर-पूजा तथा श्राद्ध कर्म करते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में बहुत से ऐसे तार्किक बुद्धिजीवी मिल जायेंगे, जो श्राद्ध जैसे अनुष्ठानों पर उँगली उठाते दिखाई पड़ेंगे। उनसे हमारा इतना ही आग्रह होगा कि वे अपनी संस्कृति तथा प्राचीन भारतीय परिवेश की ओर खुले हृदय से झाँकने की चेष्टा करें। वहाँ उन्हें सब कुछ त्याज्य नहीं मिलेगा। वहाँ उनके हृदय को भी तृप्त करने वाली आस्था की ज्योति जगमगाती दिखाई पड़ेगी। जिस प्रकार एक ही फूल से भौंरे और बर्रे अलग-अलग तत्त्व ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार हमारे सहस्रों वर्ष के अतीत से भी रस ग्रहण किए जा सकते हैं। एक ही फूल से भौरों को शहद मिलता है तो बर्रे को विष। हमारा अतीत ऐसा ही है। हृदय में आस्था का भाव भरकर श्रद्धापूर्वक जरा डुबकी लगाकर तो देखिए। वहाँ वर्त्तमान को बनाए रखने की प्रेरणा मिलेगी। आगे बढ़ने और भविष्य निर्माण की ऊर्जा वहीं मिलेगी। गहरे पैठने की आवश्यकता है। सत्य का दर्शन वहीं होगा।

पितृपक्ष की अवधि में देश-विदेश के लाखों सनातन धर्मावलंबी श्राद्ध-कर्म तथा पितर-पूजा के लिए गया-धाम आते हैं। फलतः इस अवधि में गया की आबादी लगभग दुगुनी बढ़ जाती है। इन अतिथियों की देख-रेख, सुरक्षा, आवासन आदि सब कुछ का भार जिला प्रशासन पर रहता है। साथ ही यह भी देखा जाता है कि यहाँ आये श्रद्धालु आनन्दपूर्वक पितर पूजा के अनुष्ठानों को सम्पादित करें। इसीलिए उनके निमित्त हर संध्या समय संतों तथा विशिष्ट प्रवचन-कर्त्ताओं को बुलाकर प्रवचन तथा भगवतभजन की भी व्यवस्था की गयी है। इसी कड़ी में स्मारिका प्रकाशन को भी रखा गया है। गया प्रशासन तथा सरकार द्वारा गठित संवास सदन समिति के तत्त्वावधान में यह कार्य सम्पन्न किया जाता है। जो भी श्रद्धालु गयाधाम आते हैं, वो दिन भर अपनी पितर-पूजा-संबंधी अनुष्ठानों में तल्लीन रहते हैं। संध्या समय उनके लिए आध्यात्मिक प्रवचन उनके सात्विक मनोरंजन का साधन रहता है! तत्पश्चात् जब वे श्राद्ध-कर्म सम्पादित कर अपने घर लौटें, तो उनके साथ गयाजी का एक सारस्वत अवदान रहे। इसी निमित्त 1995 ई० से एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। इस प्रकाशन का उद्देश्य यही है कि जो श्रद्धालु यहाँ आते हैं वे गया धाम, पितृपक्ष तथा पितर पूजा की यथेष्ट जानकारी प्राप्त कर सकें! 'तर्पण-2016' इसी कड़ी का इक्कीसवाँ पुष्प है। इसके प्रकाशन में गयाधाम के जिलाधिकारी श्री कुमार रवि ने जो रूचि दिखलाई तथा जो मार्ग-दर्शन किया, उसके लिए मैं तथा सम्पादक-मण्डल के सभी सदस्य उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। यों तो जिला की पूरि सुव्यवस्था का भार और उत्तरदायित्व जिलाधिकारी पर ही होता है; किन्तु 'तर्पण-2016' के प्रकाशन में उन्होंने जो विशेष रूचि दिखाई और मार्ग-दर्शन किया, उसी का परिणाम है कि कम-से-कम समय में यह प्रकाशन सम्भव हो सका। हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। साथ ही, संवास सदन समिति के सचिव श्री बिनोद कुमार सिंह तथा समिति के प्रशासक श्री शम्भु नाथ झा के प्रति भी आभारी हैं। इनके अतिरिक्त गया जी के जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी श्री दिलीप कुमार 'देव' को भी हम नहीं भूल सकते। इन्होंने स्मारिका के चित्रों के चयन तथा इसकी साज-सज्जा को नयनाभिराम बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया है। हम मगध प्रिंटर्स के श्री कमल अग्रवाल को भी साधुवाद देते हैं। जो पूरी दिलचस्पी के साथ इस प्रकाशन को आकर्षक, सुरूचिपूर्ण तथा संग्रहणीय बनाने में हर क्षण तत्पर रहे हैं।

सबसे अधिक हम अपने विद्वान लेखकों के प्रति विशेष रूप से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने हमारे आग्रह पर अपना बहुमूल्य सहयोग देकर इस सारस्वत अनुष्ठान को सफल बनाया। समयाभाव तथा स्थानाभाव के कारण कुछ रचनाओं को हम इस स्मारिका में समाविष्ट नहीं कर सके, इसके लिए उनसे हम क्षमा-याचना भी करते हैं। साथ ही पुनरावृत्ति से बचने तथा आवश्यकतानुसार कुछ आलेखों में काट-छाँट भी करनी पड़ी है, इसके लिए भी हम अपने विद्वान लेखकों से क्षमा-प्रार्थी हैं।

अन्त में हम यह निवेदन कर दें कि हमारे सम्पादक-मण्डल के सभी सदस्यों ने पूरी चेष्टा की है कि स्मारिका त्रुटि- हीन रहे, फिर भी यदि कुछ दिखाई पड़े, तो उसका उत्तरदायित्व मैं स्वीकार करता हूँ। हमारे सम्पादक-मण्डल के सदस्यगण ने भगवान विष्णु की पूजा समझकर ही 'तर्पण-2016' का कार्य सम्पादित किया है। हमें विश्वास है, हमारे पाठकगण भी उसी मधुमती भूमिका में प्रतिष्ठित होकर इस सात्विक स्वरूप को ग्रहण करेंगे।

✦

गोवर्द्धन प्रसाद सदय
प्रधान सम्पादक
तर्पण-2016

आध्यात्मिक दृष्टि से गया का गौरव

ज०गु०रा० स्वामी वेंकटेश प्रपन्नाचार्य

गयाधाम तीर्थों का प्राण है। सभी भारतीय आर्ष-ग्रंथों में तो इसकी महिमा का वर्णन वर्त्तमान है। विदेशी चिन्तकों ने भी इसकी गरिमा पहचानी है और उन्होंने भी यह माना है कि आध्यात्मिक दृष्टि से गयाधाम का महत्त्व अन्य स्थानों की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

एक अंग्रेज दार्शनिक का कहना है कि- *"Gaya is a unique piece of land fully charged with divinity commanding capability to take one off the gravitational zone of life and death"* वायु प्राण का उद्घोष है। ***गयायां न हि तत् स्थानं यत्रतीर्थ न विद्यवे। (वा०पु० 1/46)*** आर्ष दृष्टि में गया में भगवान दृश्य (Visible) है। ***गयायां परमात्मा हि दृश्यतेऽद्यापि मुक्तिदः। (वा०पु० 4/2)***

प्रश्न है कि यह विष्णुपुरी इतना गौरवशाली क्यों है? उत्तर होगा कि भक्ति और प्रपत्ति दोनों के लिए जो सर्वोत्तम श्रहरि का पादारविन्द है वह श्रीपाद चिन्ह यहाँ गयाजी में अकृत्रिम रूप से वर्तमान और पुनीत है। देवों में सर्वोपरि भगवान श्रीमन्नारायण ही है।

वैदिक मन्तव्य है - ***यो देवानां पुरोहित : (यजु० 31/20)।*** गीता का कथन है कि इनके समान ही कोई दूसरा नहीं है फिर अधिक कहाँ से ? ***<u>नत्वत्समोंस्त्यर्म्या</u> : न त्वत्समोस्त्य का भ्यधिकः कुतोडन्यः (श्रीमद्भ०गी० 11/43)*** ऐसे दिव्यदेव श्री विष्णु भगवान गया तीर्थ के देवता हैं। प्रभु के तो सर्वावय (all organs) मंगलमय है - (मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्)। पर भक्ति और शरणागति के लिये सर्वोत्तम अंग हरिरटि के श्रीपाद है। पद-कमल के सिवा भक्त को कुछ नहीं चाहिये। श्रीयामुनाचार्य स्वामी जी कहते हैं - ***''तवामृतस्यन्दिनि पादपंकजे निवेशितात्मा कथमन्यदिच्छति''(आ०स्तो०30)***

पूज्यपाद योगिश्रेष्ठ अनन्त श्री श्री त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज की मान्यता थी *''गया-जहाँ अकृत्रित रूप से भगवान का चरणारविन्द उपलब्ध है - इसके समान ब्रह्माण्ड में कोई जगह नहीं है।''*इसे ऋषिकाड्क्षिता भूमि बताया गया है। गया तीर्थाटन पितृगणो द्वारक है। वायु पुराण के ही शब्दों में

ब्राह्मह्मानं गयाश्राद्ध गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरूक्षेत्रें मुक्तिरेषा चतुर्विधा।

फिर अन्यसाधन की त्याग। प्रक्रिया के साथ (By the process of elimination) कहा गया है।

''ब्रह्मज्ञानेनं किं साध्यं गोगृहमरणेन किम्
वासेन किं कुरूक्षेत्र यदि पुत्रो गयां व्रजेत्।।''
(वा०यु०अ० 1 श्लो० 15-17)

उपर्युक्त आर्षवाणी अर्थहीन नहीं हैं। इस तथ्य को श्रीवैष्णव कुलकमल दिवाकर भगवत्पाद श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी महाराज ने हृदयंगम किया है। अतएव श्रीमान् ने जिन श्रीरंगादि तीर्थों को शालग्राम भगवान की प्रतिष्ठा के लिये चुना उनमें गयाजी भी एक है। द्रष्टव्य -

श्रीरंगं करिशैलम-मंथन नगिरौ शेषाद्रिसिंहाचलम्
श्री शैलं पुरुषोत्तमं च वदरीनारायण नैमिषम्।
श्रीमद् द्वारवतीप्रयागभथुरा योध्या गया पुष्करम्
शालग्रामनिवासिनी विजयते रामानुजोऽयं मुनिः।।

सम्प्रति श्रीरामानुजाचार्य मठ, देवघाट, गया आचार्य की उसी कृति का द्योतन कर रहा है। अन्ततः भगवान श्री लक्ष्मी नारायण देव से प्रार्थना है - आर्य संतति की भक्ति भावना श्रीविष्णुपद में गया जी में सदा बनी रहे।

महन्त, श्री रामानुजाचार्य मठ
देवघाट, गया

✦

महालय में तिथि श्राद्ध

आचार्य लाल भूषण मिश्र याज्ञिक

महालय पर्व का श्राद्ध संक्रांति पर्व आदि अन्य पर्वों में किये जाने वाले श्राद्ध से अधिक महत्वपूर्ण है। महालय पर्व में सूर्य का कन्या राशि पर संक्रमण हो जाता है। इससे महालय पर्व का श्राद्ध पितरों को मुक्ति प्रदान करता है। उक्त पर्व में दिवंगत व्यक्ति की मृत्यु तिथि को श्राद्ध पितरों को संतृप्त करता है। हेमाद्रि वचन है :-

आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्या संस्थे दिवाकरे।।1।।
यो वै श्राद्धं नरः कुर्यात् एकस्मिन्नपि वासरे।
तस्य संवत्स यावत् संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्।।2।।

महालय पर्व की प्रारंभिक तिथि भाद्रपद मास की पूर्णिमा है। यह तिथि प्रौष्ठ पदी कहलाती है। अन्य पूर्णिमा को पिण्डार्पण निषिद्ध है किन्तु भाद्रपद पूर्णिमा को पितरों के निमित्त पिण्डार्पण अक्षय हो जाता है। पूर्णिमा को मृत्यु प्राप्त व्यक्ति का महालय श्राद्ध भाद्रपद पूर्णिमा को शास्त्र विहित है। गार्ग्य वचन है :-

पौर्णमासीसु सर्वासु निषिद्धं पिण्डपात नम्।
वर्ज यित्वा प्रौष्ठ पदीं यथा दर्शः तथैव सा।।

महालय पर्व में पिता की मृत्यु तिथि की प्रधानता है। अपराहन काल में पिता की मृत्यु तिथि व्याप्त रहने पर तिथि श्राद्ध विहित है। 3 दिवसीय, 5 दिवसीय अथवा 7 दिवसीय श्राद्ध उक्त पर्व में सम्पन्न होते हैं किन्तु इस अन्तराल में पिता की मृत्यु तिथि का रहना अनिवार्य हो जाता है। इस तिथि की व्याप्ति ही पार्वण श्राद्ध किया जाता है। पार्वण श्राद्ध के अपराहन में सम्पन्न किए जाने का शास्त्र वचन है

पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धम् अपराह्णे तु पैतृकम्।
एकोदिष्टं तु मध्याह्ने प्रातः वृद्धि निमित्त कम्।।

महालय के अन्तर्गत तर्पण, श्राद्ध आदि से पितृगण संतृप्त होते हैं तथा मुक्ति प्राप्त कर आर्शीवाद देते हैं। उनके आशीर्वचन से श्राद्धकर्त्ता को आयु वृद्धि, संतान प्राप्ति, धन एवं विद्या की प्राप्ति तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्राप्त होता है। मार्कण्डेय पुराण में वर्णित है :-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानिच।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिता।।

इस वर्ष महालय पर्व के पाँचवें दिन आने वाले भरणी नक्षत्र के पार्वण श्राद्ध से सम्पूर्ण गया श्राद्ध की फलप्राप्ति होती है। इस वर्ष 20 सितंबर मंगलवार को भरणी श्राद्ध की पुण्यमय वेला है। शास्त्र वचन है :-

भरणी पितृपक्षेतु महती सं प्रकीर्तिता।
तस्यां श्राद्धं कृतं येन स गया श्राद्ध कृत् भवेत्।।

24 सितंबर शनिवार को महालय पर्व के आठवें दिन सौभाग्यवती स्त्रियों की श्राद्ध वेला है। सौभाग्यवती रहकर दिवंगत स्त्रियों के निमित्त पिंडदान की यह पावन वेला है। इस तिथि को अन्वष्टका श्राद्ध का पिंडदान भी किया जाता है। यह एक विशिष्ट श्राद्ध है।

12वाँ दिन (27 सितंबर मंगलवार को) संन्यासियों का तिथि श्राद्ध दिवस है। महालय पर्व में संन्यासियों के निमित्त कोई भी प्रतिनिधि बनकर श्राद्ध करता है। इससे उनकी मुक्ति हो जाती है। प्रतिनिधि होकर भी पिंडदान करने से सन्यासी की परमगति होती है। वायु पुराण में कहा गया है :-

आत्म जोऽप्यन्य जो वाइपि गया भूमौ यदा तदा।
यन्नाम्ना पातयेत् पिंडं तन्नयेद् ब्रह्म शाश्वतभ्।।

15वाँ दिन (29 सितंबर) गुरुवार को शस्त्र द्वारा मृत व्यक्ति का श्राद्ध दिवस है। पुत्र या प्रतिनिधि एकोद्दिष्ट श्राद्ध विधि से शस्त्र द्वारा वध किये गये व्यक्ति का पिंडदान करता है तो उसे मुक्ति हो जाती है। वायु पुराण में वर्णित है :-

नाम गोत्रे समुच्चार्य पिण्ड पातन मिष्यते।
येन के नाऽपि कस्मैचित् स याति परमां गतिम्।।

30 सितंबर को 16वाँ दिन महालय पर्व का समापन है। पिता की मृत्यु तिथि ज्ञात नहीं रहने पर इस आश्विन अमावस्या तिथि को पिंडदान किया जाता है। पिंडदान करने वाले 16 दिनों के महालय पर्व में प्रतिदिन मध्याह्न या अपराह्ण काल में संबंधित तिथि का उच्चारण कर तिथि श्राद्ध करते हैं। गयाधाम में महालय पर्व में किया गया श्राद्ध जिस किसी योनि में भटकते हुए पितरों का उद्धार कर देता है।

अध्यक्ष संज्ञा समिति गयाधाम-सह-महामंत्री
अखिल भारतीय विद्वत परिषद् (गया) सम्पर्क - 9430412321

श्राद्ध-कर्म का महत्त्व

पं० रमेश शर्मा

श्राद्धकर्म भारतीय संस्कृति की धरोहर है, जिसे सम्पादन कर व्यक्ति परमेश्वरीय करूणा कृपा को प्राप्त करता है। हमारी संस्कृति का निर्माण जिन तत्वों से हुआ है, उसमें सदाचार, सद्विचार, धर्म का पालन, भक्तिमूलक उपासना पद्धति, शास्त्रों में आस्था, पुनर्जन्म में विश्वास, देवलोक और पितृलोक की स्वीकृति धर्म का पालन आदि शामिल है। इसीलिए किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी मनोरम क्रियाओं से होती है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति आचारमूलक है। आचरणों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का सम्बन्ध श्राद्ध क्रिया से है।

श्राद्ध क्रिया मनुष्य का चारित्रिक उत्कर्ष है, जिसमें करूणा, मैत्री दान एवं मांगल्य का संचार होता है। यह कर्म व्यक्ति को कृतज्ञ बनाता है। श्राद्ध शब्द का सामान्य अर्थ है - श्रद्धापूर्वक कर्म का सम्पादन करना - 'श्रद्धया कृतं सम्पादितामितम्।' जिन कर्मो के द्वारा मनुष्य 'स्व' से उपर उठकर 'पर' की भावना से जुड़ जाता है, वह श्राद्ध कर्म कहलाता है। श्राद्ध समदर्शिता का प्रतीक है। क्योंकि इसमें सभी भूतों को आत्मवत् दिखाई देता है। यह वह कार्य है, जिससे मनुष्य पितर पूजा करके जगत को तृप्त करता है। पितृ पूजा परमात्मा के विश्वरूप की पूजा है। हमारे ऋषियों की मान्यता है कि श्रद्धापूर्वक कर्म ब्रह्मदि देवताओं के साथ-साथ पितृगण, मनुष्य, पशु पक्षी, भूतगण आदि समस्त जगत को प्रसन्न करता है।

श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बना है। इसीलिए श्राद्ध और श्रद्धा में घनिष्ठ सम्बन्ध है। ***श्राद्ध श्रद्धान्वितः कुर्वन्प्रीण यत्यंखिलं जगत् (विष्णु पुराण 3/14/2)*** श्राद्ध की सार्थकता श्रद्धा और विश्वास पर आधारित है। श्रद्धा के बिना श्राद्ध की सफलता सम्भव नहीं है, क्योंकि श्रद्धा एक अति व्यापक एवं विशाल धारणा है, जो मंगलत्व का विधान करती है। यह एक ऐसी सांस्कृतिक एवं धार्मिक संधारणा है, जिसमें भारतीय संस्कृति का सम्बर्द्धन और सम्पोषण होता है। श्रद्धा से मनुष्य ऊर्ध्वोन्मुख होता है तथा वह इससे संस्कृत होकर दिव्य कर्मो के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है। महाभारत के शान्ति पर्व में यह कहा गया है कि श्रद्धा रहित श्राद्ध अर्थहीन एवं व्यर्थ है। पितृपक्ष में अपने पूर्वजों के उद्धार हेतु पितरपूजा, श्राद्ध, तर्पण आदि जो भी धार्मिक अनुष्ठान किये जाते हैं उसमें श्रद्धा और विश्वास की अटूट धारणा रहती है। इसीलिए श्रद्धा से युक्त श्राद्ध फलदायक एवं मोक्षदायक होता है।

श्राद्धकर्म का एक विशेष अर्थ यह भी है कि अपने मृत पितरों के उद्धार हेतु श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले कर्म विशेष को श्राद्ध कहते हैं। ब्रह्मपुराण के अनुसार :-

''देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्।
पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाछतम्।।''

अर्थात देश काल और पात्र में श्रद्धापूर्वक जो भोजन पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को दिया जाय, उसे श्राद्ध कर्म की संज्ञा दी गयी है। इस परिभाषा में तीन बातें दिखती हैं (1) त्याग की भावना (2) श्रद्धा का सहयोग (3) पितृलोक की मान्यता। त्याग-तपस्या, श्रद्धा विश्वास और सदाचार भारतीय संस्कृति के मूल अंग हैं। श्राद्ध कर्म का महत्व पितृलोक की परिकल्पना से है। यमलोक को पितृलोक कहा जाता है।

पितरों में यम प्रथम पितर माने जाते हैं। ऋग्वेद (10/24) में यम को मृतकों का मार्गदर्शक कहा गया है। श्राद्ध क्रिया के द्वारा पितृगण को प्रसन्न किया जाता है, ताकि वे हम पर आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, बल, वैभव, पशु, सुख, धन-धान्य की दृष्टि कर सकें। वायु पुराण (3/14) में उल्लेख है कि यदि कोई श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करता है, तो वह पितरों के समुदाय एवं सम्पूर्ण विश्व को प्रसन्न करता

है। महर्षि और्व राजा सगर को गया तीर्थ में जाकर श्राद्ध करने का उपदेश देते हैं।

''गयामुपेत्य यः श्राद्धं करोति पृथिवीपते।
सफलं तस्य तज्जन्म जायते पितृतुष्टि दम्।।''
(विष्णु पुराण 3/14)

महाभारत के अनुशासन पर्व में महात्मा भीष्म ने युद्धिष्ठिर को पितृपक्ष (आश्विन कृष्णपक्ष) में पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध का महत्व बतलाया है। आनन्द रामायण यात्राकाण्डम (सर्ग 6) में भगवान के द्वारा फल्गु में स्नान एवं प्रेतशिला पर पिण्डदान आदि का प्रमाण है। पिण्डदान की प्राचीन परम्परा आज भी विद्यमान है। पितरों की तृप्ति और श्राद्धकर्त्ता का जीवन दोनों कृतकृत्य होते हैं, जो अकथनीय है। पिण्डदान एक धार्मिक अनुष्ठान है और श्राद्ध एक महान धर्म है। स्मृति चन्द्रिका में तो यहाँ तक कहा गया है कि श्राद्ध से बढ़कर कुछ भी नहीं है। व्यास जी ने कहा है कि श्राद्ध से यह लोक प्रतिष्ठित है और इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

''श्राद्ध प्रतिष्ठतो लोकः श्राद्धे योगः प्रवर्तते।''
(हरिवंश पु० 1/2/1/1)

श्रद्धा रहित कर्म श्राद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि श्राद्ध का आधार श्रद्धा और विश्वास है। धार्मिक अनुष्ठान श्रद्धा पर आधारित होते हैं। धर्म का आधार श्रद्धा है। तुलसी ने इस बात की पुष्टि की है *'श्रद्धा बिना धर्म नहीं होई'* कहकर धर्म का आधार श्रद्धा को कहा है। इसीलिए अश्रद्धा से शास्त्र विहिन कर्म असत् कहलाता है। यह लोक और परलोक दोनों के लिए निषिद्ध माना गया है। भगवान कृष्ण की उक्ति है कि :-

''अश्रद्धया हुतं दत्तंतपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह।।''
(गीता 17/28)

धर्मशास्त्रों में श्राद्ध को एक महनीय संस्कार माना गया है। इसे पितृयज्ञ भी कहते हैं। इस यज्ञ का सम्पादन श्रद्धा अर्थात चित्त की प्रासादिक चेतना से होता है। यह समस्त पापों का विमोचन करती है तथा व्यक्ति के अन्दर दिव्य शक्तियों को अन्तर्निहित कर उसे दैवी गुणों से युक्त बनाती है। यह क्रिया साधारण कर्म न होकर श्राद्ध यज्ञ महिमा है, जिसमें दिव्य कर्मों का सम्पादन होता है। यह कर्म पितरों को मुक्ति दिलाता है। पिण्डदान एवं तर्पण श्राद्ध क्रिया के अंग हैं। सही मायने में यह परमात्मा की पूजा है।

उपर्युक्त बातों के आलोक में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि श्रद्धा के साथ क्रियान्वित कर्म को श्राद्ध कहा जाता है। इसका आविर्भाव सरलता और पवित्रता जैसे दिव्य गुणों के संयोग से होता है। श्राद्धकर्म इन्हीं दोनों गुणों के समन्वित स्वरूप है। अतः यह कर्म एक दिव्य एवं महनीय संस्कार से संस्कारित होने के कारण इसकी उपादेयता अक्षुण्ण है।

व्याख्याता, हिन्दी विभाग, वी.वी.एम. कॉलेज
ओकरी, जहानाबाद (बिहार)

✦

दिवि सूर्यसहस्र भवेद्युग पदुत्थिता।
यदि थाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।।
(गीता)

''आकाश में हजार सूर्यों के साथ उदय होने से उत्पन्न जो प्रकाश हो, वह भी उस विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के सदृश कदाचित ही हो।''

तस्मै स्वधा

आचार्य नवीन चन्द्र मिश्र 'वैदिक'

पितृपक्ष का अक्सर पिछले वर्ष मुझे हरियाणा से पितर-पूजा तथा श्राद्ध कर्म के सभी अनुष्ठानों में प्राय: स्वधा शब्द का प्रयोग होता है। मैं भी जब कभी श्राद्ध-कर्म करवाता हूँ। तब मुझे बार-बार 'स्वधा' शब्द का प्रयोग करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त सभी अनुष्ठानों में षोडश मातृका देवी की पूजा कराते समय भी नवीं माता स्वधा देवी आती हैं। अत: जब भी इस मंत्र का प्रयोग होता है, तब स्मरण आता है कि श्रीमद् देवी भागवत के अनुसार श्री नारद जी, श्री नारायण से प्रश्नोत्तर के क्रम में कहते हैं कि जगत के विधाता ने सृष्टि के आदि में पितरों की रचना क्रम में चार मूर्तिमान और तीन तेज स्वरूपा सात पितृगणों की श्राद्ध-तर्पण-आहार की सृजना की परन्तु संध्यादि के क्रम निवेदित वस्तु पितर प्राप्त नहीं कर पाते थे, तब वे ब्रह्मा जी के पास गए। ब्रह्मा जी ने सौ चन्द्रमा के समान सुन्दरी लक्ष्मी की तरह रूपवती एक मानसी कन्या जो स्वधा नाम की हुई उसे पितरों को दिया अर्थात् देवताओं को स्वाहा, पितरों को स्वधा, दक्षिणा प्रशस्त है, क्योंकि बिना दक्षिणा के यज्ञ पूर्ण नहीं होता है। ऐसे तो श्राद्ध कभी भी किया जाता है परन्तु शरद् कृष्ण त्रयोदशी मघा नक्षत्र युक्त होने पर अलग महत्व है। तर्पण-श्राद्ध के पूर्ण फल देने वाली ब्रह्म जी की मानसी कन्या पितरों से ब्याही गई, जो तपस्या, यज्ञजा, पक्ष लोचना कह लाई। ब्रह्मा जी 'स्वधा' की महिमा बखान करते हैं। ''स्वधा'' उच्चारण से ही तीर्थ-स्नान का फल प्राप्त होता है। जब ''स्वधा'' का तीन बार उच्चारण होता है श्राद्ध और तर्पण के पूर्ण फल देने वाला हो जाता है, अर्थात् श्राद्ध-तर्पण के संकल्प में तीन बार स्वधा उच्चारण करना चाहिए। जो स्वधा का तीनों काल उच्चारण करता है। वह उत्तम पत्नी प्राप्त करके गुणज्ञ पुत्र प्राप्त करता है। स्वस्ति-स्वाहा स्वधा-दक्षिणा रूप चारों वेद में निरूपित हैं। ईश्वर की कर्म-पूर्णता के उद्देश्य से ब्रह्मा जी ने पत्नी के रूप में देवताओं को स्वाहा, पितरों को स्वधा, और यज्ञ को दक्षिणा दिया। पितर ब्रह्मा जी से कमल लोचन, स्वधा को प्राप्त करके पितृलोक में प्रसन्नता पूर्वक स्थित हुए। यह पितृलोक चन्द्रलोक से निकट है इस कारण जब चन्द्र-क्षय होते हैं (कृष्ण पक्ष) तब किए गए श्राद्ध-तर्पण सीधे प्राप्त होते हैं। उसमें भी अमावस्या सर्वोत्तम है। ऐसे सर्वकाल श्रद्धा-पूर्वक पितरों को जो निवेदित किया जाए पितर स्वीकार करते हैं और यही श्राद्ध है।

मैखलौटगंज, के.पी. लेन, गया
मो० - 9430071590

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिवद्यते ।। (गीता)

जो मनुष्य सत्त्वगुण की वृद्धि में मृत्यु को प्राप्त होता है, वह उत्तम कर्म करने वालों के निर्मल दिव्य स्वर्गादि लोकों को प्राप्त होता है।

पितृपक्ष और पिंडदान

श्री अनिल सक्सेना

इस वर्ष यह पितृपक्ष महासंगम 15 सितम्बर, 2016 का शुरू होगा और 30 सितम्बर, 2016 को समाप्त होगा चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान व ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत में गया और बोधगया की धार्मिक स्थिति का उल्लेख किया है। लेकिन, गया श्राद्ध का उल्लेख नहीं किया है। पाल राजाओं के समय गया शैव धर्म का केन्द्र भी बना। नौवीं सदी से गया का तीर्थ के रूप में महत्व स्थापित होने लगा और मंदिरों का भी निर्माण शुरू हुआ। पिंडदान से संबंधित पहला अभिलेख 10वीं सदी के अक्षयवट से मिला है। वज्रपाणि के एक अभिलेख में गया शहर का विस्तार होने की सूचना है।

गया, झारखण्ड और बिहार की सीमा और फल्गु नदी के तट पर बसा भारत के बिहार राज्य का दूसरा बड़ा शहर है। वाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि मुख्य रूप से एक धार्मिक नगरी के रूप में है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ हजारों श्रद्धालु पिंडदान के लिए जुटते हैं। गया सड़क, रेल और वायु मार्ग द्वारा पूरे भारत से जुड़ा है। नवनिर्मित गया अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा द्वारा थाइलैंड से भी सीधे जुड़ा हुआ है। गया से 17 किलोमीटर की दूरी पर बोधगया स्थित है जो बौद्ध तीर्थ स्थल है और यहीं बोधि वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

गया बिहार के महत्वपूर्ण तीर्थस्थानों में से एक है। यह शहर खासकर हिन्दू तीर्थ यात्रियों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यहाँ का विष्णुपद मंदिर पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है। दंतकथाओं के अनुसार भगवान विष्णु के पांव के निशान पर इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। हिन्दू धर्म में इस मंदिर को अहम स्थान प्राप्त है। गया पितृदान के लिए भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहाँ फल्गु नदी के तट पर पिंडदान करने से मृत व्यक्ति को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

गया, मध्य बिहार का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो गंगा की सहायक नदी फल्गु के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह बोधगया से 13 किलोमीटर उत्तर तथा राजधानी पटना से 100 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यहाँ का मौसम मिलाजुला है। गर्मी के दिनों में यहां काफी गर्मी पड़ती है और ठंडे के दिनों में औसत सर्दी होती है। मानसून का भी यहाँ के मौसम पर व्यापक असर होता है। लेकिन वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य काफी रोचक होता है।

कहा जाता है कि गयासुर नामक दैत्य का बध करते समय भगवान विष्णु के पद चिन्ह यहाँ पड़े थे जो आज भी विष्णुपद मंदिर में देखे जा सकते हैं।

1242 ई० के प्रपितामहेश्वर मंदिर अभिलेख से पश्चिमोत्तर भारत से पूजा के लिए श्रद्धालुओं के आगमन की सूचना है। 12वीं सदी के बाद से गया में श्रद्धालुओं के लगातार आने की सूचना मिलनी शुरू होती है। इसी समय गयासुर की पैराणिकता भी प्रचलन में आयी। इसी समय बख्तियार खिलजी ने राज्य के बौद्ध मठों पर आक्रमण कर उसे ध्वस्त किया। विद्वानों की यह धारणा की गयासुर की कथा बौद्धों पर ब्राह्मणों की विजय का प्रतीक है, सही प्रतीत होती है।

वेदी का वर्गीकरण-विशिष्टता : पवित्र वेदियों के वर्गीकरण के विश्लेषण से सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। इसके साथ ही प्राक् व वैदिक सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाज व परंपराएं ज्यादा पारदर्शी तरीके से दिखती है। अक्षयवट व अश्रत्थ वृक्ष की पूजा आर्यो द्वारा जनजाति से आत्मसात किया किया। स्नान व तर्पण के लिए फल्गु नदी और उसके प्रवाह तथा वैतरणी, ब्रह्मसरोवर, उत्तरमानस व रामसागर को काफी पवित्र माना गया। इस तरह शिव, शक्ति सौर व गणपत्य संप्रदाय एक साथ समूह में केवल गया में ही विद्यमान है।

मुस्लिम शासन में भी महत्व : मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी द्वारा 1197 में बिहार विजय के बाद गया मुस्लिम शासन के अन्तर्गत आ गया। गया के प्रपितामहेश्वर अभिलेख से इसकी पुष्टि होती है कि 1240 में गया पर दास वंश के सुल्तान मुईजद्दीन बहराम शाह का शासन था। लेकिन गया का हिन्दू स्वरूप बरकरार था।

पूर्वज पूजा का है उल्लेख : प्रपितामहेश्वर अभिलेख में गया आकर पूर्वज पूजा व पिंडदान करने का उल्लेख है। गया लंबे समय तक खिलजी प्रभाव में नहीं रहा। इल्तुतमिश के बाद क्षेत्रीय हिन्दू राजा पुन: अपनी शक्ति इकट्ठा कर शासन करने लगे। तिब्बती इतिहासकारों ने गया को सेन-गढ़वाल के पीठीपति के अधीनस्थ बताया। अभिलेखों से जानकारी मिलती है कि बलबन के शासन के पहले तक गया पर हिन्दू शासकों का आधिपत्य था।

पिंडदान का चलन हिन्दू संस्कृति के साथ जुड़ा हुआ है और इसके साथ जुड़ा है पुत्र स्नेह। माता पिता सदा पुत्र- प्राप्ति की कामना करते रहते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता बन गयी है की मृत्यु के बाद पुत्र द्वारा पिंडदान करवाने से ही सद्गति प्राप्त होती है। किन्तु, भागवद महापुराण के अनुसार श्राद्ध अथवा पिंडदान से मुक्ति नहीं मिलती बल्कि वंश रक्षण और सद्गति केवल सत्कर्मों से सहायक होती है। श्राद्ध करने से केवल पितरगण को प्रसन्न किया जा सकता है। पिंडदान का वास्तविक अर्थ है इस शरीर रूपी पिंड को प्रभु को अर्पण करना, सो अपनी आत्मा का उद्धार जीव के अपने हाथ में है। परमात्मा का ज्ञान होने पर खुद को सत्कर्मों में लगा कर नारायण सेवा में रत कर दो। यही वास्तविक पिंडदान है जो अपने जीवन काल में ही किया जा सकता है।

फल्गु तट से गया श्राद्ध का श्री गणेश मोक्षधाम गया को प्राप्त करके 17 दिन में श्राद्ध करने वाले पहले तीर्थ पुरोहित (पंडा जी) चरण-पूजा करके श्राद्ध के श्री गणेश के लिए आदेश लें। आचार्य को वरण करके उनके आचार्यत्व में कर्मकांड आरंभ करें। भाद्र पद पूर्णिमा अर्थात् प्रथम दिन पिंडदान अंत: सलिला फल्गु तट पर करें। प्राय: गदाधर भगवान से पूरब श्राद्ध स्थल है। परन्तु वायु वेदी तक फल्गु का महत्व है इस बीच कहीं भी हम फल्गु-श्राद्ध कर सकते हैं।

''फल्गु तीर्थ नर: स्नात्वा तर्पणं श्राद्ध मा चरेत''

फल्गु तीर्थ में भगवान के वरदान के अनुसार स्नान-तर्पण का विशेष महत्व है। 'फल्गु तीर्थादि रूपेण नमाम्यादि गदाधरम' फल्गु तीर्थ आदि रूप से अव्यक्त रूप से जो देव स्थित है उनको नमस्कार है।

हिन्दू मान्यताओं और वैदिक परम्परा के अनुसार पुत्र का पुत्रत्व तभी सार्थक होता है, जब वह अपने जीवित माता पिता की सेवा करें और उनके मरणोपरान्त उनकी बरसी पर तथा पितृपक्ष में उनका विधिवत श्राद्ध करें। विद्वानों के मुताबिक किसी वस्तु के गोलाकार रूप को पिंड कहा जाता है। प्रतीकात्मक रूप में शरीर को भी पिंड कहा जाता है। पिंडदान के समय मृतक की आत्मा को अर्पित करने के लिए जौ या चावल के आटे को गूंथकर बनाई गई गोलाकृत्ति को पिंड कहते हैं। श्राद्ध की मुख्य विधि में मुख्य रूप से तीन कार्य होते हैं, पिंडदान, तर्पण और ब्राह्मण भोज। दक्षिणा विमुख होकर आचमन कर अपने जनेऊ को दाएं कंधे पर रखकर चावल, गाय का दूध, घी, शक्कर एवं शहद को मिलाकर बने पिंडों को श्रद्धा भाव के साथ अपने पितरों को अर्पित करना पिंडदान कहलाता है।

जल में काले तिल, जौ, कुश एवं सफेद फूल मिलाकर उससे विधिपूर्वक तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि इससे पितृ तृप्त होते हैं। इसके बाद ब्राह्मण भोज कराया जाता है। पंडों के मुताबिक शास्त्रों में पितृ का स्थान बहुत ऊंचा बताया गया है। उन्हें चन्द्रमा से भी दूर और देवताओं से भी ऊंचे स्थान पर रहने वाला बताया गया है। भारतीय वैदिक वांगमय के अनुसार जीवन लेने के पश्चात प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं। पहला देव ऋण, दूसरा ऋषि ऋण और तीसरा पितृ ऋण। पितृपक्ष में श्रध्दापूर्वक श्राद्ध कर्म करके परिजन अपने तीनों ऋणों से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार मृत्यु के उपरान्त कर्ण को चित्रगुप्त ने मोक्ष देने से केवल इसीलिए इन्कार कर दिया था कि उनके ऊपर पितृऋण बाकी था। कर्ण ने चित्रगुप्त से कहा मैंने अपनी सारी संपदा सदैव दान-पुण्य में ही समर्पित की है फिर मेरे ऊपर यह कैसा ऋण बाकी है। चित्रगुप्त ने बताया कि उन्होंने देव ऋण और ऋषि ऋण तो चुका दिया है, लेकिन उन पर अभी पितृ ऋण बाकी है, जब तक वह इस ऋण से मुक्त नहीं होंगे उन्हें मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। धर्मराज ने कर्ण को यह व्यवस्था दी की वह 16 दिन के लिए पुनः पृथ्वी पर जाकर और ज्ञात और अज्ञात पितरों का श्राद्ध तर्पण तथा पिंडदान विधि एवं श्रध्दापूर्वक करें तभी उन्हें मोक्ष मिलेगा। हिन्दू धर्मग्रंथों में वैसे तो श्राद्ध के अनेक भेदों का वर्णन है लेकिन मत्स्य पुराण में नित्य, नैमित्तिक और काम्य इन तीन भेदों का वर्णन है। यमस्मृति में दो .. वृद्धि श्राद्ध और पार्वण श्राद्ध का भी विधान है। विश्वमित्र स्मृति में इन पांच के अलावा सात अन्य .. सपिण्डन, गोष्ठी, शुद्धयर्थ, कमरंग, दैविक .. यात्रार्थ तथा पुष्टयर्थ भेद बताये गये हैं।

पितृ की श्रेणी में मृत पूर्वजों, माता, पिता, दादा, नाना, नानी सहित सभी पूर्वज शामिल होते हैं। व्यापक दृष्टि से मृत गुरू और आचार्य भी पितृ की श्रेणी में आते हैं। कहा जाता है कि गया में पहले विभिन्न नामों के 360 वेदियां थीं जहां पिंडदान किया जाता था। इनमें से अब 48 ही बची है। वैसे कई धार्मिक संस्थाएं उन पुरानी वेदियों की खोज की मांग कर रही है। वर्तमान समय में इन्हीं वेदियों पर लोग पितरों का तर्पण और पिंडदान करते हैं।

यहां की वेदियों में विष्णुपद मंदिर, फल्गु नदी के किनारे और अक्षयवट पर पिंडदान करना जरूरी माना जाता है। इसके अतिरिक्त वैतरणी, प्रेतशिला, सीताकुंड, नागकुंड, पांडुशिला, रामशिला, मंगलागौरी, कागबलि आदि भी पिंडदान के लिए प्रमुख है। यही कारण है कि देश में श्राद्ध के लिए 55 स्थानों को महत्वपूर्ण माना गया हे। जिसमें बिहार के गया का स्थान सर्वोपरि है।

सचिव-सीनियर सिटिजन वेलफेयर सोसायटी
श्री राधा सदन, 273 ए०पी० कॉलोनी, गया

✦

तर्पण, श्राद्ध और विष्णु नगरी

पं० बालमुकुन्द अगम्य

तर्पण, श्राद्ध और विष्णु नगरी गया का अति प्राचीन काल से ही वेदों, पुराणों एवं शास्त्रों में प्रतिपादित हैं। आध्यात्मिक उत्सुकता मानव जीवन का स्वभाव है और इस प्रक्रिया में भारत के प्राचार्यगणों ने अपनी भूमिका निभायी है। पूजा उपासना, तप, त्याग की विविध प्रणालियाँ विकसित हुई, जिनसे जातीय-जीवन संपुष्ट हुआ। इन्हीं विभिन्न परम पावन प्रक्रियाओं में तर्पण और श्राद्ध की प्रक्रिया भी है; जिनसे सनातन-जीवन को सार्थकता प्राप्त होती है। इसकी प्रविच्छिन्न मधु की धारा चिरंतन प्रवाहित है। यों तो यह धार्मिक कृत्य लौकिक धरातल पर संपूर्ण रूप से भारत वर्ष के भिन्न-भिन्न तीर्थों में संव्याप्त है, किन्तु विष्णु नगरी 'गया' का स्थान सर्वोपरि है, जो सहः मोक्ष दायिका है। अंत : संलिला फल्गु के तट पर स्थित विष्णुपद मंदिर का विशाल परिसर जिसमें समग्र देवी-देवता के अपने छोटे-बड़े भवन विराजमान हैं जिनकी मध्यस्थता भगवान विष्णु अपने सुविशाल मंदिर में दिवा-रात्रि अविराम कर रहे हैं और जन-जीवन को भक्ति और ज्ञानमय आलोक प्रदान कर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उक्त नगर का परिदृश्य भी उतना ही लौकिक आलौकिक है, जो जगतिक चेतना को आकर्षित करता है, जो सुदूर सप्त को क्षेत्र में धर्मारण्य, बोधगया ब्रह्मयोनि पर्वत से मंगलागौरी होते

हुए रामशिला एवं प्रेतशिला तक विस्तृत है, जो पर्यटकों सह पिंडदानियों के लिए कभी 365 वेदियों में सुस्थित रहा, आज मात्र पैंतालिस वेदियों में संकीर्ण होकर भी गया की गरिमा को सुषमा एवं सौष्ठव प्रदान कर रहा है। सनातन धारा चिर प्रवाहित है।

तर्पण एवं श्राद्ध की पावन-प्रक्रिया हिन्दू सनातन जीवन में चिर-काल से परिव्याप्त है। पथ पर हम आज भी स्वभाव तथा अग्रसर होकर स्वयं को धन्य कर रहे हैं। यह तर्पण तो तदर्पण या तत्‌र्पण है, जिसे अक्षत (चावल) जौ तथा तिल के साथ जल के संयोग से हाथों द्वारा अर्पित किया जाता है। तर्पण की क्रिया देवताओं, ऋषियों तथा पितरों के निमित्त किया जाता है, जो उन्हें तुष्ट और पुष्ट करता है। फलस्वरूप कर्त्ता को भी साफल्य प्राप्त होता है। इसकी भूमिका वृहद् और विस्तृत हैं। इसका विवरण शास्त्रों में विशद रूप से हुआ है। तर्पण की क्रिया देव कार्यों के निमित्त हुए हवन-यज्ञादि के उपरांत भी की जाती है। श्रद्धादि कार्यों से पूर्व ही संपन्न कर ली जाती है। यह एक विशुद्ध ब्राह्मनी क्रिया है।

श्राद्ध के क्रिया विशेषत: श्रद्धापूर्वक की जाने वाली (पितरों के प्रति) निवेदित क्रिया है, जिसकी एक कर्म-कांडीय पद्धति है, जिसमें शब्दों-संकल्पों यथा मंत्रों के द्वारा पिंडदान किया जाता है। इस कर्म में पिंड जो जौ या चावल तथा दूध से बने खोये के पिंड रूप में समग्र पितरों के प्रति निवेदित किया जाता है। साथ में वे समस्त सामग्रियाँ भी होती है, जो पूजा प्रकरण में उपर्युक्त और मान्य हैं। यथा जल, अक्षत, जौ, तिल, पुष्प, चंदन धूप-दीप फल-मूल आदि। पितर, जिनसे हमें जीवन ज्योति की प्राप्ति हुई उनके प्रति श्रद्धा निवेदित करने का यह विशेष स्वरूप निर्धारित किया गया है, जिसके लिए हम उन पूर्वजों, ऋषियों और देवताओं के प्रति चिर कृतज्ञ हैं, वे हमें निरंतर ज्योतित करते रहें, इसी प्रार्थना के साथ हम उक्त श्राद्ध संपन्न करते है। यह सत्‌कर्म भी एक यज्ञ होता है, जिसमें दान-उपदान और बलिदान का महाभाव संनिहित है। वस्तुत: यही अस्तित्व है जो कायम रहता है, जिसमें सृष्टि विकासोन्मुख होती रहती है। पिण्ड जो हमारा अस्तित्व है वह निवेदित होकर ब्रह्मंडीय हो जाता है, इसी भाव-भूमिका पर आधारित यह पिंडदान की क्रिया निर्धारित तथा निर्दिष्ट की गयी है। पिंड का आकार अंगुष्ठाकार छोटा या बड़ा होता है, शमी-पत्र के माफिक भी और अधिक उपर्युक्त वृहत्तर भी हो सकता है। यह पिंड दान एक तरह से आत्म-दान है, समग्र जड़ चेतन के प्रति जिनके हम प्रतीक है, एक इकाई हैं। इस पिण्ड के माध्यम से हम अपने हृदय की श्रद्धा अर्पित करते हैं जो हमारे अन्तस्थल में अंगुष्ठ मात्र रूप में हृदय-गुहा में स्थित है, जिसका निर्देश उपनिषदों में हुआ है और जिसे हम आत्मा से संबोधित करते हैं। श्रद्धा से परिपूरित यह आत्मा भारतीय संस्कृति का मौलिक दर्शन है, जिसका भाषान्तरण के द्वारा अर्थ-गौरव प्राप्त करना असंभव है। यह आर्ष-महत्ता की निजी विशेषता है।

तर्पण तथा श्राद्ध की याज्ञिक प्रक्रिया में कर्त्ता के साथ प्राचार्य और तीर्थ-पुरोहित की महत्त्वपूर्ण भूमिका अहम् होती है। तीर्थ पुरोहित के निर्देशन में प्राचार्य द्वारा संकल्पित होकर श्राद्ध की प्रक्रिया को सम्पन्नता मिलती हैं, एतदर्थ उन्हें भी यथेष्ट दान अन्न, वस्त्र, धन, भूमि आदि देकर संतुष्ट कर उनका आर्शीवाद ग्रहण करते है, जिससे वे भी पुष्ट और फलदायी होते हैं और हमारा जीवन भी संतुष्ट और सफल होता है। श्राद्ध की सनातन क्रिया का यही पैतृक रहस्य है, जो अनेकानेक रूपों में शास्त्रों और जिससे हमारी आध्यात्मिकता को बल और उत्साह का अमित प्रकाश उपलब्ध हुआ है और होता रहेगा। पूरे भारत वर्ष में तर्पण और श्राद्ध कर्म के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त और मान्य धरातल विष्णु तीर्थ 'गया' धाम को ही प्राप्त है, जिसे मोक्ष का अंतिम सोपान माना गया है। कोई भी कभी भी अपने पूर्वजों के प्रति भगवान विष्णु की इस अति प्राचीन में श्राद्ध कर ऋण-त्रय से मुक्त होकर जीवन सफल कर सकता है।

रामसागर, गया

पितृ-श्राद्ध

डॉ० अजय कुमार मिश्र

देवा कार्यादपि सदा पितृ कार्य विशिष्यते।
देवताभ्यो हि पूर्व पितृणामाप्यायनं वरम्।।

अर्थात् देव-कार्य की अपेक्षा पितृ-कार्य को विशेष माना गया है, इसलिए शास्त्रोक्त मत है कि देव कार्य के पूर्व पितृ कार्य से पितरों को तृप्त करना चाहिए। महर्षि जाबालि ने पितृ श्राद्ध के लिए लिखा है -

पुत्रान्-आयुस्तथा आरोग्यं मैश्वर्यमतुलं तथा।
प्राप्नोति पंञ्चेमान् कृत्वा श्राद्ध कामारंच पुष्कलान।।

अर्थात् जो संतान पितृ श्राद्ध करता है वह संतान आयु, आरोग्य एवं ऐश्वर्य प्राप्त करती है। वैसे तो पितरों की तृप्ति हेतु नित्य नैमित्तिक श्राद्ध तर्पण आदि किया जाता है जिससे पितर संतृप्त होते है, किन्तु ज्ञान अथवा समयाभाव में संतान को चाहिए कि पितृपक्ष में पितृ श्राद्ध अवश्य करें। संभव हो तो यह श्राद्ध पितृपक्ष के आद्यान्त करे अथवा कम से कम जिस दिन पिता की तिथि हो उसमें करें, अथवा अगर पिता के निर्माण तिथि को विस्मृति हो तो यह पितृ श्राद्ध अमावस्या को अवश्य करनी चाहिए।

हमलोगों को ज्ञात होना चाहिए कि श्राद्ध क्या है - श्राद्ध है ''श्रद्धया पितृन् उद्देश्य विधिना क्रियते यत कर्म तत् श्राद्धम्। यानि पितरों के उद्देश्य से विधिपूर्वक जो कर्म श्रद्धापूर्वक किया जाय वही श्राद्ध है। श्राद्ध हो और उसमें श्रद्धा न हो तो श्राद्ध व्यर्थ हो जाता है। कहा गया है कि श्रद्धया दीयते यस्मात् तत् श्राद्धम्। आधारित जो श्रद्धापूर्वक ही किया गया हो वही श्राद्ध होता है इस श्रद्धा से श्राद्ध का और भी विशद वर्णन मिलता है जैसे कि प्रेतं पितृंश्च निर्दिस्यं भोज्यं यत्प्रिय मात्मनः। श्रद्धया दीयते यज्ञ तत् पितृ श्राद्धं परि कीर्तितम्।। अर्थात जहाँ प्रेत एवं पितरों को निर्देश कर जो प्रिय आत्मा द्वारा जो श्रद्धा से भोजन दिया जाता है उसे ही श्राद्ध कहते हैं।

पितृश्राद्ध कहाँ करने से पितृगण को अधिक-तृप्ति मिलती है, दूसरी भी चर्चा शास्त्रों में है, पितृ श्राद्ध गया जी में कुरूक्षेत्र, गंगा एवं सरस्वती के तट पर, प्रभास क्षेत्र एवं पुष्कर में करने से पितृगण को अधिक संतृप्ति होती है।

श्रीमद् देवी भागवत में :- जीवतो वाक्य करणात् क्षयाहे भूरि भोजनात् गयायां पिण्ड दानाश्च त्रिमिर्पुत्रस्य पुत्रता।। यानि गया में पितरों का पिण्डदान पितृ श्राद्ध करने वाले पुत्र का ही पुत्रत्व सार्थक है।

गया श्राद्ध की महिमा में लिखा गया है कि पितृगण यह सोचते हैं कि ''जयते-सोऽस्माकं कुले कश्चिन्नरोत्तमः। गया शीर्षे वटे श्राद्ध यो नो दद्यात समाहिताः।। यानि खानदान में एक भी श्रेष्ठ पुत्र जन्म ले जो कि गया में गया सिर और अक्षयवट के समीप गया श्राद्ध करें। और इस प्रकार गया श्राद्ध से संतुष्ट होकर अथवा पितृश्राद्ध से संतुष्ट होकर पितर संतान को आयु आरोग्य ऐश्वर्य, सुख एवं संतान वृद्धि का आर्शीवाद प्रदान करते हैं।

ज्योतिष शास्त्र में भी कुंडली निर्माण में एक दोष का वर्णन आता है वह है पितृ दोष। जिसके कुंडली में पितृ दोष होता है उनको संतान सुख से वंचित रहना पड़ता है। उनको सुख समृद्धि शांति कभी मिल ही नहीं पाती है अतएव पितृ दोष की मुक्ति के लिए पितृ श्राद्ध गया श्राद्ध त्रिपिण्डी श्राद्ध आदि कराने के बाद ही मुक्ति मिल पाती है।

कुछ पुत्र पितृ श्राद्ध नहीं करते हैं तथा जो इसे व्यर्थ मानते हैं किन्तु वर्णन आया है कि न तत्र वीरा जयन्ते न आरोग्य न शतायुषः। न च श्रेयाऽधिगच्छन्ति यत्र श्राद्धं बिवर्जितम्।। यानि श्राद्ध नहीं करने से न तो संतान सुख मिलता है नहीं आरोग्यता, तथा मनुष्य अल्पायु होकर रहता है तथा लक्ष्मी भी उसके द्वार पर नहीं आना चाहती है।

अतएव ''पुन्नामनरकात त्रायते इति पुत्र यानि इस सिद्धान्त से व्यक्ति को पितृ को नरक से मुक्ति दिलाना चाहिए। क्योंकि पितृ श्राद्ध से न केवल आप अपना ही भला करते हैं बल्कि अपने पितृ सहित आपसे जितने भी प्राणी जुड़े है उनको भी आप पितृ श्राद्ध से तृप्त करते हैं।

टिल्हा, कालीबाड़ी, गया
मो० - 9934666730

श्रद्धा का अर्पण ही है 'श्राद्ध'

श्रीमती अनुराधा प्रसाद

'महाभारत' के एक प्रसंग के अनुसार मृत्यु के बाद कर्ण को चित्रगुप्त ने मोक्ष देने में अस्वीकृति जताई तथा कर्ण ने कहा कि मैंने तो अपनी सारी सम्पति सदैव दान पुण्य में ही लगाया है, उसके बाद भी मेरे ऊपर यह कैसा ऋण शेष रह गया है। चित्रगुप्त ने उत्तर में कहा कि राजन, आप देवऋण और ऋषिऋण से तो मुक्त हो गये हैं आपके ऊपर पितृऋण शेष है। जबतक आप इस ऋण से मुक्त नहीं होंगे, तबतक मोक्ष की प्राप्ति कठिन होगी। इसके बाद धर्मराज ने कर्ण को यह व्यवस्था दी कि आप सोलह दिनों के लिए फिर से धरती पर जाकर अपने ज्ञात और अज्ञात पितरों का श्राद्ध-तर्पण तथा पिण्डदान विधिवत् करके आइए; तभी आपको मोक्ष की प्राप्ति होगी और कर्ण ने वैसा किया भी।

'स्कंदपुराण' के अनुसार पितरों और देवताओं की योनि ऐसी है कि वे दूर से ही कही हुई बातें सुन लेते हैं, दूर की पूजा भी ग्रहण कर लेते हैं और दूर से की गयी स्तुति से भी संतुष्ट हो जाते हैं। इसी सोच के साथ हम अपने पूर्वजों को तृप्त करने के लिए श्रद्धाभाव से भोज्य पदार्थ और जल अर्पित करते हैं। उद्देश्य वही होता है कि वे जो हमारे बीच नहीं है, उनकी आत्मा को शांति मिले और वो जहाँ भी रहें, प्रसन्न रहें, तृप्त रहें तभी हमें भी उनका आर्शीवाद मिलता रहेगा। वे भविष्य में भी हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

'श्राद्धकल्पता' के अनुसार पूर्वजों की मुक्ति के उद्देश्य से श्रद्धा एवं आस्तिकतापूर्वक किया हुआ पदार्थ-त्याग अर्थात् दान एवं पितर-पूजा का दूसरा नाम ही श्राद्ध है। मृत माता-पिता एवं पूर्वजों के निमित्त श्रद्धापूर्वक किया गया दान ही श्राद्ध है। कहा जा सकता है कि श्रद्धापूर्वक किया जाने के कारण ही इसे 'श्राद्ध' कहा गया है। इन सारे शास्त्रों में श्राद्ध के बारे में जो बातें कही गयी हैं, उसी से श्राद्ध के महत्व का अन्दाजा लगाया जा सकता है। माता-पिता की सेवा तो जीवन पर्यन्त करनी ही चाहिए, पर उनकी मृत्यु के बाद उनके लिए गया में श्राद्ध और तर्पण करना भी नितान्त आवश्यक परम धर्म है। जीवित पितरों की तो सेवा करनी ही है, उनमें हमारी श्रद्धा भी होती है पर 'श्राद्ध' शब्द तो परिभाषिक होता है। श्रद्धा से किया जानेवाला वह कार्य जो पितरों के निमित्त किया जाता है, श्राद्ध कहलाता है। इसमें श्रद्धा का मधुर भाव निहित रहता है। अपने जिन पूर्वजों से हमें शरीर प्राप्त हुआ हमारा पालन पोषण हुआ यदि उनके नाम से एक विशेष पात्र का सत्कार न करें तो यह हमारी कृतध्नता होगी। श्राद्ध बिल्कुल रहस्यपूर्ण, सोमपत्तिक तथा विज्ञानपूर्ण होता है। एक तरह से जीवन देने वालों के प्रति कृत्तज्ञता का आदिपर्व हैं 'पिण्डदान' मान्यता है कि पितृपक्ष यानी आश्विन कृष्णपक्ष में तो पूर्वज स्वयं श्राद्ध या तर्पण ग्रहण करने गया आ जाते हैं। विभिन्न देवी-देवताओं के असंख्य मंदिरों वाला यह नगर गया जी अपना विशेष धार्मिक महत्व रखता है। न केवल अपने देश के कोने-कोने से बल्कि विदेशों से भी श्रद्धालु पिण्डदान करने के लिए यहाँ पधारते हैं।

✦

मौलागंज, गया

श्राद्ध एवं वेदियों का पुरातात्विक महत्त्व

डॉ० शत्रुध्न दांगी

भारतीय धर्म और दर्शन में श्राद्ध का अभिप्राय प्रेतत्व विमुक्ति से माना गया है। अर्थात् जीवों को प्रेतत्व से विमुक्त करना 'श्राद्ध' है। यही कारण है कि श्राद्ध-कार्य संपन्न कराते समय प्राणी द्वारा यह संकल्प कहा जाता है - प्रेतत्त्व विमुक्ति हेतु एतच्छाद्धमहं करिस्ये। यह सर्व विदित है कि मानव शरीर पांच तत्वों से बना है, वे पांच तत्त्व हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। ऐसी मान्यता है कि जब प्राणि का प्राणांत होता है तब जीव का पंच भौतिक शरीर समाप्त हो जाता है। स्थूल शरीर की अंत्येस्टि के बाद पंच तत्त्व भी विलिन हो जाते हैं। तात्पर्य यह कि बंधन से मुक्त होते ही जीव अपने 'श्रद्धा' मार्ग का अनुसरण करता है। पुत्र अथवा परिवार के सदस्य जब श्राद्ध कर्म और पिण्डदान कर जीव को प्रेतत्त्व से मुक्ति दिलाते हैं, तब कहा जाता है कि वह जीव आवागमन से मुक्त हो जाता है। तभी तो पुराणों में कहा गया है पुन्नरकात त्रायतेति पुत्रः अर्थात् जो पुत्र पुन्नायक नरक से त्राण दिलाये, वही पुत्र है व्यवहारिक जगत में जीवित माता-पिता अथवा अन्य को जो आदर करता हो, सेवा देता हो, भरण-पोषण करता हो, वही सच्चा पुत्र है और यही श्रद्धा वास्तविक 'श्राद्ध' है। यह सत्य, धर्म, दर्शन और संस्कृति पुरातन है। यह क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी सनातन रूप में चली आ रही है। अतएव यह श्राद्ध का पुरातात्त्विक पहलू माना जायेगा।

गया विश्व के प्राचीनतम नगरों में एक है। अतएव संपूर्ण गया क्षेत्र पुरातात्त्विक क्षेत्र है। 100 वर्ष से पुराना होने पर ही वह स्थल, चीज, अथवा कागजात आदि पुरातात्त्विक महत्त्व ही बन जाता है। गया क्षेत्र में अनेक श्राद्ध-महत्त्व की वेदियाँ है, जो सैकड़ों वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। महत्त्वपूर्ण श्राद्ध वेदियों में फल्गु नदी, विष्णुपद, अक्षयवट आदि गदाधर, गया कूप, ब्रह्म सरोवर आदि। फल्गु नदी भारत की सभी नदियों में पवित्र मानी गई है। इसे अंतः सलिला भी कहा गया है। मान्यता है कि फल्गु नदी में जो प्राणि एक बार स्नान कर लेता है, उसे सभी तीर्थों में स्नान कर लेने का फल मिलता है। इसे 'गदाधर विष्णु साक्षात्' भी कहा गया है और इसका जल 'विष्णुपादोदक'। यह नदी गंगा से भी अधिक पवित्र है, चूँकि यहाँ प्राणि को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अब प्रश्न उठता है कि गया क्षेत्र में ही श्राद्ध का इतना फल क्यों मिलता है, अन्यत्र क्यों नहीं? इसका उत्तर भौगोलिक, वैज्ञानिक और पुरातात्त्विक महत्त्व की है। कारण है कि गया से ही अक्षांश और देशान्तर दोनों रेखाएँ गुजरती हैं। इन रेखाओं का सीधा संबंध सूर्य से है। सूर्य के बारह नामों में अंतिम एक नाम विष्णु भी है। इस कारण जहाँ आक्षांश और देशान्तर रेखाएँ मिलती हैं। वह स्थान 'विष्णुपदी'' कहा गया है। साक्षात् विष्णु (सूर्य) की यहाँ उपस्थिति हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए आस्था, पवित्रता और धार्मिक भावना का मुख्य केन्द्र माना गया है। इसी कारण प्राणियों को श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान के सरल माध्यम से आवागमन से मुक्ति दिलाने के लिए भी यह स्थल अति पवित्र और उपयुक्त माना गया। यह परंपरा सदियों पूर्व से यहाँ चली आ रही है और आज भी जारी है। लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष विशेष कर पितृपक्ष के अवसर पर अपने पूर्वजों में माता-पिता और परिवारों को आवागमन से मुक्ति दिलाने के निमित्त श्राद्ध, तर्पण व पिण्डदान करते हैं। यह समय पितृपक्ष मेला के नाम से प्रसिद्ध है, जो भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी से आश्विन अमावस्या तक चलता है। मान्यता यह भी है कि इन दिनों गया क्षेत्र में सारे मृत प्राणी अपने पुत्रों व परिवारों से तर्पण, श्राद्ध व पिंडदान ग्रहण करने हेतु आते हैं। यहाँ अनेक वेदियाँ बनी हुई है जो वर्षो से पूजित हैं। वे पुरातात्त्विक महत्त्व की हो गई हैं। इन वेदियों में विष्णुपद मुण्ड पृष्ठा, गयासिर, रूद्रपद, अक्षयवट, ब्रह्म सरोवर, गया कूप, आदि गदाधर, धर्मारण्य,

रामगया, सीताकुण्ड, प्रेतशिला आदि मुख्य हैं; जिन्हें ''द एन्सियेन्ट मौन्युमेन्ट्स एण्ड ऑर्किलोजिकल साइट्स एण्ड रिमेन्स एक्ट 1958'' के तहत संरक्षित एवं संवर्द्धित करने की आवश्यकता है। यद्यपि बिहार सरकार ने इस मेले को सरकारी मेले का दर्जा दे रखा है, किन्तु श्राद्ध स्थल एवं वेदियाँ अभी तक सुरक्षित, संरक्षित एवं संवद्धित नहीं हो पायी हैं। इसकी नितांत आवश्यकता है ताकि देश-विदेश से अधिकाधिक संख्या में पिण्डदानी व श्रद्धालु यहाँ आ सकें।

निदेशक, सांस्कृतिक-अनुसंधान केन्द्र
पो०-दांगीनगर-लाव, गया।

✦

महाकाल की आदिशक्ति महाकाली

साहित्य-वाचस्पति डॉ० श्री रंजन सूरिदेव

परात्पर विश्वातीत महाकाल पुरुष की आद्या शक्ति का ही नाम महाकाली है। शक्ति और शक्तिमान परस्पर अभिन्न हैं, अद्वैत हैं। अप्रज्ञात, अलक्षण, अप्रतर्क्य और अनिर्देश्य तत्त्व ही महाकाल है और उसी की शक्ति महाविद्या महाकाली है। संसार सृष्टि से पहले इसी महाविद्या का साम्राज्य रहता है। इसीलिए, महाकाली आगम शास्त्र में 'प्रथमा' अक्षय और आदि विशेषणों से वर्णित होती है।

रात्रि प्रलयकाल का स्वरूप है। उसमें भी अर्द्धरात्रि का समय तो प्रलयकाल का घरोतम रूप है। यही महाकाली है। अर्द्धरात्रि का पर्याय 'निशीथ' है और इसी निशीथ बेला में महाकाली की पूजा होती है। सूर्योदय के पूर्व और मध्यरात्रि (बारह बजे) के बाद की समस्त समयावधि महाकाली का ही रूप है। इस निर्धारित समय में क्रम-क्रम से तम का ह्रास होता है। इतने समय को तम के तारतम्य के आधार पर ऋषियों ने चौरासी अंशों में विभक्त किया है। यही महाकाली के चौरासी अवान्तर अंश या विभाग हैं। प्रत्येक का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न है।

शक्तियाँ अचिन्त्य हैं, निर्गुण हैं और प्रत्यक्ष से परे हैं। इसलिए, उनके स्वरूपों की उपासना के लिए ऋषियों ने निदान-विद्या या संकेत-विद्या या फिर प्रतीक-विद्या के आधार पर इनकी कल्पित मूर्त्तियों का निर्माण किया है। आज निदान-विद्या का लोप हो गया है। इसीलिए देव मूर्त्तियों के रचना-वैचित्र्य पर लोगों की बुद्धि या समझ निर्भ्रान्त नहीं रह गई है।

उपासना-विधि में 'ध्यान' का प्राथमिक महत्त्व है। ऋषि के आदेश के अनुसार उपास्य देव के स्वरूप का ध्यान अनिवार्य है। महाकाली की उपासना के अवसर पर सर्वप्रथम उनका यथा निर्धारित स्वरूप ही ध्यातव्य है। महाकाली की उपासना अनुष्ठान विशेषत: दीपावली-पर्व से जुड़ा हुआ है। महाकाली योग की अधीश्वरी देवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी आराधना प्रत्यक्ष यौगिक उपासना है। इसलिए, दीपावली साधना-पर्व के रूप में भी स्वीकृत है। दीपावली के दिन निशीथ में अनेक तन्त्र-साधक अपनी अभीष्ट देवी, महाकाली की श्मशान-साधना भी करते हैं। इसे श्मशानवासिनी महाकाली की निशीथ-पूजा कहते हैं। जैसा पहले कहा गया, यह महाकाली श्मशान चारी महा शक्तिमान महाकाल की शक्ति-स्वरूपा हैं। दोनों एक-दूसरे से अभिन्न हैं, अर्द्धनारीश्वर हैं। महाकाली का ध्यान इस प्रकार है :

शवासूढां महाभीमां धोरदंष्ट्रां हस्नमुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवरा भयकरां शिवाम।।
मुण्डमाला धरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सच्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालय वासिनीम्।।

(शाक्त प्रमोद : काली तन्त्र)

अर्थात् महाकाली शव पर सवार हैं। उनकी शरीराकृति बहुत डरावनी है। उनके दाँत तीखे और भयावह हैं। फिर भी वह हँसमुख हैं। उनके चार हाथ हैं। एक हाथ में खड्ग है, दूसरे हाथ में नरमुण्ड हैं। तीसरा हाथ अभयमुद्रा में है और चौथा वरदमुद्रा में। गले में मुण्डमाल है। जिह्वा मुँह के बाहर आकर लपलपा रही है। वह दिगम्बर रूप में हैं। श्मशान ही उनका आवास गृह है। ऐसी भी रूपा महाकाली का

ध्यान दीपावली के निशीथ में करना चाहिए। यों, दीपावली में महाकाली की निशीथ पूजा प्रसिद्ध है।

महाकाली नाम की यह महाशक्ति प्रलयकाल की मध्यरात्रि से सम्बन्ध रखती है। संसार जब तक शक्तिमान रहता है, तभी तक वह 'शिव है। शक्ति का विलोप हो जाने पर 'शव' बन जाता है। शवरूप विश्व महाकाली का आधार पीठ है। प्रलयकाल में शवरूप में परिणत विश्व पर महाकाली खड़ी हैं। महाकाली की यही प्रतिमा या मुद्रा आज भी लोक पूजित है। मार्कण्डेय पुराण की 'दुर्गासतशती' के आधार पर महाकाली दारिद्रय-दुख और भय का हरण करने वाली, सबके उपकार में निरत और स्नेह से आर्द्र हृदय वाली हैं। दीपावली समृद्धि के आवाहन का पर्व है, इसलिए इस अवसर पर द्रारिद्रय दु:ख का नाश करने वाली महाकाली की पूजा-उपासना भी प्रासंगिक है। 'दुर्गासतशती' में वर्णित कथा प्रसंग के अनुसार विष्णु के कर्णमल से उत्पन्न मधु और कैटभ नाम के राक्षस जिस समय विष्णु के नाभि-कमल पर स्थित ब्रह्म को मारने के लिए उद्यत हो गये, उस समय विष्णु भगवान् सो रहे थे। ऐसी स्थिति में ब्रह्म-जी ने आत्मरक्षा और उन दोनों राक्षसों के विनाश के लिए जिन महाकाली का स्तवन किया, उनका रूप कुछ इस प्रकार का है :

खड्ग चक्रगदेषु चाप परिद्याञ्छूलं भुशुण्डीं शिर: शङ्ख संदधतीं करै स्जिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम्। नीलाय्म युतिमास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकां। यामस्तौ तस्वपिते हरौ कमल णो हन्तुं मधुं कैटभम्र।।

अर्थात् उन महाकाली के दस मुख और दस पैर थे। उनके शरीर की कांति नीलम रत्न जैसी थी। वह अपने दस हाथों में ये दस अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए थीं।-खड्ग चक्र, गदा, बाण, धनुष,पारिध (माला), शूल (त्रिशूल), भुशुण्डी (एक प्राचीन अस्त्र या शस्त्र), नरमुण्ड और शंख।

महाकाली और रूद्र दोनों ही संहारकारिणी देवता हैं, परन्तु शिव के वक्ष: स्थल पर खड़ी महाकाली की प्रतिमा के भी दर्शन होते हैं। उसके बारे में कथा है कि असुर के कार्य संहार में क्रुध महाकाली का प्रलयंकर क्रोध जब शान्त नहीं हो रहा था, तब स्वयं शिव उनके रास्ते पर लेट गये, जिससे महाकाली के पैर शिव के वक्ष: स्थल पर गये, तभी सहसा उनको यह अनुभव हुआ कि पति के वक्ष: स्थल पर पैर रखकर मैंने तो बड़ा अनर्थ किया। और तब पश्चाताप वश सहज ही उनकी जिह्वा मुख के बाहर निकल आई।

रूद्र से यह संहार-कार्य कराने वाली महाकाली ही हैं। महाकाली स्वरूपा रूद्रशक्ति अपने भयंकर कार्य के अनुसार यद्यपि काले रंग की है, तथापि उसका यह संहार कार्य संहार के लिए नहीं, वरन् समस्त संसार के रक्षण और कल्याण के लिए ही होता है। महाकाली दुष्ट राक्षसों का विनाश करके पूरे संसार को दुष्ट विहीन करके शान्ति की स्थापना करती हैं। इसलिए, दुर्गासतशती में देवी कहती हैं :

इत्थं यदा-यदा बाधा दान बोल्या भविष्यति। तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम्।।(11.55)

अर्थात् जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी, तब-तब मैं अवतार धारण कर उन शत्रुओं का संहार करूँगी।

जैसा पहले कहा गया, महाकाली दारिद्रय दु:ख और भय का हरण करने वाली हैं। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि महाकाली के रूप का दर्शन अथवा चिन्तन करने पर सबसे पहले मन में ध्वंस की विभीषिका उत्पन्न होती है, प्राण भय से काँप उठते हैं। परन्तु वस्तुत: महाकाली चिदानन्दमयी और 'वराभयकरा' (एक साथ वर और अभय प्रदान करने वाली हैं)। महाकाली की मूर्त्ति के अतिरिक्त संसार में कहीं भी, किसी भी मूर्त्ति में भय और आनन्द का युगपत् समावेश नहीं दृष्टिगत होता। चतुर्भुज महाकाली दो हाथों में जैसे तलवार या खड़ग् और नरमुण्ड धारण करती हैं, वैसे ही दूसरे दो हाथों से वर और अभय-दान के लिए सर्वदा उद्यत रहती हैं। मार्कण्डेय पुराण (दुर्गासतशती) का वचन है :

दारिद्रय दु:ख भयहारिणी का त्वदन्या। सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता।। (मा०पु०)

दु:ख दरिद्रता और भय को दूर करने वाली देवी महाकाली के अतिरिक्त और कोई नहीं, जो सर्वोपकार में निरत और दयावती हो।

शुभैषणा श्री नगर कॉलोनी, संदलपुर, महेन्द्रू, पटना

भटकती प्रेतात्माओं को चिर-शान्ति का वरदान

प्रो० लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा

मानव मात्र में अमरता की कामना सहज स्वाभाविक है। युग-युगान्तर से पुस्त-दर-पुस्त यह भावना मानव-मन में सन्निहित रही है। संसार नश्वर है, इसलिए मृत्यु तो निश्चित है। संतान में व्यक्ति अपनी अमरता का बीज पाता है, क्योंकि संतान में वह अपने ही अंकुर का फलित रूप देखता है। इसलिए संतान के जन्म के समय उसके माता-पिता ही क्यों, टोला- पड़ोस आदि समस्त परिवेश संतान-जन्म के अवसर पर थिरक उठता है।

ऋषि-मुनियों ने संतान-जन्म के पौराणिक महत्त्व पर भी प्रकाश डाला है। पद्म पुराण, वायु पुराण और अग्नि पुराण आदि कई पुराणों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि व्यक्ति को संतान की कामना इसलिए भी करनी चाहिए कि उनकी कोई संतान गया जाकर अपने पितरों का पिण्डदान कर सके :-

'एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्ये कोऽपि गयां-व्रजेत् गया में पिण्डदान करने से परलोक में भटकती प्रेतात्माओं को चिरशांति का वरदान : गया धाम में पितरों का पिण्डदान।

इस सम्बन्ध में एक विश्वासपूर्ण भोगे सत्य का विवरण सुनने का मुझे सुअवसर मिला है, जिसे मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। कॉलेज में अध्यापन की वृत्ति अपनाने के पूर्व कुछ वर्षो तक 'कल्याण' के तत्कालीन सम्पादक द्व्य (स्व.) हनुमान प्रसाद जी पोद्दार तथा (स्व.) चिम्मन लाल जी गोस्वामी के सान्निध्य में गोरखपुर 'स्थित गीता वाटिका' में रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। स्व. पोद्दार जी 'भाई जी' के नाम से विख्यात थे। बच्चे, बूढ़े, जवान- सभी उन्हें 'भाई जी' कहते थे। 'गीता भवन' में प्रवचन देते हुए एक दिन भाई जी ने कहे थे- ''हम श्राद्ध-तर्पण पर बहुत जोर देते हैं। इसके लिए हमें नये-नये अनुभव प्राप्त हुए हैं। यह बिल्कुल सच्ची बात है, मानो ऋषियों ने यह सब देखकर लिखा हो उन लोगों में जा-जा कर लोगों की स्थिति देखकर लिखा हो। ऐसी बात नहीं है कि लोगों को रोचक और भयानक बातें सुनकर अच्छे

काम में लगाया गया हो। श्राद्ध-तर्पण और पितरों के लिए हमेशा दान करना चाहिए। यह केवल शास्त्र की बात नहीं है। बम्बई में प्रेत से मेरी बात हुई थी, मैंने बहुत सी बातें उनसे जानी।

भाई जी ने साधना का आरम्भ बम्बई से किया था। वहीं, उन्हें एक प्रेत से भेंट हुई थी। बम्बई में समुद्र के किनारे चौपाटी स्टैंड में पड़ी एक बेंच पर बैठकर वे नाम-जप तथा भगवत् चिन्तन कर रहे थे। जिस स्थान पर वे बैठे थे, वह बिल्कुल एकान्त था और बल्ब आदि के दूर रहने के कारण वहाँ अंधेरा-सा था। तभी पारसी पुरोहितों की भाँति एक विशेष प्रकार की पोशाक पहने उनकी बेंच के ठीक सामने एक पारसी सज्जन खड़े दिखाई दिये। भाई जी के जप का क्रम जारी रहा और वे पारसी सज्जन बहुत देर तक उनके सामने खड़े रहे। उक्त सज्जन को इतनी देर तक खड़े देखकर उनसे बैठ जाने का आग्रह किया। उनके इतना भर कहने पर सामने खड़े सज्जन बोले - ''आप डरिएगा नहीं, मैं प्रेत हूँ।''

इतना सुनते ही भाई जी के रोंगटे खड़े हो गये। आगे की स्थिति भाई जी ने स्वयं बतलायी है - ''उन सज्जन ने ज्यों ही अपने को प्रेत बतलाया, मैं भयभीत हो गया। मुझे पसीना हो आया। वे समझ गये कि मैं डर रहा हूँ। उन्होंने फिर कहा - 'आप डरिए नहीं, मैं आपका अनिष्ट नहीं करूँगा। मैं तो आपसे सहायता की याचना करने आया हूँ। आपका मंगल होगा।' उनके इस आश्वासन से मैं कुछ आश्वस्त हुआ। पीछे उन्होंने कहा - ''यदि आप मुझसे पहले बात नहीं करते तो मैं बोल नहीं पाता, क्योंकि मुझमें ताकत नहीं है कि बिना किसी के पहले बात किये मैं अपनी ओर से यहाँ के लोगों से बोल सकूँ। यही हेतु है कि मैं इतनी देर प्रतीक्षा करता रहा कि आप बोलें। ...

. मैं पारसी हूँ, पर मेरी हिन्दू-शास्त्रों में श्रद्धा है। मेरी मृत्यु अभी हाल में ही हुई है। प्रेत लोक में मेरी स्थिति अच्छी नहीं है। आप कृपा करके किसी को गया भेजकर मेरे लिए पिण्डदान करवा दें, तो मेरी सद्गति हो जाएगी।'' मैंने उनसे प्रश्न किया - गया में हिन्दुओं के द्वारा श्राद्ध किया जाता है। आप पारसी हैं, आप लोग श्राद्ध पर विश्वास नहीं करते; फिर श्राद्ध कराने की बात कैसे करते हैं? प्रेत ने उत्तर दिया - ''सत्य यदि सत्य है, तो वह जाति सापेक्ष नहीं है। भिन्नता जाति में होती है। जाति तो यहाँ के व्यवहार को लेकर है; जीव में जाति-भेद नहीं होता। जीव में पारसी, हिन्दू, ईसाई का सवाल नहीं''।

भाई जी को प्रेत ने अपने जीवन-काल का नाम ठिकाना भी बताया। मृत्यु के पूर्व बम्बई में ही वे निवास करते थे। भाई जी ने पता लगाया था। बम्बई के बांद्रा अंचल में उनका आवास था। छह महीने पहले उनका निधन हुआ था। वे पारसी थे। किन्तु अपने जीवन-काल में वे प्रतिदिन गीता का पाठ करते थे। भाई जी ने हरिराम नामक एक ब्राह्मण को गया में पिण्डदान एवं श्राद्ध करने के लिए भेजा। हरिराम जी ने जिस दिन उस पारसी सज्जन का गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान किया, उसी दिन चौपाटी में भाई जी को उस प्रेत के दर्शन हुए। प्रेत ने भाई जी से बड़े विनीत स्वर में कहा - मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने आया हूँ। आपने मेरा काम कर दिया। मैं अब प्रेत लोक से उच्च लोक में जा रहा हूँ।

कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे भाई जी। उनका कथन किसी साधारण व्यक्ति का मिथ्या भाषण नहीं। भारत विख्यात विद्वान महामहोपाध्याय डॉ० गोपीनाथ कविराज ने उनके विषय में लिखा है -'' हनुमान प्रसाद पोद्दार एक नाम मात्र नहीं, वस्तुत: एक महान् आदर्श के प्रतीक हैं। ..... पोद्दार जी जीवन में जिस आदर्श को लेकर अग्रसर हुए, वह था - लोक सेवा के असाधारण नैतिक आदर्श की प्रेरणा द्वारा जीवन-संचालन और उसके साथ सबके मूल में स्थित भगवत् एवं सेवा-भक्ति का अनुशीलन।''

भाई जी के उन्नत व्यक्तित्व से जुड़ी घटनाएँ तो बहुत हैं, उनमें मात्र एक प्रस्तुत कर रहा हूँ। जब देश के महान् सपूतों को 'भारत रत्न' देने की योजना बनी, तो तत्कालीन राष्ट्रपति देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने मन-ही-मन हनुमान प्रसाद पोद्दार जी को 'भारत रत्न' देने का निश्चय किया। राजेन्द्र बाबू की दृष्टि में 'भाई जी' 'भारत रत्न' उपाधि के लिए सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति थे। राष्ट्रपति ने भारत सरकार के तत्कालीन गृह मंत्री पंडित गोविन्द बल्लभ पंत को भाई जी की स्वीकृति लेने को भेजा। गृह मंत्री के प्रस्ताव को सुनते ही भाई जी अन्तर्हृदय की पीड़ा से मर्माहत हो गये थे और विनीत शब्दों में उनसे बार-बार अनुरोध करने लगे कि इस उपाधि के लिए उनके नाम की अनुशंसा न की जाए। भाई जी को विह्वल देखकर पंत जी लौट गये। दिल्ली पहुँचने के बाद पंत जी ने भाई जी को पत्र लिखा - ''इससे मुझे यह अनुभव हुआ है कि आप इस उपाधि से बहुत ऊँचे हैं।''

भाई जी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के भी अत्यंत प्रिय थे। ऐसे महानुभावों के ढेरों पत्र भाई जी के पास आते रहते थे। प्रेत के द्वारा भाई जी को यह ज्ञात हो गया था कि मरते ही पाञ्चभौतिक शरीर से जीव का सम्बन्ध छूट जाता है और तुरन्त उसे अतिवाहिक देह की प्राप्ति हो जाती है। आत्मा अमर है, वह कभी मरती ही नहीं। मृत्यु का अर्थ तो है पाञ्चभौतिक, स्थूल देह से केवल सम्बन्ध - विच्छेद। जीवन में किये गये कर्मफल के वशीभूत परलोक में शान्ति की आकुल खोज में आत्मा भटकती रहती है। पितृपक्ष में पिण्डदान हेतु तत्पर संतान के मन में अपने पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए तड़प होती है। पूर्वजों के निधन के बाद उनकी खोज खबर लेने वाली ऐसी संतानों के लिए भाई जी का दिव्य संदेश है - भटकती आत्माओं को चिर शान्ति प्रदान करने का शाश्वत वरदान गया धाम में श्रद्धा पूर्वक पिण्डदान!!

बी० 36, मजिस्ट्रेट कॉलोनी
आशियाना नगर, पटना 800025

✦

पितृ-पक्ष मेले का सांस्कृतिक महत्त्व

- श्री अशोक कुमार सिन्हा

हमारी भारतीय परम्परा में तीर्थों का बड़ा महत्त्व है। गया-धाम धार्मिक दृष्टि से बड़ा तीर्थ है। समग्रता की दृष्टि से देखें, तो पूरे देश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक अनेकों तीर्थ स्थल हैं, जहाँ पौराणिक मान्यताओं पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्राचीन मन्दिरों का आकर्षण फैला पड़ा है। हिमालय की गुफाओं से लेकर कन्याकुमारी तक और उत्तर-पूरब से लेकर पश्चिम में द्वारिका तक हिन्दू-धर्म-स्थलों की श्रृंखला बनी हुई है। जहाँ चारों दिशाओं से भक्तजन और पर्यटक आते-जाते रहते हैं। भक्तों को भगवान के प्रति उनकी आस्था उन्हें पुण्य-अर्जन के विचार से वहाँ खींच ले जाती है, तो पर्यटकों को उन स्थलों और मन्दिरों की भव्यता और स्थल-सौन्दर्य आकृष्ट करता है। दरअसल हिन्दू धर्म जहाँ पुराण सम्मत है, वहीं मानवीय इतिहास से पोषित भी। इसका केन्द्र विस्तार पूरे विश्व को कुटुम्ब के रूप में समाहित करने में सक्षम है। नि:सन्देह, इसका अर्थ-संकोच सामाजिक संकट पैदा करता है!

जब गया-तीर्थ की बात आती है, तो यह सच बहुत स्पष्ट होकर सामने आता है कि हिन्दू मान्यताओं के अनुसार पूरे विश्व में गया-तीर्थ ही एक ऐसा स्थल है, जहाँ पिण्डदान कर मनुष्य अपने पितरों के लिए स्वर्ग का द्वार खोल पाता है। जीवन में हमारे दायित्व अपने स्वजनों, परिजनों के लिए तो परिभाषित है ही, हमने अपने दिवंगत माता-पिता तथा अन्य संबंधियों के लिए भी अपने कर्त्तव्य निश्चित कर रखे हैं। यह पितृपक्ष प्रति वर्ष हमारे उसी दायित्व के निर्वहन के निमित्त निश्चित किया गया है। किंवदंती है कि राम के वन-गमन के बाद शीघ्र ही महाराजा दशरथ ने पुत्र-वियोग में प्राण त्याग दिये। वनवास के क्रम में सीता अपने पति राम और देवर लक्ष्मण के साथ वन-यात्रा के बीच गया की फल्गु नदी के निकट थीं। राम ने यहाँ पिण्डदान करने का विचार किया। इस निमित्त वे पिण्डदान की सामग्रियाँ लाने चले गए। इसी बीच मृत ससुर के हाथ नदी में उग आए और सीता ने बालु का पिण्डदान कर महाराजा दशरथ की इच्छा पूरी की। जब राम लक्ष्मण लौटे, तो उन्हें सारी बात सीता ने बताई। किन्तु उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ। सीता ने साक्षी के रूप में फल्गु नदी, केतकी के फूल, तथा एक ब्रह्मण और गाय (जो उपस्थित थी) को प्रस्तुत किया। लेकिन वे चारो झूठ बोल गये। सीता ने उन्हें शाप दिया कि फल्गु की सतह सूखी रहेगी, केतकी देव-पूजन के लिए निषिद्ध मानी जायेगी और गाय सर्वभक्षिणी होकर विष्टा तक खा लेगी और ब्रह्मण निर्धन रहेंगे। पुन: जब लक्ष्मण ने पिण्डदान का आयोजन किया, तो दशरथ की आत्मा ने सीता द्वारा पिण्डदान किये जाने की बात बताई। इससे सिद्ध होता है कि गया में पिण्डदान की परम्परा अनादि काल से ही चली आ रही है।

जो भी हो, किंवदंतियॉ इतिहास न होकर भी जन-जीवन को प्रभावी ढंग से संचालित करती है। लेकिन इसका सामाजिक पक्ष, कदाचित धार्मिक मान्यताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। इतिहास में जिन राजाओं साम्राटों की कथाएँ कही गयी हैं, बहुत संभव है कि उनके नाम और काल का पता भी सामान्य जन-समूहों को न हो, परन्तु राम-कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, सीता, राधा, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी जैसे नामों का जन-जीवन में सम्पूर्ण समावेश है। उनसे जुड़ी महत्वपूर्ण तिथियों और घटनाओं से उनका आत्मीय लगाव है। उनके नाम पर उपवास व्रत, नियम-धर्माचरण चलते रहते हैं। इन्हीं कारणों से विभिन्न भाषाओं, प्रदेशों,

बोलियों, वेश-भूषा रीति-रिवाज से जुड़े लोगों का तीर्थ-स्थलों पर आना-जाना होता रहता है। वस्तुत: यह परम्परा हमारी सांस्कृतिक चेतना को एक दूसरे से जोड़ने का एक प्रभावी और अनिवार्य तत्त्व है। डॉ० राम मनोहर लोहिया प्राय: रेल भाड़ा में वृद्धि होने पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते थे कि इससे हमारी समग्र संस्कृति की हानि होगी। आमजन देशाटन नहीं कर पाऐंगे। इसलिए यात्रा-किराये को आम-जन के लिए सुलभ बनाए रखना एक राष्ट्रीय आवश्यकता है।

गया-तीर्थ में भी पिण्डदान के उद्देश्य से यात्री बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, तामिलनाडु, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात आदि स्थानों से आते हैं। ये कुछ दिन गया में रूककर अपना धार्मिक कर्त्तव्य पूरा करते हैं। इस बीच उनके आपस में विचारों का, बोलियों का, रहन-सहन और खान-पान का आदान-प्रदान होता है। उनके अपने प्रदेशों में भी यहाँ से तीर्थाटन के उद्देश्य से लोग आते-जाते हैं। यह एक बड़ी जरूरी प्रक्रिया है जो देश के लोगों के आपसी संबंध को सरल और सहज बनाती है। हम जब भारतीय मनीषा और संस्कृति की बात करते हैं, तो वहाँ हमारा प्रदेश एक इकाई होता है। समग्रता में हमारे राष्ट्रीय चरित्र और सम्पूर्ण संस्कृति की बात होती है। अनेकता में एकता की बात तो हम बहुत करते हैं। लेकिन यह भूल जाते हैं कि भावना को मजबूत करने वाले कारकों को सुदृढ़ और सुचारू बनाने के लिए हम जितना कुछ कर पाते रहे हैं, वह पर्याप्त है भी या नहीं।

जो तीर्थ यात्री देश-विदेश से तथा दूसरे धर्मों से भी गया-तीर्थ में धार्मिक या पर्यटन की दृष्टि से आते हैं, यदि उनके लिए यथार्थ नागरिक सुविधा सुरक्षा का प्रावधान नहीं किया जाता है, तो यह हमारी संस्कृति को कलंकित कर देगा। नहीं कहा जा सकता है कि जो लोग पिण्डदान करके संतुष्ट लौटते हैं, उनके पितरों को स्वर्ग मिलेगा या नहीं, उनकी आत्मा मुक्त होंगी या नहीं, लेकिन यहाँ आकर जो सामाजिक समरसता को वे अपना अवदान देते हैं, वह देशहित में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

उप-निदेशक, महारथी अनुसंधान केन्द्र, बिहार सरकार
इन्दिरापुरी कॉलोनी, पो०-बी०भी० कॉलेज, पटना
मोबाईल नं०-094310149498
ई-मेल : askinhajdi@gmail.com

✦

जगत में धन्य कौन है ?

''जो पुरूष अपने वर्णधर्म से विचलित नहीं होता, अपने सुदृढ़ और विपक्षियों में समान भाव रखता है, किसी का धन हरण नहीं करता; न किसी जीव को मारता ही है, उस अत्यन्त रागादि शून्य और निर्मल मन व्यक्ति को विष्णु का भक्त जाना।

जो अपना समय भगवत्तत्त्व के चिन्तन और कीर्तन में बिताता है, जो दम्भवाद और विवाद से दूर रहता है और जो सब के आदि ब्रह्म का आत्मसुख-संवाद करता है, ऐसा सर्वोत्तम श्री रामचन्द्रजी का दास इस जगत में धन्य है।

जो अखिल विश्व में सदा-सर्वदा सरल, सत्यवादी और विवेक सम्पन्न है तथा जो कभी भी मिथ्या भाषण नहीं करता, वह सर्वोत्तम श्री रामचन्द्र जी का भक्त इस जगत् में धन्य है।

जिसके मन में दुष्ट आशा तथा विषय की आशा नहीं होती, जिसके अन्त:करण में भगवान प्रेम की पिपासा लगी है और भगवान भक्ति भाव के कारण जिसके ऋणि है, ऐसा सर्वोत्तम श्री रामचन्द्र जी का दास इस जगत् में धन्य है। ''

- समर्थ रामदास स्वामी

पितृपक्ष और गया की वेदियाँ

– डॉ० लालदेव यादव

भारतीय संस्कृति में गया का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसा माना जाता है कि गया विश्व के प्राचीनतम नगरों में एक है। यहाँ की श्राद्ध-क्रिया का वर्णन अद्‌भुत एवं विलक्षण है। आर्य जाति में श्राद्ध की परम्परा सनातन काल से चली आ रही है। चौदह मनुओं में एक मनु का नाम भी श्राद्ध देव मनु है, जो वर्तमान मन्वन्तर के मनु हैं। विवस्वान् के मनुस्मृति में श्राद्ध-क्रिया का वर्णन मिलता है। श्रद्धा पूर्वक पितरों के उद्देश्य से जो कुछ किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं। ऐसा कहा गया है कि यदि व्यक्ति गया में आकर श्राद्ध करता है, फल्गु नदी में स्नान कर दान करता है और विष्णुपद में पिण्डदान करता है, तो यह स्वर्ग में भी दुलर्भ है।

गया शीर्ष वसेन्निलयं स्नानं फल्गवां चरेत।
गया शीर्ष सदा पिण्डमेतत् स्वर्गेपि दुर्लभम्।।

गया श्राद्ध गया जी में अवस्थित तैंतालिस वेदियों पर कर्मकाण्ड के अनुसार सम्पन्न होते हैं।

साधारण वेदी शब्द का अर्थ हम चबूतरा से लगाते हैं। वेदी और वेदिका दोनों का अभिप्राय एक है और यह शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है। सामान्यत: हिन्दी शब्दकोश के अनुसार 'वेदी' शब्द का अर्थ होता है-यज्ञ इत्यादि के लिये तैयार किया हुआ स्थान, मंदिर या प्रासाद के प्रांगण में बना हुआ चतुष्टकोण स्थान या मंडप, भूभाग से कोई वस्तु रखने का आधार। गया की वेदियों का विशेष महत्व गया-श्राद्ध करने की प्रक्रिया में ही है। इन वेदियों पर श्राद्ध करने की अलग- अलग विधियाँ, रीतियाँ तथा महात्म्य बतलाये गये हैं। गया की पावन भूमि पर एक पखवारे तक चलने वाले इस पितृपक्ष मेला में पवित्र तैतालिस वेदियों पर कर्मकाण्ड करने का विधान है। हमारे धर्म शास्त्रों में उल्लेख है कि अनादि काल में तीन सौ पैंसठ वेदियों गया में थीं, जहाँ सालों भर पिण्डदान होते थे। लेकिन अब कुछ ही वेदिया रह गयी हैं। साथ ही समयाभाव के कारण एकपक्षीय, त्रिदिवसीय तथा एक दिवसीय पिंडदान आदि किये जाते हैं। एक दिवसीय पिण्डदान फल्गु, विष्णुपद तथा अक्षयवट तीन प्रमुख वेदियों पर होते हैं। अन्य वेदियों पर पिण्डदान विभिन्न विधियों से करने की प्रक्रिया है। इन वेदियों का निर्माण और महत्व विभिन्न पुराणों और ग्रन्थों के अनुसार अलग-अलग है। विभिन्न शास्त्रों में इन वेदियों पर श्राद्ध करने की अलग-अलग विधियाँ-रीतियाँ तथा महात्म्य बतलायें गये हैं।

शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और पुराणों में वर्णित कथा और महात्म्य के अनुसार उक्त स्थान को पहचान कर जमीनी रूप प्रदान किया गया है। इन वेदियों में मुख्यत: दो प्रकार की वेदियाँ पिण्ड वेदियाँ और तीर्थ वेदियाँ हैं। (पीपल के वृक्ष) के दर्शन का महत्त्व है, तो वैतराणी में गऊदान का। गया में श्राद्ध हेतु वेदियों के स्थान निरूपण का प्रमुख आधार-वायु पुराण, मत्स्य पुराण, शंख स्मृति, स्मृति सार, रामायणों में वर्णित गया तीर्थ महात्म्य, अग्निपुरण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण इत्यादि ग्रन्थ हैं। हिन्दी ग्रन्थों में वर्णित कथाओं और महात्म्यों के आधार पर वेदियों का निर्माण एवं स्थापना की गई। ये वेदियाँ आज के सैकड़ों हजारों वर्षो से चली आ रही हैं। इन तमाम वेदियों पर श्राद्ध-कर्म करने के लिए दिनानुसार वेदियों का बँटवारा किया गया था। वृहत श्राद्ध पद्धति में अपने सुविधानुसार श्राद्ध करने का विधान है। दिनों के अनुसार ही श्राद्ध करने वाली वेदियों की संख्या का निर्धारण किया गया है। रूचि, श्रद्धा, समय तथा अर्थ की उपलब्धता ही यह तय करती है कि कितने दिनों का श्राद्ध कर्म कितनी वेदियों पर किया जाये।

मूल रूप से श्राद्ध-कर्म कराने वाले पंडित अपने-अपने यजमानों को प्रमुख वेदी-स्थलों पर ले जाते हैं, जहाँ उनका पिण्डदान सम्पन्न कराया जाता है

विष्णुपद वेदी :- आज यह वेदी मुख्य रूप से ख्याति प्राप्त कर चुकी है। फल्गु नदी तट पर स्थित विष्णु पद मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा उन्नीस वेदियों पर पिण्डदान करने का विधान है। ये सभी वेदियाँ विष्णुपद के गर्भगृह और सभा मंदिर में स्थित हैं। धर्मशास्त्र के अनुसार भगवान् विष्णु के अतिरिक्त अठारह देवताओं और देवऋषियों के पद-चिह्न यहाँ है जिनका स्मरण कर पिण्डदान किया जाता है। ये हैं (1) रूद्र पद (2) ब्रह्म पद (3) विष्णु पद (4) कार्तिक पद (5) दक्षिणाग्नि पद (6) गार्हपत्याग्नि पद (7) आद्वनी यांग्नि पद (8) सूर्यपद (9) चन्द्र पद (10) गणेश पद, (11) संदयाग्नि पद (12) आवस याग्नि पद (13) दधीचि पद (14) कण्व पद (15) मातंग पद (16) कोरा पद (17) अगस्त्य पद (18) इन्द्र पद एवं (19) कथ्य पद्।

प्रेतशिला-रामशिला :- विष्णुपद मंदिर से लगभग दस किलोमिटर उत्तर-पश्चिम के कोना पर अवस्थित ये शिलाएँ छोटे पर्वत है। पितृपक्ष मेला में यहाँ तक पहुँचने के लिए विष्णुपद मंदिर से सरकारी वाहन की व्यवस्था होती है, जो गंतव्य स्थान तक जाती है। उक्त वेदियों पर पाँच पिण्डदान देने का प्रावधान है। यहाँ पिण्ड, ब्रह्माण्ड, रामकुंड, प्रेतशिला और काकबलि को दिया जाता है। यह शिला गयासुर पर रखी गयी मानी जाती है।

फल्गु :- यह अंत: सलिला का प्रवाह लेकर विष्णु चरण की बगल से बहती है। यहाँ भी पिण्ड वेदी है, क्योंकि फल्गु भगवान् विष्णु की जलमूर्त्ति मानी जाती है।

उत्तर मानस :- विष्णुपद मंदिर से उत्तर मुख्य गया बाजार जाने का रास्ते में यह पिण्ड वेदी है। यात्रीगण रिक्शा या पैदल यहाँ तक आ सकते हैं। वर्तमान में यह देवस्थल पितामहेश्वर के नाम से जाना जाता है। इसे पंचतीर्थ कहा जाता है।

उदीची कनखल एवं दक्षिण मानस वेदी-विष्णु मंदिर से सटे पतली गली से होते हुए पावन वेदी स्थलों तक पहुँचा जा सकता है। सूर्यकुंड के पास ही इसका स्थान है। वैसे उदीची कनखल हरिद्वार के पास तीर्थ स्थल है, लेकिन पिण्ड की महत्ता से इसे यहाँ स्थापित किया गया है।

जिह्वालोल :- यह स्थान मुख्य विष्णुपद मंदिर के पूर्वी द्वारा से जाने पर फल्गु तट की सीढ़ियों पर है, जहाँ श्राद्ध सम्पन्न कराया जाता है। धार्मिक भाव से जहाँ श्राद्ध सम्पन्न कराया जाता है और शाब्दिक भाव से जहाँ जीभ की लालसा त्याग की जाय, का उद्देश्य को चरितार्थ करना इस वेदी का उद्देश्य समझा जाता है।

ब्रह्म सरोवर :- काकबलि, इस स्थान पर विष्णु पद मंदिर से दक्षिणी सड़क द्वारा पाँव पैदल आया जा सकता है। रास्ते में मुख्य तर्पण स्थल 'वैतरणी सरोवर' भी अवस्थित है। ब्रह्म सरोवर के पास काकबलि पिण्ड दिया जाता है। काकबलि का एक पिण्ड, प्रेतशीला खंड पर भी देने का जिक्र किया गया है। भारतीय धर्मशास्त्र के अनुसार ब्रह्म सरोवर का निर्माण ब्रह्मा जी द्वारा यज्ञ के समय खंभा गाड़ने के उद्देश्य से किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि इस स्थान पर धर्मराज युधिष्ठिर पांडव और अगस्त्यऋषि के बीच चार महीने तक रहने का वर्णन मिलता है।

धर्मारण्य :- यह विष्णुपद मंदिर से लगभग दस किलोमिटर दक्षिण बोधगया मार्ग पर स्थित यह ऐतिहासिक वन अब स्मारिक हो गया है। यह पिण्ड स्थल मुख्य नदी में है, जहाँ फल्गु, निरंजना और सरस्वती का समागम हुआ है।

सीताकुंड :- फल्गु नदी के तट पर विष्णु पद पार कर यहाँ पहुँचते हैं। धर्मशास्त्र में यह वर्णन आया है कि सीता ने अपने ससुर का श्राद्ध इसी तट पर किया था।

गया सिर :- विष्णु पद मंदिर के पश्चिमी द्वार के बाहर से ही दक्षिण ओर दस-ग्यारह सोपान नीचे आने

पर गया सिर वेदी है। ऐसा माना जाता है कि 'गय' का सिर भाग यहीं पर है।

गया कूप :- विष्णुपद मंदिर के दक्षिणी मार्ग पर गया कूप स्थित है। बाहर से यह कूप नजर नहीं आता है। चहार दिवारी से घिरा यह कूप प्रेतों के विसर्जन के लिए बनाया गया था।

भीम गया :- गया में शक्ति पीठ मंगलागौरी के रास्ते में यह स्थान है, जहाँ स्वयं भीम ने श्राद्ध किया था।

गौ-प्रचार :- मंगलागौरी से अक्षयवट में गौ-प्रचार है, जहाँ स्वयं ब्रह्मा जी ने गौदान किया था।

गदालोल :- भगवान विष्णु ने हेती नामक दैत्य का संहार गदा से किया और गदा का रुधिर जिस गलाशय में धोया गया वह गदालोल कहलाया। आज यह स्थान लुप्त है। लेकिन इसकी वेदी अक्षयवट और मंगलागौरी के बीच मानी जाती है। आदि गदाधर हेती नामक दैत्य के संहार के बाद भगवान गदा लेकर शिलाखण्ड पर सवार हो गये और आदि गदाधर कहलायें।

अक्षयवट :- विष्णु पद मंदिर से दक्षिण-पश्चिम के रास्ते पर स्थित 'अक्षयवट' अक्षयफल देनेवाला है। सीढ़ियों से चढ़कर अक्षयवट वृक्ष का दर्शन कर पिण्ड दान करने का विधान है।

प्रमुख वेदी स्थल विष्णुपद है। कहा जाता है कि इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने अनुमानतः 1766 ई० में इस स्थल पर मंदिर का निर्माण कराया था। दुर्भाग्य की बात है कि इतने प्राचीनतम सांस्कृतिक धरोहर आज लुप्त होता जा रहा है। कुछ वेदी स्थल तो बिल्कुल ही छोड़ दिये गये या लोगों ने उन्हें भूला दिया है। अभी सामान्यतः ऐसा देखा जा रहा है कि तीर्थ-यात्रियों के लिए गया-श्राद्ध का वस्तुतः यही अर्थ रह गया है कि वह फल्गु नदी, विष्णुपद और अक्षयवट में पिण्डदान कर अपनी यात्रा समाप्त कर ले।

गया की लुप्त होती वेदियों के पीछे बहुत सारे महत्त्वपूर्ण कारण हैं। शिक्षाविद् और शोधकर्त्ता डॉ० ललिता प्रसाद विद्यार्थी ने अपनी पुस्तक उत्तर भारत का एक सांस्कृतिक नगर, गया में इसका विशद वर्णन किया है। उनका मानना है कि विष्णुपद मंदिर का बहुत सुन्दर कलात्मक स्वरूप होने के कारण अन्य वेदियों पर श्राद्धलुओं का ध्यान नहीं जा पाता और वह उपेक्षित हो गई। दूसरा कारण गयावाल 'पुरोहितों' का एक जगह सामूहिक पुर्नवास भी माना जाता है। एक स्थान पर रहने के कारण वे अन्य जगहों पर जाने में आनाकानी करते हैं। लुप्त होती वेदियों में अगर जनता जनार्दन को दोषी ठहराते हैं तो गयावाल पंडों की आर्थिक स्थिति भी उतना ही जिम्मेदार है। आज गयावाल पंडा अपने मूल पूरोहित्य में अच्छी कमाई न देखकर कुछ अलग मुड़ रहे हैं। कुछ वेदियों को अधिक दूरी होने के कारण भी वे उदासीनता का कारण बनीं। मुख्य रूप से गया वाल पंडे ही इसके जिम्मेवार है। अगर वे श्रद्धा भक्ति भाव से वेदियों के पास यात्रियों को ले जाते, तो यात्री वहाँ अवश्य जाते, और वे वेदियों आज जीवित रूप में मिलतीं। समय और परिस्थिति के अनुसार आज की जिंदगी बहुत भाग दौड़ की जिंदगी हो गई है। इस परिस्थिति में समयाभाव के कारण हर काम को संक्षेप रूप में ही करना सभी लोग चाहते हैं। इन्हीं सब कारणों के कारण यहाँ की अधिकांश वेदियाँ लुप्त होती जा रही हैं।

प्रधानाचार्य-सह-विभागाध्यक्ष, पालि विभाग
लालधारी मेमोरियल इवनिंग कॉलेज, गया

कथं मुक्तिर्भविष्यति ?

डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी

भारत ने अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर अद्वैत को छुआ है; जिसे कुछ ही अन्य धर्म छू पाए हैं। अद्वैत इस सम्पूर्ण सृष्टि को ईश्वर की कृति नहीं, अभिव्यक्ति मानता है। सृष्टि में ईश्वर को नहीं मानकर सृष्टि को ही ईश्वर मानता है।

''सिया राम मय सब जग जानी
करऊँ प्रनाम जोरी युग पानी''

जड़ और चेतन तक में भिन्नता नहीं है। प्रकृति एवं पुरुष दोनों एक ही तत्त्व हैं। मनीषियों-ऋषियों के प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर सुनिश्चित किया गया मंत्र ईशावास्यम् इदम् सर्व निष्कर्ष है, निस्पति है और परम सत्य है।

अध्यात्म जगत की तीन निष्ठाएँ हैं। ज्ञान, कर्म और भक्ति! व्यक्तित्व भी दो प्रकार के हैं - अन्तर्मुखी एवं बहि र्मुखी। अन्तर्मुखी साधक ध्यान की साधना करते हैं, जहाँ ज्ञान एवं बोध है। इसके लिए विद्वान, प्रज्ञावान प्रखर बुद्धि एवं चेतना आवश्यक है। इसकी क्रिया अक्रिया है। ज्ञान मात्र यही कि मैं शरीर मन आदि कुछ भी नहीं हूँ। बल्कि शुद्ध चैतन्य आत्मा हूँ। इस विचार, ज्ञान या भाव के धारण मात्र करने से सारी भ्रांतियाँ मिट जायेंगी और यही मोक्ष है। गीता का अर्जुन कर्मयोगी है, क्षत्रिय है, युद्ध के मैदान में खड़ा है। आततार्इयों का विनाश करना इस समय उसका धर्म है और युद्ध से पलापन कायरता। अपने कर्म को सच्चाई, ईमानदारी, पूर्ण-निष्ठा एवं लगन से करने वाला स्वर्ग का अधिकारी होता है। लेकिन इसी काम को निष्ठा भाव से लोक-हिताय ईश्वर की आज्ञा समझ कर समर्पण भाव से किया जाए तो ये कर्म बन्धन नहीं बनते और यही मुक्ति है। भारतीय अध्यात्म स्वर्ग और नरक को मन की भूमिका मानता है। मृत्यु के बाद एवं पुनर्जन्म से पूर्व जीवात्मा अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग-नरक की अनुभूति करती है। इस अन्तराल समय को वैज्ञानिकों ने भी Dream Period माना है। इस अवस्था में जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर में अपने मन एवं वासनाओं के साथ विद्यमान रहकर अपनी वासनाओं की पूर्ति हेतु नया शरीर धारण करती है। इस अवस्था में न तो उसका विकास ही होता है, न ही वह अपनी वासना पूर्त्ति कर सकती है। क्योंकि दोनों कार्य के लिए भौतिक शरीर आवश्यक है जिसका अभाव होता है।

विषयों के प्रति आसक्ति ही ''पुनरऽपि जननम् पुनरऽ मरणम्! पुनरुपि जननि जठरे शयनम्'' का कारण बनती है। सम्पूर्ण भोगों एवं वासनाओं से विरक्ति ही स्वतंत्र आत्मानुभव है, जिसे मुक्ति कहा जाता है। यानि जन्म-मरण से मुक्ति, कष्टों से मुक्ति, और इसके लिए वैराग्य प्रथम और अन्तिम सोपान है।

जानिअ तबहि जीव जब जागा।
जब सब विषय-विलास-विरागा।। - मानस

इस सम्बन्ध में महाराज जनक का प्रसंग उल्लेखनीय है। जनक वैरागी थे और बारह वर्षीय आत्म ज्ञानी परन्तु आठों अंगों से वक्र अष्टावक्र के शिष्य थे। कहा जाता है कि राजा जनक ने इस आत्म-ज्ञान पर विद्वानों की एक सभा बुलाई थी, जिसमें सुविख्यात पंडित एवं विद्वान मनीषी पधारे थे। चर्चा में कोई ऐसा निर्णय नहीं हो पा रहा था जिससे महाराज जनक संतुष्ट हों। उस सभा में अष्टावक्र जी के पिता जी भी पधारे थे। परन्तु सभा-सदों के विचार पारित नहीं होने के कारण वे हारे हुए माने जा रहे थे। शाम हो जाने के कारण सभा का अति काल हो रहा था। सभा विसर्जित होने को ही

थी कि हठात् अष्टावक्र का प्रवेश हो गया। अष्टावक्र को देखकर सभी पंडित हँसने लगे। थोड़ी देर बाद अष्टावक्र भी हँसने लगे। सभा में हँसना मना है, यह मूर्खों के लक्षण हैं और यह सभा पंडितों की थी। राजा जनक ने सभा को सम्बोधित करते हुए अष्टावक्र से प्रश्न किया। इन पंडितों को हँसने का कारण तो समझ में आ गया। परन्तु तुम्हारे हँसने के कारण मैं नहीं समझ सका। अष्टावक्र ने उत्तर दिया – यह सभा पंडितों की नहीं, चर्मकारों एवं मूर्खों की है और इस सभा में ज्ञान और आत्मा विषय के प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ रहे हैं, यह कैसी विद्वत्ता है? क्या यह हँसी नहीं है? इन लोगों ने मेरे शरीर के चमड़े और हड्डियाँ देखी जो चर्मकार ही देखते हैं। पंडित और विद्वान तो आत्मज्ञान देखते हैं। राजा जनक उस बारह वर्षीय टेढ़े-मेढ़े अष्टावक्र के चरणों में गिर पड़े और उनको शिष्यत्त्व ग्रहण किया। समर्पण भाव आते ही जनक का अहंकार खो गया और वे शून्य होकर सूक्ष्म में प्रविष्ट हो गए। महाराज जनक को आत्म ज्ञान मिल गया। आत्म-ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है बाकी सब जानकारी है, सूचनाएँ हैं जो बाहर से प्राप्त होती हैं। इसी व्यष्टि चेतन को आत्मा तथा समष्टि चेतन को ब्रह्म कहा गया है। ''यस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञति भवति'' इसलिए एक को ही जानना श्रेयष्कर है। ज्ञान की प्राप्ति हेतु अष्टावक्र जनक को वैराग्य की अनिवार्यता बताते हैं। जो भी इन्द्रीय सुख हैं वे अनित्य हैं। शरीर की रचना पाँच भौतिक तत्वों से हुई है। क्षिति जल पावक गगन समीरा।

पंच रचित यह अधम सरीरा।।

आत्मा के अनुशासन समाप्त होते ही ये सभी भौतिक तत्त्व अपने-अपने संसाधनों में विलीन हो जाते हैं। सिर्फ आत्मा अपनी आगे की यात्रा पर निकल जाती है।

श्री राम प्रभु बाली को तारणोपरांत वियोगिनी तारा को उपदेश देते हैं :-

सो सरीर तव आगे सीवा।
जीव नित्य तुम्ह केहि लगि रोवा।। - मानस

अर्जुन को महासमर में श्री कृष्ण भी यही समझाते हैं

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय।
नवानि गृह ति न रोऽपरानि।।
तथा शरीरानि विहाय जीर्णो -
नन्यानि संयाति परानि देही।। -गीता

अत: मिथिला नरेश के भ्रम को समनार्थ उठे ***प्रश्न कथं मुक्ति भविष्यति के समाधानार्थ अष्टावक्र ने स्पष्ट कहा था यदि देहं पृथकृत्य चित्ति विश्राम्य तिष्ठति अधुनैव सुखी शान्त: बन्धमुक्तों भविष्यति। -अष्टावक्र गीता***

आत्म ज्ञान की प्राप्ति हो जिससे साँप और रस्सी का भ्रम मिट जाए, देह और देही का अंतर समझ में आ जाए जिससे स्थूल शरीर के सुखों का त्याग हो और आत्मा की चेतनता का आभास हो, तो जीव आज और अभी सुखी, शान्त और मुक्त हो जाएगा। यही निर्विकल्प समाधि है, और यही मुक्ति है। ***''मिटइ मल कि मलहिं के धोए।।''- मानस***

अन्य क्रियाएँ स्थूल मात्र सिद्ध होती हैं। सभी अवस्था सत्य और नित्य नहीं हैं, वे भ्रांति मात्र हैं। भ्रांति से भ्रांति दूर नहीं हो सकती। अत: यहाँ मुक्ति के लिए कोई क्रिया काम नहीं आ सकती।

आवश्यकता है वासना पैदा करने वाले अहंकार से दूर होने की परन्तु शरीर है तो वसनापूर्त्ति होगी ही योग का केन्द्र शरीर है। अत: शरीर से योगबल द्वारा अलग होकर आत्मा की अनुभूति हो तब वासनाएँ संस्कार, कर्मफल एवं कर्मभोग कभी बाधक नहीं हो सकते। अज्ञान रूपि हृदय। ग्रन्थी का नाश ही मोक्ष है।

आनन्द विहार कुंज, माड़नपुर, गया
मो०-9430837615
ई-मेल : skpremi1@gmail.com

तर्पण और पिण्डदान का वैज्ञानिक महत्त्व

श्री राम नरेश सिंह 'पयोद'

तर्पण और पिण्डदान का सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। जो गीता के अनुसर ''नाश रहित अचित्य, अविकार्य अच्छेध्य अदाह्य, अकलेहा, अशोष्य, अज, नित्य शाश्वत पुराण सर्वगत, स्थान, अचल और सनातन कही गई है। आत्मा के स्वरूप में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता। जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म होने से शरीर के एक भाग हृदय में रहती है। उसका केवल ज्ञान सम्पूर्ण शरीर में फैला हुआ है। उस ज्ञान द्वारा शरीर में आत्मा की व्यापकता हे। आत्मा का जन्म ही होता, इसलिए इसे आज कहा गया है। पूर्व शरीर को त्याग देना मृत्यु और नए शरीर में प्रवेश करना जन्म कहलाता है। इससे आत्मा में जन्म मृत्यु का व्यवहार जाना जाता है।

शास्त्र में कहा गया है कि जीवात्मा न देव है, न मनुष्य है, न तिर्यक और न स्थावर। ये सब भेद शरीर के कारण हैं। वस्तुत: आत्मा ज्ञानान्दमय तथा परमात्मा का सेवक है।

इस तरह गीता के अनुसार जब हम आत्मा को अजर-अमर और सर्वत्रव्याप्त पीतें हैं, तो फिर उसे पास बुलाकर उसका पूजन और वन्दन अभिनन्दन क्यों नहीं कर सकते। इसके आवाहन के लिए तो सालो भर के दिन एवं तिथियाँ पड़ी हैं, परन्तु आश्विन मास की प्रतिपदा से अमावस्या तक के पन्द्रह दिनों की तिथियाँ विशेष उपयुक्त मानी गई हैं, जिन्हें पितृपक्ष के नाम से वेदों और पुराणों में पुकारा गया है तथा कहा गया है कि पितृपक्ष में सभी आत्मायें गया के फल्गु नदी के विष्णुपद क्षेत्र में आकर निवास करती हैं, और अपने-अपने कुल के लोगों से तर्पण और पिण्ड की अपेक्षा करती हैं। जिसकी पूर्त्ति के लिए देश-विदेश के हिन्दू यहाँ इकट्ठे हो अपने-अपने पितरों के नाम लेकर उनका आहवान कर उन्हें तर्पण और पिण्डदान कर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करते हैं। लेकिन यह आहवान विधि-विधान के साथ और शुद्ध मंत्रोच्चारण के साथ होने पर ही फलित होता है, और उनके पूर्वजों की आत्मायें उनके पास आकर उनका तर्पण और पिण्डदान प्राप्त कर पाती हैं।

वेद शास्त्र और कर्मकाण्डों अनमिज्ञ लोग हमारे शास्त्रीय मंत्रों को अवैज्ञानिक और महत्त्वहीन मानकर इनका मजाक उड़ाया करते हैं, जो काफी दुखद हैं, क्योंकि प्रत्यक्ष में हम आज भी मन्त्र के द्वारा साँप-बिच्छुओं और जहरीले जीव-जन्तुओं के विषों का शरीर में प्रवेश होने पर मन्त्रों के द्वारा उनके असर को प्रभाव हीन बनाकर नि:शुल्क मनुष्य को पूर्ववत् कैसे बना देते हैं? जिसका वर्णन ''मन्त्र'' नामक कहानी में प्रेम चंद ने बड़े ही रोचक और प्रभावकारी ढंग से किया है। जब एक डॉक्टर का बेटा साँप के विष से दवा के बाद भी मरना सन्न है, वैसी हालत में उसे एक देहानी, अपढ़ मन्त्र साधक अपने मन्त्र से उसे जीवित कर विज्ञान की चुनौती को स्वीकार कर मन्त्र-विज्ञान का झंडा फहराता है।

मन्त्र को विज्ञान कहा गया है। इसका अर्थ बड़ा ही व्यापक और गम्भीर है, क्योंकि इसे भी सही मन्त्रोच्चारण के साथ और कड़े नियमों के साथ कुछ देवी-देवताओं को साक्षी मानकर शुभ मुहूर्त में सिद्ध करना पड़ता है तथा दैनिक जीवन में भी उन्हें कुछ कड़े नियमों का भी जीवन-पर्यन्त पालन करना पड़ता है, तभी उनके मन्त्र सार्थक और फल-दायक होते हैं। परन्तु दु:खद पहलू यह है कि आज के वैज्ञानिक युग में चन्द्रलोक की कल्पना वाले लोग इसे कारागप्प समझते हैं तथा ऐसे मन्त्र साधकों की संख्या भी आज नगण्य हो गई है। परन्तु कहीं-कहीं पक्के मन्त्र साधकों के सामने इन्हें दाँत तले उंगली दबानी पड़ती है।

मन्त्र के शब्दों में एक विशेष प्रकार की ध्वनि तरंगे होती हैं, जैसा कि सर्व सिद्ध ओ३म में सम्मानित हैं। जिनके सही उच्चारण करने पर हमारे शरीर की ध्वनि तरंगे बाहर निकलकर आहवान करने वाली आत्मा तक जा पहुँचती हैं, और उसे हमारे पास लाकर हमारा अभिष्ट पूरा करती हैं। इसे पूरी तरह समझने के लिए हमें ''ध्वनि-विज्ञान'' का विशेष अध्ययन करना होगा, जिनके आधार पर आज हम रेडियो, टी०वी०, मोबाईल एवं अन्य इन्टरनेट सेवाओं का रोज उपयोग कर आश्चर्यजनक फल का अपने जीवन को नित्य सुविधा परक बना रहे हैं और नई-नई खोजें कर रहे हैं।

हाल के अखबारों में इस बात की चर्चा की गई है कि आज से कई हजार वर्ष पूर्व द्वापर काल में कुरूक्षेत्र के मैदान में अर्जुन के मोहभंग के लिए भगवान श्री कृष्ण द्वारा जो गीता के उपदेश दिए गए हैं, वे आज भी दुनियाँ के वायुमण्डल में गूँज रहे हैं, जिन्हें पकड़ने के लिए दुनियाँ के कुछ वैज्ञानिक प्रयासरत हैं, परन्तु इसमें उन्हें एक दिन सफलता मिल जाय, और हम भगवान के गीता के श्लोकों को उन्हीं के वाक्यों में टी०वी० और रेडियो में सुन सकते हैं उसमें आश्चर्य नहीं।

मन्त्रों की वैज्ञानिक सत्यता को हम छठ-पर्व के मौके पर दिए गए भगवान भास्कर के अर्ध्य से भी समझ सकते हैं। जब कार्तिक शुक्ल-पक्ष में चतुर्थी तिथि से सप्तमी तिथि की सुबह तक सूर्य की किरणों से एक विशेष प्रकार की रोग निरोधक उर्जा कुछ समय तक निकल कर ब्रतियों के शरीर में प्रवेश कर उन्हें तरो ताजा और रोग मुक्त कर उनका कल्याण करती है। इसकी भी सत्यता की जाँच में बहुत लोग लगे हुए हैं। परन्तु आज तक पूर्ण रूप से वे इस रहस्य को जानने में सफल न हो पाए हैं।

अन्त में निष्कर्ष स्वरूप हम डंके की चोट पर यह कह सकते हैं कि मन्त्रों और श्लोकों में वे आश्चर्य जनक वैज्ञानिक तत्व छिपे हैं, जिनके आश्चर्य जनक परिणाम हमें रोज-रोज देखने को मिल रहे हैं, और इन्हीं के आधार पर पितृपक्ष में गया फल्गु नदी के विष्णुपद क्षेत्र में आने वाले प्रति वर्ष लाखों हिन्दू भाई-बहन तर्पण और पिण्डदान कर अपने-अपने पितरों को संतुष्ट कर जय-जय कार करते-करते अपने घर वापस लौटते हैं तथा हिन्दू-धर्म की जय-पता-का फहराने में अपना अमूल्य योगदान देते हैं, इसमें जरा भी शक की गुंजाईश नहीं है, और न कभी रहेगी।

'पयोद निकेतन', डालमिया कम्पाउन्ड
लखीबाग रोड नं०-1, गया
चलभाष-7033669695

✦

नचलति निजवर्ण धर्म तो यः सममतिरात्म सुहदिपक्षपक्षे
नहरति नच हन्ति किञ्चदुच्चैःसितयवंस तयवेहि विष्णु भक्तम्

विष्णु पुराण - 3/7/20

जो पुरूष अपने वर्णधर्म से विचलित नहीं होता, अपने सुदृढ़ और विपक्षियों में समान भाव रखता है, किसी का धन हरण नहीं करता; न किसी जीव को मारता ही है, उस अत्यन्त रागादि शून्य और निर्मल मन व्यक्ति को विष्णु का भक्त जाना।

पितरों का सम्मान ही पिण्डदान है

- श्री मुद्रिका सिंह

भगवान विष्णु और बुद्ध की पावन नगरी गया जी आदिकाल से साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। लौकिक और पारलौकिक शक्तियों के प्रति निष्ठा, समर्पण और विश्वास इसकी मूल अवधारणा रही है। जय और विजय में निहित मंगल-कामना प्रारम्भ से ही लोगों के मानस-पल पर अपना प्रभाव डालती रही है। कहा गया है *''यतो धर्मः ततो जयः''* अर्थात् धर्म से विभूषित जय-विजय ही कल्याणकारी होती है। हमारे धर्मग्रन्थों में धर्म के दस लक्षण बतलाए गए हैं।

धृति क्षमा दमोस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह।
द्यीः विद्या सव्यम क्रोधः दशकम् धर्मलक्षणम्।।

अस्तु! धर्म की परिकल्पना में मानव-जीवन को विभिन्न आपदाओं से निवारण हेतु रास्ते सुझाए गए हैं। जिसके केन्द्र में सेवा, त्याग, परोपकार, विनयशीलता, करुणा, ममता, दया इत्यादि गुणों को पिरोया गया है। ये सभी न केवल लौकिक जीवन के लिए अनुकरणीय हैं, बल्कि इनका सम्बन्ध पारलौकिक जीवन से भी है। हमारी धार्मिक अवधारणा को विस्तृत फलक प्रदान किया गया है।

यथार्थतः मानव जीवन क्या है? यह प्रश्न आज भी अबूझ पहेली बना हुआ है। समय-समय पर इसे विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से पारिभाषित करने की चेष्टा की है, फिर भी कहीं-न-कहीं उनकी लेखनी मूक नजर आती है। इस पूरे विश्व के नियंता का सही आकलन और खोज इस वैज्ञानिक पृष्ठ-भूमि में भी उपलब्ध नहीं हो सका है। ऐसी स्थिति में अपने और अपने पूर्वजों की याद ही एक मात्र हमारा संबल है जो भावी जीवन को पथ प्रदर्शित करता हुआ दिखायी पड़ता है। जब तक मनुष्य जीता है, अहं भावना से ग्रसित होता है। परन्तु नश्वर काया के अन्त होते ही उसके सारे क्रिया-कलाप क्षितिज में विलीन हो जाते हैं। उनके कार्य की समीक्षा करना हमारे बस की बात नहीं होती। तब उनके स्मरण के लिए हमारे पास एक ही मार्ग बच जाता है, उनके प्रतिश्रद्धा, समर्पण, विश्वास, अर्पण इत्यादि। गया का पितृपक्ष मेला इस अवधारणा को लेकर हर वर्ष आगे आता है। जहाँ देश-विदेश के लाखों लोग अपने पूर्वजों की याद में पिण्डदान करते हैं। कहा गया है।

'अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोप सेविनः
चत्वारी तस्य वृर्द्धन्ते आयु विद्या यशोधनम्।'

स्पष्ट है कि हम आयु विद्या यश और धन की कामना से प्रेरित होकर वृद्धों की सेवा की ओर अग्रसर होते हैं। यह तो सार्वभौम सत्य है कि इस धरा पर हमें मूर्त्त रूप में लाने का एक मात्र अधिकारी माता और पिता हैं। गुरु हमें जन्म-जात शत्रुओं काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ से बचाते हुए जीवन जीने के लिए ज्ञान और हुनर प्रदान करते हैं। अज्ञानता के अन्धकार से बाहर निकालकर पूरे विश्व से परिचय करवाते हैं। फलतः वे भी पूज्य एवं वंदनीय हैं। इस प्रसंग में हमें यही कहना है कि त्रिदेव ही हमारे सब कुछ होते हैं। अतः जिस पर हमारा जीवन आधारित होता है, उनके प्रति हमारा उत्तरदायित्व बोध निश्चित रूप से बढ़ जाता है। यही कारण है कि हम इस जन्म में तो उन्हें हर विध्न और बाधा से बचाने का प्रयास यथा-शक्ति करते ही हैं, उनके देहावसान के बाद भी हमें उनकी जरूरतों की चिन्ता, मन को कुरेदती रहती है। यही अवधारणा जब बलवती होकर श्रद्धा के रूप में प्रकट होती है, तब हम उन्हें श्राद्ध-पिण्ड विधान के अन्तर्गत याद करते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि पूर्वजों की मुक्ति हेतु पिण्डदान के विधान के लिए गया जी को ही सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है। इसके कई प्रमुख कारण हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि गया मोक्षतीर्थ स्थल के रूप में मान्य है। विष्णु धर्मसूत्र केमतानुसार विष्णु का पद गया में ही अवस्थित है। फलतः यह श्राद्ध कर्म के लिए सबसे पवित्र स्थल है। गया में पवित्र फल्गु नाम की नदी बहती है। जिसका जल पुण्यप्रद है। यह सर्वाथ कार्य साधक है। यहाँ अक्षयवट (बरगद का पेड़) है जहाँ पर पितरों को दिया गया अन्न अक्षय होता है, जिसका उपयोग वे कभी भी कर सकते हैं। पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ और समुद्र हैं सभी दिन में एक बार गया जी आकर फल्गु तीर्थ का दर्शन करते हैं। यहाँ पर गया सिर की उत्तम वेदी है। प्राचीन धर्म ग्रंथों में अनेक पुत्रों की कामना इसलिए की गई है कि उनमें से यदि कोई एक पुत्र भी गया श्राद्ध पूरा करता है तो पहले एवं बाद के पितरों की मुक्ति हो जाती है।

वैसे तो गया में पिण्ड-विधान के लिए सभी समय को दोष-मुक्त माना गया है। फिर भी कहा गया है कि मीन राशि के सूर्य के समय, चैत्र मास के मेष राशि का सूर्य, कन्या राशि का सूर्य धनु राशि के सूर्य तथा कुम्भ राशि के सूर्य जब हों तब गया में पिण्डदान सर्वोत्तम होता है। ऐसा मुनियों का मत है। संक्रमणकाल तथा चन्द्र और सूर्यग्रहण काल में गया में श्राद्ध करना अति उत्तम है। फिर भी किसी भी समय में यहाँ श्राद्ध करना वर्जित नहीं है। पितरों को मुक्ति दिलाने वाला गया तीर्थ सभी तीर्थों में श्रेयस्कर है। यहाँ का पिण्ड पितरों को परम गति प्रदान करता है, कहा गया है कि अनिष्ट की आशंका से ग्रसित पितर पितृपक्ष में गया आकर अपने पुत्रों की प्रतीक्षा करते है। ताकि कोई पुत्र आकर उन्हें तर्पण (जल) दे दे और उन्हें मुक्ति मिल जाय।

गया में अलग-अलग वेदियों पर अलग-अलग पिण्ड अर्पित करने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है। यथा गदाधर का पिण्डदान ब्रह्मलोक की प्राप्ति करवाता है। धर्मशिला का पिण्डदान भगवान विष्णु का दर्शन करवाता है। प्रेतशिला पर पिण्डदान से प्रेत-योनि से मुक्ति मिलती है।

इसी प्रकार गया में अलग-अलग वेदियों पर किया गया पिण्डदान भी अनेक प्रकार से मुक्ति द्वार खोलता है। यदि पुत्र नहीं हो तो पत्नी, यदि पत्नी नहीं हो तो उसका भाई भी पिण्डदान कर सकता है। क्योंकि कहा गया 'पुत्र भावे पत्नी स्थात् पत्नी अभावे सहोदरः।' यदि माँ मर गई हो और पिता जीवित हैं तो पिण्ड केवल माँ के लिए, यदि माँ जीवित हो पिता मर गए हों तो पिण्ड केवल पिता के लिए समर्पित करना चाहिए। गया में पिण्डदान विधान हेतु खीर, भात, आटा, चावल अथवा फल आदि का विधान है।

भारत-वर्ष में सनातन धर्मावलंबियों की संख्या सबसे ज्यादा है। यहाँ पितृ-पूजन की प्रथा का प्रचलन बहुत पुराना है। कहा जाता है कि पिण्डों से पितृजन प्रसन्न होकर अपने अनुगामी वंशधर को पुण्य आर्शीवाद देते हैं। जिससे आने वाला उनका समय सरल, सुखद और आनन्दमय होता है।

मनु ने श्राद्ध को पाँच वर्गों में विभक्त किया है। संतति अपनी इच्छानुसार इनमें से कोई एक चयन कर अपने पितरों को बंधन-मुक्त कर सकती है। पुत्र का पावन कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने माता-पिता एवं पितरों की खुशहाली के लिए पितृपक्ष में तर्पण करें। मनु के अनुसार श्राद्ध के पाँच प्रकार नीचे अंकित है :-

'नित्यं नैमित्तकं काम्यं बुद्धि श्राद्ध तथैव च।

पार्वण ज्याति मनुना श्राद्धं पज्यविध स्मृतम।।'

गौतम बुद्ध कॉलोनी
बड़की डेल्हा, पो०-आर.एस. गया
सम्पर्क : 9431207620

पितृतीर्थ गया की पुरातन संस्कृति से आत्माभिमान एवं गौरव की वृद्धि होती है

– प्रो० महेश कुमार शरण

किसी भी देश अथवा जाति का प्राण उसका गौरवपूर्ण इतिहास होता है। कल, आज और कल एक ही समय प्रवाह के अविभाज्य अंग हैं। बीता हुआ कल जिसे हम भूतकाल कहते हैं, वर्तमान काल आज में सूक्ष्म रूप में निहित रहता है तथा आने वाला कल भविष्य को प्रभावित करता है। इसीलिए इतिहास की प्रासंगिकता है।

महाभारत सरकार ने इतिहास के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा :-

वृतं यत्नेन संरक्षेत वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्तत: क्षीण: वृत्ततस्तु हत:।।

अर्थात् इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हानि होने पर कोई नष्ट नहीं होता पर इतिहास और अपना प्राचीन गौरव खो देने पर विनाश निश्चित है।

भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास में नगरों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। साथ ही इस महत्त्व को अक्षुण्ण बनाने के लिए हमारे मनीषियों ने इन नगरों के साथ धार्मिक महत्त्व भी जोड़ दिया ताकि अपने महत्त्व को चिरस्थायी रख सके। इस कारण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गया का महत्त्व प्राचीन काल से मोक्षनगरी के रूप में प्रसिद्ध है।

गया में पितरों के लिए नारकीय यातनाओं से मुक्त कराने के लिए श्रद्धापूर्वक पिण्डदान की परम्परा इसी कड़ी में और इसी कारण गया को पितृतीर्थ के रूप में परिभाषित किया है। गया हिन्दुओं की मोक्ष भूमि मानी जाती है क्योंकि अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिए प्राय: हर हिन्दू गया आकर पितृपक्ष के अवसर पर उन्हें पिण्ड देकर नरक की यातनाओं से मुक्त कराते हैं। गयाजी स्थित पिण्डदान हेतु कुल 382 पिण्डवेदियों में से अब केवल 50-55 वेदियों का बचा रहना इस बात का प्रमाण है कि सामान्य जन धर्मस्थलों को भी अपने निजी स्वार्थ के लिए नहीं छोड़ते हैं।

गया वह पुण्य विष्णु तीर्थ है जहाँ प्राचीन काल से अब तक हिन्दू यहाँ आकर श्रद्धापूर्वक अपने पितरों की मुक्ति हेतु श्राद्ध करते हैं। प्रागैतिहासिक काल में मगध का यह नगर व्रात्यों की नगरी कीकट और कालान्तर में गयाजी, अन्दरगया, ब्रह्मगया, विष्णुनगरी, विष्णुधाम, ब्रह्मगंगा, ब्रह्मपुरी और बिहार जिला है। मत्स्यपुराण में ऐसा कहा गया है कि गया नामक पितृतीर्थ सभी तीर्थों में श्रेष्ठ एवं मंगलदायक है, वहाँ देव देवेश्वर भगवान पितामह स्वयं ही विराजमान हैं। वहाँ श्राद्ध में भाग पाने की कामना वाले पितरों द्वारा यह गाथा गायी गई है - ''मनुष्यों को अनेक पुत्रों की अभिलाषा करनी चाहिए क्योंकि उनमें से यदि एक भी पुत्र गया की यात्रा करेगा अथवा अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान कर देगा या नील वृष (सांड़) का उत्सर्ग कर देगा तो हमारा उद्धार हो जाएगा।

गया धाम के पग-पग पर तीर्थ हैं तथा यह श्रेष्ठ तीर्थ के नाम से भी सम्बोधित होता है क्योंकि एक ही स्थान पर सभी तीर्थों के समवेत रहने से इस गया नगर को श्रेष्ठ तीर्थ कहा जाने लगा।

इस स्थान की पवित्रता को देखते हुए लोग गयाजी कहकर सम्बोधित करते हैं। यहाँ तीर्थ यात्रियों के आगमन की परम्परा बहुत पुरानी है। पितृपक्ष के अवसर पर देश के ही नहीं वरन् नेपाल, मॉरीशस, बर्मा, भूटान, तिब्बत, सूरीनाम, बंगलादेश, पाकिस्तान आदि देशों में रहने वाले हिन्दू लोग भी गया आकर अपने पूर्वजों के लिए पिण्डदान कर उन्हें नरक की यातनाओं से उद्धार मुक्त कराते हैं तथा एक सबसे महत्वूपर्ण पिण्डवेदी वैतरणी में जाकर गयावाल पण्डों का आशीर्वाद प्राप्त कर कुल खानदान के मृत आत्माओं को वैतरणी प्राप्त करवाते हैं। अत: इस अवधि में लाखों श्रद्धालु कश्मीर से कन्या कुमारी तथा काठियावाड़ से कामरूप तक के इस नगर में पधारते हैं और अपने पूर्वजों की आत्मा की शान्ति के लिए पितर पूजा एवं श्राद्धकर्म निष्ठापूर्वक सम्पादित करते हैं। ये श्रद्धालु अपनी वेशभूषा, भाषा, रहन-सहन तथा समस्त आचार विचारों के साथ गया आते हैं और इस नगर की

जीवन-शैली के साथ इनका स्वभावत: आदान-प्रदान होता है। इस प्रकार गया में एक वृहत्तर सारस्वत परम्परा का निर्माण होता है। जिसके अन्तर्गत अनेकता में एकता के यथार्थ भारतीय रूप का सहज दर्शन परिलक्षित होता है। ज्ञान, विज्ञान, धर्म, शिक्षा, संस्कृति और मोक्ष की नगरी के अतिरिक्त गया काल, संगीत, व्यापार और वैभव की नगरी प्राचीन काल से है। नगर की प्राकृतिक छटा, कूप, नापी, तडाग, उद्यान यहाँ की स्मृद्धि के द्योतक हैं।

पुराणों के अनुसार गया की कथा गयासुर से जुड़ी है। असुर होकर भी गयासुर का समस्त जीवन लोकमंगल और मानव कल्याण के उद्देश्य से प्रेरित था। देवताओं के आग्रह पर पराक्रमी राजा गयासुर का बध करने के लिए भगवान विष्णु स्वयं देवलोक से गयाजी आकर नाटकीय ढंग से गयासुर का बध किया। मृत्यु के समय भी उसने भगवान विष्णु से प्रार्थना की और कहा कि यदि आप वरदान ही देना चाहते हैं तो पाँच कोस के इस क्षेत्र को गयातीर्थ की संज्ञा दी जाय और सभी देव देवता यहाँ विराजमान होकर लोक कल्याण करें। इसी क्रम में श्री विष्णु के चरण-चिन्ह एक शिलाखण्ड पर अंकित हो गए। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि गयाजी में भगवान विष्णु ने अपनी अमिट छाप छोड़ गए और भगवान विष्णु के नाम पर गयाजी विष्णु नगरी के नाम से प्रचलित हो गया। देवलोक से भगवान विष्णु मृत्यु लोक गयाजी क्या आये, गयाजी के ही होकर रह गए और आज गदाधर रूप में विद्यमान हैं।

पितरों का उद्धार करने वाली अन्त: सलिला फल्गु यहाँ है जिसकी महिमा का वर्णन वायु पुराण में किया गया है। फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर अवस्थित विष्णुपद मन्दिर प्रत्येक सनातन धर्मावलंबियों के लिए एक पवित्र तीर्थ है। मन्दिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु के चरण चिह्न अंकित है। इस स्थान को सभी दृष्टियों से परम पवित्र माना गया है। गया में श्राद्ध कर्म तथा पिण्डदान का जो विधान है। उसके लिए विष्णुपद का यह स्थान एक मुख्य वेदी के रूप में प्रतिष्ठित है। यह मन्दिर काले ग्रेनाइट पत्थरों को तराश कर बनाया गया है। इन्दौर की महारानी आहिल्या बाई होलकर ने अपने शासन काल में सन् 1787 ई० के आस-पास बनवाया था और इसके शिल्वी जयपुर (राजस्थान) से बुलाये गये थे। मुख्य मन्दिर एक खुला मण्डप है जो 88 वर्गफुट में है पर बाहरी फर्श तक का मन्दिर मण्डप 82 ½ फुट लम्बा है। मण्डप की छत आठ कतारों में खड़े प्रस्तर स्तम्भों पर टिकी हुई है। इसकी गुम्बज एवं पहाड़ी गुफा की आकृति में आठ पहल वाली है। भूमि की सतह से गुम्बज तक की ऊँचाई 100 फुट है। मन्दिर 12 वर्षों में पूरा बन सका। इस विष्णुपद मन्दिर की वास्तुकला दक्षिण भारत के कांजीवरम् मन्दिर की बनावट के समान हैं। मन्दिर मण्डप तथा इसके प्रांगण की देव मूर्त्तियों से भरे इस स्थान में एक ऐसा आध्यात्मिक वातावरण तैयार होता है। जिससे किसी व्यक्ति की आत्मा पवित्र हो जाती है। इन मूर्त्तियों में गयेश्वरी, गया कुमारी, जगदम्बा, लक्ष्मी नारायण, दत्तात्रेय, अष्टशक्ति दुर्गा, गदाधर, गयाधर, गया राज, रूद्र, सहस्त्र वेदी, नवग्रह, नरसिंह, फल्गीश्वर, शिव, जरासन्ध कहलाने वाली अष्टादश भुजी देवी आदि की मूर्त्तियाँ बड़ी ही जीवन्त हैं। मन्दिर के द्वार के सामने की गजभूत्ति सूंढ़ में फल-फूल लिये ऐसी खड़ी है। जैसे विष्णु के पद में वह नित्य प्रसाद अर्पण कर रही है। इनके अतिरिक्त भी अनेक प्रस्तर प्रतिभाएँ हैं। मन्दिर के प्रांगण वाले परिसर में फल्गु नदी के तरट तक फैली है जो धर्मारण्य क्षेत्र से लाकर रखी गयी है।

वायु पुराण के 47वें अध्याय में गया के 62 तीर्थों की व्यापक चर्चा है। इस पुराण में गदाधर तीर्थ की जितनी महिमा गायी गई है उतनी विष्णुपद की नहीं जबकि आज सर्वाधिक महत्त्व गया में विष्णुपद का ही है। अक्षयवट, विष्णुपद, विष्णुपद, उत्तरमानस, दक्षिण मानस, काश्यप पद, प्रेतशिला, रामशिला, मंगला गौरी और पितामहेश्वर अत्यन्त ही पूजनीय स्थल हैं। वायु पुराण में ऐसा वर्णन है जब पुत्र गया जाये तो उसे ब्रह्मा द्वारा प्रकल्पित ब्राह्मणों को ही आमन्त्रित करना चाहिए। ये ब्राह्मण साधारण लोगों से ऊँचे होते हैं। जब वे संतुष्ट हो जाते हैं तो देवों के साथ पितर लोग भी संतुष्ट हो जाते हैं, उनके कुल, चरित्र, ज्ञान, तप आदि पर ध्यान नहीं देना चाहिए और जब वे गया के ब्राह्मण गयावाल सम्मानित होते हैं तो यजमान-सम्मान देने वाला संसार से मुक्ति पाता है।

सन् 1857 ई० की सैनिक राज्य क्रान्ति भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की पहली कड़ी के रूप में हम देखते हैं और ब्रिटिश शासकों ने सुरक्षा की दृष्टि से गया का नव निर्माण प्रारंभ कर दिया। गया की पुरानी घनी बस्ती विष्णुपद मन्दिर के चारों ओर पिता महेश्वर तक मुख्यत: गलियों में तथा फल्गु नदी के किनारे पिता महेश्वर से उत्तर की ओर रामशिला पर्वत तक बिखरी हुई थी। चार फाटकों के बीच बसा गया शहर यहाँ के धार्मिक महत्वों को संजोये गया नगर की सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कला की गौरवमयी कहानी बतला रहा है और अपनी प्राचीनता का भी हमें स्मरण करा रही है कि यह शहर विश्व के प्राचीन नगरों में एक है जिसका समृद्धशाली इतिहास सदियों पुराना है तथा जो सृष्टि निर्माण काल से जुड़ा हुआ है। मोक्षधाम गया हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए आस्था का केन्द्र है। सिक्ख, इस्लाम, ईसाई और जैन धर्मावलम्बी भी गया की ओर सहज ही श्रद्धा से देखते हैं। हर संघर्ष और आन्दोलन की जन्मभूमि गया रही है। ज्ञान एवं धर्म के साथ यह क्रांतिकारियों तथा सामाजिक परिवर्त्तनकारियों की प्रिय कर्मभूमि रहा है। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक बिहार को बंगाल से पृथक कर बिहार एवं उड़ीसा के नाम से प्रशासनिक पहचान देते हुए दिनांक 22 मार्च 1912 ई० को सर चार्ल्स स्टुअर्ट बेली ने लेफ्टिनेन्ट गवर्नर का कार्यभार ग्रहण कर 13 अप्रैल 1912 को स्वतंत्र रूप से समिति तथा आन्दोलन का प्रारंभ गया से ही हुआ था जिसमें गया के निवासी स्वर्गीय नन्द किशोर लाल ने गया में ही रहकर इस कार्य के लिए सक्रिय भूमिका निभाई थी और बिहार के पृथक्करण की नींव गया में ही डाली थी।

पुरातत्व एवं ऐतिहासिक धरोहर के रूप में गया की शक्ति मंगलागौरी, कामख्या, संकटा, ढुंगेश्वरी, कौलेश्वरी आदि दर्शनीय पूजा-स्थल अपने आप में सम्प्रदाय विशेष एवं धार्मिक मान्यता के इतिहास के साथ पुरातत्व के महत्त्व को समेटकर पर्यटन क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखते हैं। गया शहर के उत्तरी छोर पर रामशिला पर्वत के पूर्वी भाग में शैवाल गणेश की हरे मूँगे की प्रतिभा अद्वितीय महत्त्व का पर्यटन क्षेत्र है। बेला से 10 किलोमीटर की दूरी पर पूरब की ओर नागार्जुनीय गुफा अपने स्वरूप गठन में अत्यन्त महत्वपूर्ण इतिहास को समेटकर आज भी गया को पर्यटन भूमि में महत्वपूर्ण स्थान दे रहे हैं।

सुरम्य पहाड़ी, मनभावन झरना, बरसाती नाले व विशाल उपव्रत के बीच बसा यह गया नगर देश के प्राचीन समृद्ध शहरों में एक है। देश के जिन क्षेत्रों में धर्म, साहित्य व इतिहास की रचना की गई उसमें प्राचीनकालीन मगध प्रदेश के अन्तर्गत गया का भी स्थान है जिसे आज श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान की अकाट्य नगरी के रूप में प्रतिष्ठा दी गई है। गया की महिमा का छह पुराणों में मिलती है। जिनमें से कुछ को हमने यहाँ लिखा भी है जिनसे यह स्पष्ट होता है कि गया को भगवान विष्णु और माता मंगलागौरी का आशिर्वाद प्राप्त है। गया की कथा विष्णुभक्त धर्मनिष्ठ असुर गया सुर पर मूल रूप से निर्भर है। मान्यता है कि गयासुर के पुण्य प्रताप का ही प्रभाव है कि आज भी इस नगरी को श्राद्धभाव से गया जी कहा जाता है। भक्तों की नजर में पाँचवे धाम के रूप में ख्यात् गया में श्राद्ध पिण्डदान एवं देवताओं के दर्शन के लिए वर्ष भर तीर्थ यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। विश्व के हर कोने में रहने वाले हिन्दू श्रद्धालु जीवन में एक बार गया के दर्शन करने की अभिलाषा रखते हैं। गरूड़ पुराण से हमें जानकारी मिलती है कि गया पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ स्थल है। जीवन चक्र से मुक्ति और स्वर्ग प्राप्ति की भावना ने गयातीर्थ के धर्मानुष्ठान को इस घोर कलियुग में जीवन्त बनाये रखा है। इसके अतिरिक्त इस विष्णु नगरी में श्री विष्णु मन्दिर के अतिरिक्त दर्जनों वैष्णव मन्दिर, माता मंगला गौरी सहित लगभग बीस देवी मन्दिर लगभग तीन दर्जन शिव मन्दिर श्री भैरो मन्दिर, विश्वकर्मा मन्दिर, शनि मन्दिर, प्राकृतिक देव मन्दिर एवं चौक चौराहे पर बने मन्दिरों के कारण गया की ख्याति देश में संपूर्ण देश में है।

अत: यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि पितृपक्ष मेला और पिण्डदान आदि अनुष्ठान राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने वाले हैं, जातीय भेद भावों को भूलकर सामाजिक सौहार्द सुदृढ़ करने वाले हैं तथा समृद्धि को बढ़ावा देने और

लोकतंत्र तथा विश्व कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हैं। अन्त में मैं यह कहना चाहूँगा कि इतिहास लेखन की सभ्यता के विकास में अभूतपूर्व योगदान है। मानव जीवन के समस्त परोक्ष-अपरोक्ष विषयों का लेखन इतिहास है जिसमें तथ्यान्वेषण आवश्यक है। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र विकास एवं चेतना में क्षेत्रीयता महत्व, क्षेत्रीय जनता की गतिविधियों का रेखांकन कर उसका प्रकाशन आवश्यक है। यह समाज और आर्थिक व्यवस्था की उन्नति, मानव विकास पूर्व की घटनाओं से सबक और विभिन्न विषयों के अन्त सम्बन्धों को भी विवेचित-विश्लेषित कर सकता है। इसीलिए एक विकसित इतिहास चेतना की सतत वर्तमानता किसी समाज को जीवन्त बनाये रखने की एक आवश्यक शर्त होती है।

'अपराजिता', 26 आर० बैंक कॉलोनी
पादरी बाजार, गोरखपुर (उ. प्र.)

✦

काशी में मृत्यु और गया जी में श्राद्ध

ई० पम्मी सिन्हा
ई० आशीष साकेत

प्रारम्भ से ही मृत्यु के लिए काशी और श्राद्ध के लिए गया जी एवं भक्ति के लिए गंगातट का महात्म्य रहा है। काशी में मरने से और गया जी में पिण्डदान करने से प्राणी को शीघ्र मुक्ति मिलती है। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार मृत परिजनों की मुक्ति और मोक्ष के लिए 'त्रिस्थली' में श्राद्ध और तर्पण का विधान है। प्रयागराज, काशीधाम और गया जी को त्रिस्थली की संज्ञा दी गयी है जिसमें गया जी को इन तीनों में सर्वश्रेष्ठ महत्त्व प्रदान किया गया है। वायु पुराण के अनुसार गया में पिण्डदान से मनुष्य को जो फल मिलता है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। गरूड़ पुराण और पद्म पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों में भी गया में श्राद्ध के महत्त्व के बारे में कहा गया है कि गया में श्राद्ध करने से एक सौ आठ कुल और सात पीढ़ी तक को नरक भोग से मुक्ति मिल जाती है। ब्रह्मा जी ने कहा था कि गया तीर्थ में जिन पुण्यशाली लोगों का श्राद्ध होगा, वे ब्रह्मलोक में चले जायेंगे।

ब्रह्मज्ञान गयाश्राद्ध गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुंसां कुरूक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा।।

अर्थात् ब्रह्मज्ञान, गया श्राद्ध, गौशाला में मृत्यु तथा कुरूक्षेत्र में निवास ये चारों मुक्ति के द्वार हैं एवं संसार के जितने भी तीर्थ हैं वे गयाजी में स्नान करने आते हैं। गया जी में श्राद्ध करने से ब्रह्महत्या, सुरापान, स्वर्ण की चोरी, गुरूपत्नी गमन और महापातक आदि दोषों का भी शमन हो जाता है और मृतात्मा की मुक्ति हो जाती है। अकाल मृत्यु वालों के लिए भी गया जी में पिण्डदान कर देने से मुक्ति मिल जाती है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। गया जी में पिण्डदान करने का पुण्य करोड़ों गुना मिलता है। गया तीर्थ ही वह जगह है, जहाँ जीवित मनुष्य स्वयं अपने लिए भी पिण्डदान (तिलरहित) कर सकता है। स्वयं के लिए अपने पितरों के लिए ही नहीं, बल्कि अपने बंधु-बांधव, रिश्तेदार आदि सभी के लिए यहाँ पिण्डदान किया जा सकता है। व्यक्ति के मृत पूर्वज चाहे उनकी मृत्यु किसी भी तरह हुई हो और चाहे वे किसी भी योनि में कष्ट भोग रहे हैं, गया तीर्थ में किये गए पिण्डदान से सभी को मुक्ति मिलती है, शांति प्राप्त होती है।

पुराणों और धर्मग्रंथों में भी इस बात का वर्णन मिलता है कि कृष्ण की सलाह पर पांडवों ने गया में चार महीने तक प्रवास कर धर्मराज युधिष्ठिर के नेतृत्व में अपने पूर्वजों के मोक्ष के लिए चतुर्मास्य यज्ञ किया था। भगवान राम और सीता ने भी राजा दशरथ के मोक्ष प्राप्ति के लिए गया में पिण्डदान किया था। श्राद्ध से संतुष्ट होकर पितृगण श्राद्ध करने वाले को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, सुख, ऐश्वर्य, मोक्ष आदि सभी कुछ प्रदान करते हैं।

मौलागंज, गया

✦

गया तीर्थ की देन है चैतन्य की देवभक्ति

डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

भारत वर्ष के आध्यात्मिक तीर्थों में गया की महिमा युगों-युगों से पांक्तेय है। आदि-अनादि काल से यहाँ तीर्थ दर्शन, तीर्थानुष्ठान व तीर्थ सेवन की सुदीर्घ परम्परा रही है, जिसका गौरवपूर्ण निर्वहन देवी-देवताओं से लेकर ऋषि-मुनि, तपस्वी-महर्षि, राजे-महाराजे और यहाँ तक आमजन भी करते आ रहे हैं। इनमें शताधिक स्वनामधन्य व्यक्तित्व के मध्य गौरंग महाप्रभु श्री चैतन्य देव का सर्वविशिष्ट स्थान है। गया आते ही इनके जीवन दिशा में ऐसा परिवर्त्तन हुआ कि साधारण जन से असाधारण बन भक्त प्रवर के नाम से सम्पूर्ण भारत क्षेत्र में अपनी 'संकीर्त्तन' की ऐसी अलख प्रज्वलित की है, जिसके दीप इतने वर्षों बाद आज भी प्रकाशवान हैं।

संदर्भित साक्ष्यों से विदित होता है कि श्री जगन्नाथ मिश्र व शचि देवी के घर वर्ष 1486 ई० (फाल्गुन शुक्ल 15, शकसंवत् 1407) में गौड़ क्षेत्र का पुरातन विद्या केन्द्र नदिया (नवद्वीप) में अवतरित श्री चैतन देव बालकाल में निमाई नाम से प्रसिद्ध थे और बालकाल में ही पिता की मृत्यु हो जाने के बाद भी उन्होंने कम उम्र में ही व्याकरण, न्याय व धर्मक्षेत्र में असाधारण ज्ञान अर्जित कर लिया। बाद में आगे के समय में नदिया में ही विद्यालय स्थापित कर निर्धन बालकों को शिक्षा प्रदान करने लगे। 15-16 वर्ष की अवस्था में विवाह संस्कार लक्ष्मी देवी से सम्पन्न हुआ पर 1505 ई० में सर्पदंश से पत्नी की मृत्यु होने के बाद नवद्वीप के राजपंडित सनातन की पुत्री विष्णु प्रिया से विवाह सम्पन्न किया। चैतन्य के बड़े भ्राता बालकाल से ही संन्यास धर्म धारण कर विश्वरूप नाम से भगवत्मार्गी हो गए। यही कारण है कि स्थानीय मान्यता के अनुसार अपनी माता की रक्षार्थ आपको 24 वर्ष गृहस्थ धर्म पालन करना अनिवार्य था, और आपने इसे स्वीकार भी किया है। अपने क्षेत्र के धर्म पुरोहित की राय विचार और मातृ अनुमति लेकर मंदार, पुनपुन आदि तीर्थ सेवन कर 23 वर्ष की अवस्था में पितृ देवता के श्राद्ध पिण्डदा नार्थ अपने मौसा श्री चन्द्रशेखर सहित 21 संगी साथियों के साथ करीब 40 दिनों में मूल निवास से गया 1508 ई० के आश्विन मास में आए। गया तीर्थ में श्री विष्णुपद के पूजन वक्त ब्रह्ममुर्हुत में श्री माधवेन्द्र पुरीपाद के परमशिष्य श्री ईश्वरपुरी जी से भेंट होने के बाद उसी रात वैष्णव जगत् का दशाक्षरी महामंत्र यथा-

''गोपीजन बल्लभाय नमः।।

की दीक्षा प्राप्त होते ही आप भक्ति की दुनिया में ऐसे लीन हुए कि वैष्णव के जगत् संतों में स्थापित हो गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के आदि पुरूष के रूप में स्थापित हुए। गया क्षेत्र में श्री चैतन्य महाप्रभु ने ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड, सीताकुण्ड, रामशिला व अक्षयवट को दर्शन। पूजन किया तो श्री गदाधर देवता मंदिर में विशेष अनुष्ठान कर 32 अक्षरीय तारक ब्रह्म महामंत्र यथा -

हरेकृष्ण हरेकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे-हरे।

हरे राम हरे राम-राम-राम हरे-हरे।।

का प्रथम जयघोष किया और यही इस सम्प्रदाय से जुड़े लोगों का महामंत्र है जिसका जाप ये सब अहर्निश किया करते हैं। गौरांगो, गौर हरि, गौर सुन्दर, गौरांग प्रभु, श्री राधावतार आदि नामों से विभूषित श्री चैतन्य महाप्रभु नदिया लौटने पर गया का गुणगान करते नहीं थकते। उनके जीवन का यह आध्यात्मिक परिवर्त्तन गया दर्शन की महान देन थी, तभी तो वे स्वयं कहते हैं गया यात्रा सफल आभार अर्थात् मेरी गया यात्रा सफल हुई। इनके शिष्यों में प्रधान श्री नित्यानंद जी और अद्वैताचार्य जी महाराज ने भी गया दर्शन किया। गया में ही चैतन्य महाप्रभु को

हरिनाम की दीक्षा मिली। कहते हैं गया से लौटते थे तब अहर्निश हरि बोल ... जपते रहते, जो इस नश्वर शरीर में अंत के बाद ही बंद हुआ।

गया से अपने क्षेत्र में आने के बाद इनके शरीर व मुखमंडल पर आए परिवर्त्तन शनैः शनैः मुखरित होने लगा और सम्पूर्ण बंगाल में आपके नाम व यशगुण की चर्चा होने लगी। आगे आप 1515 ई० में वृन्दावन आ गए और वहाँ उन्होंने अनेकानेक लीलाओं के दिव्य प्रदर्शन किए। यहाँ रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी जैसे दो योग्य शिष्यों पर सम्पूर्ण धार्मिक भार छोड़कर जगन्नाथपुरी आ गये। जहाँ जीवन का शेष 12 वर्ष गुजरने के बाद आप सदा सर्वदा के लिए हरि तत्व में लीन हो गए।

एक बार ओड़िशा का एक भक्त नित्यानंद ने जब चैतन्य स्वामी से भक्ति का पूर्ण रहस्य जानना चाहा तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा कि पहले तुम गया तीर्थ का दर्शन कर आओ तब जानोगे कि भक्ति क्या है? जहाँ से भक्ति की अजस्त्र अमृतधारा उद्‌गामित होती है, वही है श्री विष्णु चरण जो गया में श्री फल्गु के किनारे युगों-युगों से जन कल्याण कर रहा है।

आज भी गया में इनसे जुड़े पुराने दिनों की स्मृति को जंगमबाड़ी में देखा जा सकता है जिसके रूप स्वरूप में हाल के दिनों में आशातीत परिवर्त्तन हुए हैं अब यहाँ का जंगमेश्वर व एकादश रूदेश्वर महादेव मंदिर का नाम भी लोग विस्मृत करते जा रहे हैं जो वंश शैली में निर्मित देवालयों में एक हैं। विवरण है कि करसिल्ली के शीर्षस्य 'आदि गया' तीर्थ पर भी आपने साधना की थी, जिनका स्थान अब समाप्त हो गया है।

गया में केदारनाथ मार्केट के सामने की गली में गौड़ीय मठ मंदिर गया के आधुनिकतम मंदिरों में सर्वाधिक आकर्षक है जो चैतन्य महाप्रभु से जुड़े गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रधान आस्था केन्द्र है। पूरे देश ही नहीं विदेशों में भी गौड़ीय मठ है पर जन्म स्थान नदिया, दीशा स्थान गया व निर्वाण स्थान जगन्नाथपुरी के साथ संकीर्त्तन स्थल वृन्दावन ... इन चार स्थानों के गौड़ीय मठ का विशेष मान है, जिसमें गया का वर्तमान गौडीय मठ मंदिर विकास क्रम का तृतीय कृति है। आज भी गया के कितने ही भक्तप्रेमी गौडीय मठ से जुड़े हैं जो चैतन्य महाप्रभु जी की भक्ति का हर पल प्रचार-प्रसार कर रहा है।

गया से जुड़े बहुतेरे साधक संतों के मध्य श्री चैतन्य महाप्रभु एक आदरणीय नाम है, जिन्हें गया की मिट्टी ने धन्य बनाया। कृष्ण भक्ति के समस्त मध्यकालीन भक्तों में श्रेष्ठ चैतन्य महाप्रभु के जीवन में गया की महिमा वर्णनातीत है तभी तो गया आने वाले वंगदेशीय यात्रियों में इनके सम्प्रदाय से जुड़े लोगों की विशाल जमात होती है।

'अखिलेशायन', गोदावरी (भैरो स्थान) गया
मो० - 9934463552

✦

धर्मेणै वर्षयस्तीर्णा धर्मे लोकाः प्रतिष्ठिताः।
धर्मेण देवता ववृधुर्धर्मै चार्थः समाहित।।

महाभारत-वन 313/128

धर्म के द्वारा ऋषिगण इस भव-सागर से पार हो गए।
सम्पूर्ण लोक धर्म के आधार पर ही टिके हुए हैं; धर्म से ही देवता बढ़े हैं
और धन भी धर्म के ही आश्रित है।

गया-श्राद्ध का पौराणिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व

डॉ० राधानंद सिंह

भगवान् विष्णु के पावन पद से अधिष्ठित श्री गया जी महान पितृतीर्थ है। भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा में की इस पहचान एक अतिप्राचीन पितृतीर्थ के रूप में ही है।

सनातन परंपरा में आदिकाल से मृत व्यक्ति के लिए श्राद्ध का महत्त्व है। श्राद्ध से किया जाने वाला वह कार्य, जो पितरों के निमित्त किया जाता है, श्राद्ध कहलाता है। मनुष्यमात्र के लिए शास्त्रों में देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण ये तीन ऋण बताये गए हैं। इनमें श्राद्ध के द्वारा पितृ ऋण उतारा जाता है।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध से तृप्त होकर पितृगण समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देते हैं (3/15/51)। पितृपक्ष (आश्विन का कृष्णपक्ष) में तो पितृगण स्वयं श्राद्ध ग्रहण करने आते हैं तथा श्राद्ध मिलने पर प्रसन्न होते हैं और न मिलने पर निराश हो शाप देकर लौट जाते हैं। विष्णुपुराण में लिखा है कि श्रद्धायुक्त होकर श्राद्ध कर्म करने से केवल पितृगण ही तृप्त नहीं होते, बल्कि ब्रह्मा, इंद्र, रूद्र, अश्विनीकुमार, सूर्य, अग्नि, अष्टवसु, वायु, ऋषि, पशु, मनुष्य, पशु पक्षी और सरीसृप आदि समस्त भूत प्राणी तृप्त होते हैं।

महर्षि जाबालि के मतानुसार आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्ध करने से कर्त्ता को पुत्र आयु, आरोग्य, अतुल ऐश्वर्य और अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। ऐसी मान्यता है कि सर्वप्रथम सत्युग में ब्रह्माजी ने गया में पिण्डदान किया था, तभी से यह परम्परा जारी है। पितृपक्ष में पिण्डदान का विशेष महत्त्व है। पहले 360 वेदियों पर गेहूँ, जौ के आटे में खोवा मिलाकर तथा अलग से बालु की पिण्ड बनाकर दान करते थे। अब विष्णु मंदिर, अक्षयवट फल्गु, पुनपुन नदी, रामशिला, सीताकुंड, मंगलागौरी, कागवली, वैतरणी तथा पंचाय सहित प्राय: 48 वेदियाँ शेष हैं, जहाँ पिण्डदान किया जाता है।

अब एक प्रश्न है गया में ही श्राद्ध क्यों? प्रो० लक्ष्मीश्वर झा गया-श्राद्ध का भौगोलिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कहते हैं ''गया में अक्षांश और देशांतर दोनों रेखाएं गुजरती हैं। इन रेखाओं का सीधा संबंध भगवान् सूर्य के साथ है। भगवान सूर्य का ही बारह नामों में से अंतिम नाम विष्णु है। जहाँ अक्षांश और देशांतर रेखाएं मिलती हैं, वहां विष्णुपदी बन जाती है। विष्णुपदी से अभिप्राय वह केन्द्रविन्दु है, जहाँ दोनों रेखाएं मिलती हैं। विष्णुपदी एक वृत्त बन जाती है, जिसे 360 अंशों में विभाजन कर सूर्य एवं उसकी गति को निश्चित किया जाता है। यह वृत्त जीवों को क्षिप्रगति से सूर्यलोक की ओर आकर्षित कर लेता है। फलत: जीव सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी की गति के साथ स्वर्गलोक या विष्णुलोक पहुँच जाता है। यही कार्य गया-श्राद्ध करता है। एक ओर जहाँ श्राद्ध कर्म जीवों के बंधनों को खोलकर प्रेतत्त्व से मुक्त करता है वहीं दूसरी ओर विष्णुपदी जीवों को स्वर्गलोक भेजने में सक्षम होकर सहायता प्रदान करती है। ये ही वैज्ञानिक कारण हैं। गया श्राद्ध के। (हिन्दू विश्व - पितृपक्ष विशेषांक सितम्बर (16-30) 2007 ई०।

इसी प्रकार आश्विन के पितृपक्ष का भी अपना विशिष्ट महत्त्व है। अर्थववेद के अनुसार - शरद ऋतु में छठी संक्रांति कन्यार्क में जो अभीप्सित वस्तुएँ पितरों को प्रदान की जाती हैं, वे सब स्वर्ग को देने वाली होती हैं। अत्रि ऋषि के अनुसार - कन्यागते सवितरिं पितरोयान्ति सत्सुतान् 358 अर्थात् कन्या राशि पर सूर्य जब आता है। तब पितर लोग अपने सत्पुत्रों के निकट पहुँचते हैं। इस प्रकार

आश्विन पितृपक्ष में महाक्षय पावन श्राद्धों की परंपरा वेदादिशास्त्र द्वारा अनुमोदित है।

इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि आश्विन मास के कृष्णपक्ष में चन्द्रमा अन्य मासों की अपेक्षा पृथ्वी के निकटतर हो जाता है। ज्योतिष के अनुसार मेषराशि के दस अंश तक सूर्य परमोच्च का रहता है और तुला राशि के दस अंश पर सूर्य परमनीच का होता है और पृथ्वी की कक्षा के सर्वथा निकट होता है। पृथ्वी लोक पर किये गए यज्ञ - अनुष्ठान पहले सूर्यमण्डल में पहुँचते हैं, फिर वहां से तत्तद स्थानों में जाता है। पितृगणों के निमित्त किया गया श्रद्धादि (अग्नि में हुत 'कव्य') पहले सूर्य मण्डल में पहुँचता है फिर सूर्यमण्डल से चंद्रमंडल में जाता है। जैसे चन्द्रमा सूर्य की उस रश्मि को खींच लेता है, वैसे ही सूर्य की किरणों में स्थित सूक्ष्म अन्नादि को भी खींचकर उस-उस पितर को सौंप देता है। वे सूक्ष्म पितर भी उस सूक्ष्म हवि से हमारी सूक्ष्म आत्मा की तरह तृप्त हो जाते हैं। अत: कन्याराशि के दस अंश से तुलाराशि के दस अंश पर्यन्त सूर्य परमनीच कक्षा में विद्यमान होने के कारण अर्थात् पृथ्वी चन्द्रमण्डल और सूर्यमंडल के सर्वाधिक निकट होने के कारण ''कन्यागत'' श्राद्ध करना विज्ञान सम्मत है। अत: गया श्राद्ध का धार्मिक, पौराणिक कारण तो है ही, आज वह वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

फ्लैट नं० 601, लीगैसी स्क्वायड
पुलिस लाइन रोड, बाकड़, पूणे (महाराष्ट्र)
Mob. No.- 9031333878
Email - radhanandbgp@gmail.com

✦

अक्षयवट

कस्मै देवाय हविषाविधेम

डॉ० एस०एन०पी० सिन्हा

वेदांत के चार महावाक्य प्रज्ञानम् ब्रह्म, अयं आत्मा, अहं ब्रह्मास्मि एवं तत्त्वमसि के अनुसार पूर्ण ब्रह्म परमात्मा ही ब्रह्म या आत्मा है। चूँकि मनुष्य पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का ही अंश है (ईश्वरः सर्वभूतानां हदेशेऽर्जुन तिष्ठति) इसलिए इन महावाक्यों में इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य की आत्मा में देवत्व प्राप्त करने की शक्ति है। यह आत्मशुद्धि और आत्मसंयम से ही संभव है। भगवान् महावीर ने भी अपने अंदर निहित इस देवत्व को पहचाना था। ''सम्यग्यदर्शन ज्ञान चारित्राणि'' के द्वारा इसे जाग्रत करके उच्चतम स्थिति तक पहुँचकर देवत्व प्राप्त किया था और बाद में लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे भी आत्मा की गरिमा और शक्तियों को पहचानें। भगवान् बुद्ध ने भी ''बुद्धत्व'' प्राप्त करने के लिए हमें सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि का अष्टांगिक मार्ग बताया।

गीता दर्शन के अनुसार जो मनुष्य ''सर्वभूतहिते रताः'' के अनुसार 'रत' हो ''परहित सरिस धर्म नहिँ भाई'' को ही धर्म मानकर दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी में विश्व विराट् स्वरूप सत्यनारायण का दर्शन करते रहता है। उसका समष्टि-हित में ही व्यष्टिहित होता है। ऐसे पुरुष विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरित निःस्पृहः। निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति। की स्थति में पहुँच कामनारहित, अहंकार रहित स्पृहारहित, ममतारहित-''मा कर्मफलहेतुर्भूः'' का लक्ष्य प्राप्त कर परम शांति को प्राप्त करते हैं (युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोतिनैष्ठिकीम्)। यही तो सत् चित् आनन्द अवस्था है। ऐसे ही आस्था-पुरुष की शरण में जाने का गीता-दर्शन का संकेत है। (सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज) महाभारत के वन-पर्व में यक्ष के प्रश्न का उत्तर देते हुए महाराज युधिष्ठिर ने कहा ''धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनों येन गतः स पन्था।।'' धर्म का तत्त्व अत्यन्त गूढ़ है, अतः महापुरुषों का मार्ग वास्तविक मार्ग है। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं ''यद्यदाचरित श्रेष्ठतत्तदेवेतरो जनः। सयत्प्रामाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।'' श्रेष्ठ पुरुष जो भी आचरण करते हैं अन्य मनुष्य-समुदाय भी वैसा ही आचरण करते हैं और जो कुछ प्रमाण व्यवस्थापित कर देते हैं, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी अपने दिव्य ग्रंथ 'रामचरित मानस' में धर्म की अद्भुत व्याख्या की है। उन्होंने श्री भरत को मूर्तिमान् धर्म कहा है। समग्र धर्म की व्याख्या श्री भरत के जीवन में है। जौ न होत जग जनम भरत को सकल धरम धुर धरनि धरत को। एक वाक्य में गुरु वशिष्ठ ने भी भरत के जीवन को धर्म का सार कहा -''समुझब कहब, करब तुम्ह जोई, धरम सारु जग होइहि सोई।। वेद की व्याख्या भी भरत के जीवन में है। अभिप्राय सेवा में ही धर्म को धारण कर सकता है। महाभारत में भी भगवान् वेद व्यास ने कहा है - जहाँ कृष्ण हैं, वहाँ धर्म है, जहाँ धर्म है वहीं विजय है (यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः)।।

शिव, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गांधी और अन्य सभी धर्मों के सभी पैगम्बरों से मानव-समाज प्रेरणा पाकर अपना आत्मविकास करता चला आ रहा है। ये आस्था-पुरुष ''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति'' होने पर मनुज शरीर धारण कर संकटग्रस्त युग का नेतृत्व करते हैं। इन आस्था पुरुषो का आस्थादीप जीवन की हर परिस्थिति और काल में

जलने अर्थात् प्रकाश देने की क्षमता रखता है। ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' के अन्तर्गत वैदिक ऋषि ने कहा था :

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अर्थात् ''जो आत्मज्ञान का प्रेरक और बलदाता है, जिसकी आज्ञा का पालन संपूर्ण मनुष्य और देवता करते हैं, अमृत जिसकी छाया है और मृत्यु भी जिसकी छाया है, हम उसकी उपासना करें।''

मनुष्य सतत साधना द्वारा त्यागमय, धर्ममय, सेवामय, सद्भावमय, स्नेहमय और परोपकारमय जीव यापन निष्काम भाव से कर आत्मा को प्रकाशित कर (ज्योतिषां ज्योतिः) परमब्रह्म को प्राप्त कर ''अथ मर्त्यः अमृतो भवति'' की स्थिति को प्राप्त हो जा सकता है।

समाज में लघु या विराट् रूप में ऐसे ही महापुरुषों की पूजा देवता के रूप में होती है और वे देवश्रेणी में पंक्तिबद्ध हो जाते हैं।

पूर्व-कुलपति, पटना विश्वविद्यालय
बी० 12, पीपुल्स को-ऑपरेटिव
कॉलोनी, लोहियानगर, पटना-20

✦

तुलसी कानन चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थभूतं हि नायान्ति यमकिङ्कराः।।
तुलसी मञ्जरी भिर्यः कुर्याद्धरिहरार्चनम्।
न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी भवेन्नरः।।

जिसके घर में तुलसी-वन होता है, वह घर तीर्थ रूप हो जाता है,
वहाँ यमदूत नहीं आते। जो मनुष्य तुलसी मञ्जरी से भगवान हरि-हर की पूजा करता है,
वह फिर गर्भ में नहीं आता, वह मुक्ति का भागी हो जाता है।

रामकथा : तुलसी और कम्बन के सन्दर्भ से

डॉ० वंशीधर लाल

भारत विविधताओं का देश है। विभिन्न प्रांतों में विभाजित भाषाई दृष्टि से अनेकता एकता के सूत्र में बंधी दिखाई देती है। इसके मूल में हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत रही है। इस एकता का प्रमुख कारण रामकथा की लोकप्रियता है। भारतीय समाज में भगवान राम दारूण भव-भय के निवारक और सुखदाता माने जाते हैं। उनके प्रति भारतीयों के भक्तिभाव से ही उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम की विभिन्न भाषाओं में रामकथा का सृजन हुआ। विभिन्न भाषाओं के रामकथा का अध्ययन एक प्रबंध का रूप ले लेगा। इसलिए इस आलेख में तमिल कवि कम्बन और हिन्दी के तुलसीदास द्वारा रचित रामायण तक अपने को सीमित रखना चाहूँगा।

विश्व-साहित्य के महाकाव्यों में आदि कवि वाल्मीकि के ग्रंथ रामायण को आधार बनाकर अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में रामकथा की रचना की जाती रही है। वाल्मीकि रामायण का रचना-काल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी माना जाता है। कम्बन रामायण की रचना ईसा की बारहवीं शताब्दी में हुई और 'रामचरित मानस' की रचना सोलहवीं शताब्दी में हुई। देश काल और भाषा-भेद के कारण इन दोनों महाकवियों में कुछ साम्य और कुछ वैषम्य दिखाई देता है। तमिल भाषा के महाकवि कम्बन कृत रामायण का मूल आधार वाल्मीकि रामायण है, जबकि तुलसीदास की रामकथा मुख्यत: अध्यात्म रामायण पर आधारित है। उन्होंने वाल्मीकि रामायण का आधार गौण रूप में स्वीकार किया है। उनका 'रामचरित मानस' तो नाना पुराण निगमागम सम्मत है ओर उसमें 'कवचिदन्तोपि' का भी समावेश है।

कम्बन और तुलसी के राम - कम्बन के राम विष्णु के अवतार हैं। तुलसी के राम दशरथ-नंदन हैं, आदर्श मानव हैं, कहीं-कहीं उनमें पारलौकिक गुण की झलक मिल जाती है। **छह कांड संख्या** वाल्मीकि की भाँति कम्बन ने बालकाण्ड से युद्ध सर्ग तक केवल छह कांडों की रचना की। कम्बन ने आदर्श राजा और आदर्श राज्य की परिकल्पना बालकाण्ड के 'शासन पडलम' के अन्तर्गत किया है। युद्ध काण्ड के अंत में राम के राज्याभिषेक के साथ उनका महाकाव्य समाप्त हो जाता है। तुलसी के 'रामचरितमानस' में उत्तर काण्ड सहित सात काण्ड हैं। इस उत्तर काण्ड में ही तुलसी दास ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया है।

शैलीगत अंतर - कम्बन की कृति में वर्णनात्मक शैली है, जबकि तुलसी में संवाद-शैली है। कम्बन ने तमिल जनता को रामकथा की जानकारी देने के लिए प्रासंगिक कथाओं को काफी विस्तार दिया है, किन्तु तुलसी ने अनावश्यक प्रसंगों को चलता कर दिया है। इसलिए तुलसी के 'मानस' में कसाव अधिक है, कम्बन की रचना में ऐसा नहीं है।

कम्बन कवि पहले हैं, भक्त बाद में, किन्तु तुलसी भक्त पहले हैं, कवि बाद में हालाँकि कुछ विद्वान 'वाणी विनायक' की वंदना के आधार पर उन्हें कवि घोषित करते हैं, भक्त बाद में। प्रकृति-चित्रण-कम्बन ने प्रकृति के आलंबनगत चित्रण जैसे, जलक्रीड़ा, मधुपान-उत्सव, सूर्योदव, चन्द्रोदय आदि का रमणीय वर्णन किया है, जबकि तुलसी दास ने प्रकृति के उद्दीपक चित्रों का अपेक्षाकृत अधिक वर्णन किया है। इनके यहाँ प्रकृति उपदेशिका भी रही हैं।

पुष्प वाटिका प्रसंग - प्रत्येक रचनाकार अपने देश, काल, वातावरण और अपनी संस्कृति से प्रभावित होता है। यह अन्तर कम्बन और तुलसी की रामायण में स्पष्ट परिलक्षित होता है। पूर्वराग विरह

की प्रथम अवस्था है। तमिल में 'कलवु' पूर्वराग का वाचक है। इसके बाद 'कपु' यानी विवाह की स्थिति बनती है। इसी मान्यता के कारण कम्बन ने सीता और राम दोनों में पूर्वराग की स्थिति दिखलाई है। जनकपुर की विधियों से गुजरते हुए सीता अपने अलिन्द पर खड़ी राम को निहारती है। दोनों में दृष्टि-विनिमय होता है और दोनों एक-दूसरे पर आसक्त दिखाई देते हैं''। कम्बन दोनों के पूर्वराग-जन्य विरह-वर्णन में कहीं-कहीं मर्यादा का अतिक्रमण कर गये हैं। महर्षि विश्वामित्र इस स्थिति को भांप कर राजा जनक से विवाह की बात करने पहुँचते हैं, पर जनक अपनी प्रतिज्ञाजन्य विवशता जताते हैं।

तुलसी के राम-सीता का पूर्व मिलन पुष्प-वाटिका प्रसंग में आया है, जो मर्यादित पूर्वराग का अन्यतम उदाहरण है। वीथी-बिहार को तमिल में 'उला' कहते हैं। वहाँ यह एक स्वतंत्र काव्य विधा है। कम्बन की रामायण में यह काव्य-विधा महाकाव्य का अंग बन गई है। इसका अतिरंजित वर्णन कम्बन में मिलता है। इस अवसर पर जनकपुर की बालाएँ राम पर आसक्त हो जाती हैं और अनेक प्रकार से वासनात्मक उद्‌गार व्यक्त करती हैं। तुलसी के पुष्पवाटिका प्रसंग में पुरबालाएँ राम-लक्ष्मण के प्रति सात्विक भाव रखती हैं। वे चाहती हैं कि किसी तरह राम और सीता का विवाह हो जाय। 'पुनि आइब एहि बेरिया काली' में सीता के राम से पुनः मिलन का संकेत बड़ा भावमय और श्लाध्य है।

शूर्पनखा प्रसंग - शूर्पनखा प्रसंग में तुलसी के रामचरितमानस में जो कथा आई है, वह कम्बन से किंचित भिन्न है। तुलसी कृत रामायण में शूर्पनखा का प्रवेश विचित्र लगता है। वह पहले राम से प्रणय निवेदित करती है। राम अपने को विवाहित बताकर लक्ष्मण के पास भेजते हैं। लक्ष्मण अपने को राम का दास बताकर पुनः उसे राम के पास भेजते हैं। राम फिर उसे लक्ष्मण के पास भेज देते हैं। लक्ष्मण उसे तिरस्कृत करते हैं, तब वह भयंकर रूप धारण करती है। सीता भयभीत हो जाती हैं, तब राम का संकेत पाकर लक्ष्मण उसकी नाक-कान काट लेते हैं और यही घटना सीता-हरण का कारण बन जाती है। कम्बन की रामयण में यह कथा कुछ भिन्न रूप में वर्णित है। वहाँ शूर्पनखा ऐसे समय में आती है, जब लक्ष्मण कहीं बाहर गये हैं। सीता कुटिया में हैं। राम को अकेला जानकर वह प्रणय और विवाह का प्रस्ताव रखती है। राम उसके प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं। शूर्पनखा सोचती है कि सीता के कारण राम उसका प्रणय प्रस्ताव ठुकरा रहे हैं, इसलिए सीता का ही क्यों नहीं अपहरण कर लिया जाय। अगले दिन वह पंचवटी पहुँचती है। राम संध्यावंदन करने के लिए गोदावरी तट पर गये हैं। लक्ष्मण पेड़ों के झुरमुट में छिपकर सीता की देखभाल करते हैं। इस बीच शूर्पनखा सीता को अकेली जानकर उनपर झपटती है। लक्ष्मण तुरन्त पहुँचकर उसके केश पकड़ लेते हैं और उस पर पदाघात करते हैं। शूर्पनखा सीता को उठा ले जाने का दोबारा प्रयास करती है, तब लक्ष्मण उसके नाक-कान काट देते हैं। यहाँ हम देखते हैं कि कम्बन राम-लक्ष्मण के गौरव की यथोचित रक्षा करते हैं, जबकि तुलसी के राम-लक्ष्मण की किंचित गौरव रक्षा पर प्रश्न-चिन्ह लग जाता है। यहाँ कम्बन ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

सीता-हरण - तुलसी दास की रामयण में रावण सीता की नहीं, उनकी छाया सीता का हरण करता है। 'अब हम करब कछुक नरलीला' और तुम पावक मुँह करहु प्रवेसा' जैसी उक्ति से तुलसी ने सीता के चरित्र की पवित्रता की रक्षा की है। कम्बन के यहाँ स्थिति भिन्न है। 'अध्यात्म रामायण' के अनुसार रावण सीता के पैरों तले की भूमि को अपने नखों से खुरज कर अपने हाथों में लिया और उसके हाथ ही सीता को रथ में डालकर आकाशमार्ग से उड़ चला। कम्बन की रामायण में रावण पर्णकुटी समेत गीता का हरण कर लेता है। संभवतः उस भूमि की पवित्रता का सूत्र पकड़कर कम्बन ने पर्णकुटी सोमन सीता को ले जाने की बात लिखी है।

पात्रों का चरित्रांकन – कम्बन की रामायण में सीता-हरण के बाद राम को एक संयत, संतुलित और सहज भाव से दिखाया गया है। आश्रम में सीता को न पाकर उनकी वाणी मूक हो जाती है, सिर चकराने लगता है और पृथ्वी घूमती-सी नजर आती है। यहाँ राम का स्वाभाविक चित्रण है। कम्बन ने प्राणप्रिया सीता के वियोग में राम की मनोदशा का मार्मिक वर्णन किया है। लेकिन, तुलसी के राम अत्याधिक भाव-विह्वल हो 'हे खग, मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृग नयनी' जैसी उक्ति करते दिखते हैं। वे साधारण मानव की तरह विलाप करते हैं, पर महाकवि पाठकों को तुरत सजग कर देते हैं कि यह विशुद्ध नर-लीला है।

इसी प्रकार कम्बन की रामायण में सुग्रीव और विभीषण जैसे रामभक्तों के चरित्रों की रक्षा की गई है। बालि वध के बाद तारा गौरवपूर्ण ढंग से वैधव्य जीवन बिताती है। सुग्रीव उसका मातृवत् सम्मान करता है। यही हाल मंदोदरी का भी है। रावण की मृत्यु का समाचार सुनकर वह युद्ध-क्षेत्र पहुँच जाती है। राम द्वारा अनगिनत बाणों से बिंधे रावण के शरीर को देखकर वह समझ जाती है कि राम ने इतने बाण शायद इसलिए मारे होंगे कि उसके शरीर को देखकर वह समझ जाती है कि उसके शरीर के किसी अंश में सीता के लिए कोई मोह तो शेष नहीं रह गया है। वेदनाकुल मंदोदरी मूर्च्छित हो गिर जाती है और अपने प्राण वहीं त्याग देती है। इस प्रकार कम्बन ने दोनों महान् स्त्रियों के गौरव की रक्षा की है। इससे सुग्रीव और विभीषण का चरित्र कलंकित नहीं होता। लेकिन तुलसी के रामचरित मानस की इन पंक्तियों से सुग्रीव और विभीषण के चरित्र निष्कलंक नहीं रह जाते। जैसे –

'जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली।
फिर सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली।।
सोइ करतूत विभीषन केरी।
सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी।।''

यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर दूँ कि मेरा आशय कम्बन और तुलसी में किसी को छोटा-बड़ा बताने का नहीं है, बल्कि दोनों कवियों की रामायण के कुछेक अंशों के आलोक में उनके भाव-साम्य और प्रस्थान-बिन्दुओं का रसास्वादन करना है। कई स्थलों पर यथा-सीता का सौंदर्य निरूपण, राम-सीता का जन्म-जन्मांतर का संबंध आदि के चित्रण में दोनों महाकवियों में अद्‌भुत भाव-साम्य है।

अन्त में दोनों कवियों की रचनाकालीन परिस्थितियों पर दृष्टिपात कर अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। जिस प्रकार तुलसी को उनके जीवन-काल में यथोचित आदर-सम्मान नहीं मिला, वैसे ही कम्बन को नहीं मिला। कम्बन के समकालीन चोल नरेश शैव मतानुयायी थे और वैष्णव मतानुयायी कम्बन के प्रति अनुदार थे। तुलसी के रचनाकाल में मुगल बादशाह अकबर का शासन था, जो किसी प्रकार 'रामचरित मानस' की रचना के लिए और उसकी लोकप्रियता एवं प्रचार-प्रसार के लिए उपयुक्त नहीं था। कम्बन रचित रामायण के लोकप्रिय न होने के कारण उनके महाकाव्य का विशाल आकार और परिनिष्ठित तमिल भाषा-शैली का पंडिताऊपन था। वह जनसामान्य के बीच ग्राह्य न हो सका। दूसरी ओर तुलसीदास ने जनसामान्य की बोलचाल की भाषा अवधी में 'रामचरित मानस' की रचना की, जो आम जनता के हृदय का कंठहार बन गई। भले ही उन्होंने 'स्वान्तः सुखाय' की बात लिखी है, पर वह सर्वान्तः सुखाय, बहुजन हिताय है। उन्हीं के प्रयास से शैव-वैष्णव का विद्वेष उत्तर भारत में अपनी जड़ नहीं जमा सका। उन्होंने अपने समय के विश्रृंखलित समाज को एक सूत्र में बाँधने का उत्कृष्ट कार्य किया। अपनी समन्वय-भावना के कारण ही 'रामचरितमानस' युगों तक प्रासंगिक बना रहेगा और मानवता का कल्याण-पथ प्रशस्त करता रहेगा।

पूर्व-आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग तथा
संकायाध्यक्ष, मानविकी, मगध विवि. बोधगया

त्रयस्थली में गयाजी श्रेष्ठ

श्री सुमन्त

हिन्दू धर्मग्रंथों में मृत्योपरांत मुक्ति व मोक्ष प्राप्ति के लिए वर्णित तीन सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थलों को 'त्रीस्थली' कहा गया है। ये तीन स्थल हैं – प्रयागराज , काशीधाम और गयाजी

इन तीनों स्थलों में श्राद्धकर्म के लिए सबसे श्रेष्ठ गयाजी को माना गया है। वायु पुराण, गया महात्म्य में उल्लिखित है –

गयायां नहि तत् स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते।
सान्निध्यं सर्व तीर्थानां गया तीर्थं ततो परम्।।

पराक्रमी गयासुर की तपस्थली, जिनके नाम पर गया जी का नामाकरण हुआ, वर्तमान समय में यह देश-विदेश में ''विष्णु नगरी '' के नाम से भी जाना जाता है। गयासुर व भगवान विष्णु दोनों का संबंध गयाजी से रहा है। इसके पीछे की एक कहानी धर्मग्रंथों में प्रचलित है। वायु पुराण के अनुसार गयासुर ने अपनी तपस्या के बल पर यह परम सिद्धि प्राप्त कर ली थी कि जो भी प्राणी उसे स्पर्शमात्र करेगा, उसे स्वर्णलोक की प्राप्ति हो जायेगी। ऐसे में मृत्यु के देवता यमराज के साथ अन्य देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। और भगवान विष्णु के साथ अन्य सभी देवताओं तो गया जी आकर गया सुर के शरीर के ऊपर उसकी सहमति से, यज्ञ किया। बावजूद इसके पराक्रमी गयासुर का सिर काँपता रहा। ब्रह्मा ने उसके सिर पर धर्मशिला रखा। इसके बावजूद भी सिर का कंपन बंद नहीं हुआ। तब सभी देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु ने अपने चरण रखे, तब गयासुर स्थिर हुआ। धर्मशिला पर अंकित विष्णु-चरण पर ही अवस्थित विष्णुपद का भव्य मंदिर है।

उसी अवसर पर भगवान् विष्णु ने यह वरदान दिया कि यह स्थान सबसे पवित्र होगा और पूरे पितृपक्ष में देवलोक के सभी देवगण यहाँ निवास करेंगे। जो कोई भी यहाँ पिण्डदान करेगा, उसके पूर्वजों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति होगी और तब से अब तक गयाजी में श्राद्धकर्म की यह परम्परा चली आ रही है। प्रतिवर्ष आश्विन मास के कृष्णपक्ष के पन्द्रह दिन देश-विदेश के हजारों हजार हिन्दू पिण्डदानी मोक्ष प्राप्ति के लिए गयाजी आकर अपने पितरों का श्राद्धकर्म करते हैं। धर्मशास्त्र के अनुसार –

आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गकीर्ति पुष्टि बलं श्रियम्।
पशून, सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृ पूजनात्।।

अर्थात् पितरों की पूजा से गृहस्थ दीर्घायु, पुत्र-पौत्राद, यश-स्वर्ग, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, पशु, सुख-साधन तथा धन्य-धान्य की प्राप्ति करता है। इतना ही नहीं –

आयुः प्रजां धनं वित्तं स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छान्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः।।

अर्थात् पितरों की कृपा से सुख-समृद्धि के साथ राज्य व मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसी भी मान्यता है कि पितरों को उनके पुत्रादि द्वारा पिण्डदान नहीं किया जाता है, तो वे श्राप देकर चले जाते हैं। अतः लोग गयाजी में पिण्डदान करते हैं।

जीवन के चार पुरूषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष है। लेकिन धर्म, अर्थ व काम की पूर्णता तभी सार्थक है, जब मोक्ष सुलभ हो और मोक्ष प्राप्ति के लिए त्रिस्थली में सबसे श्रेष्ठ गयाजी है। वायुपुराण के अनुसार –

ब्रह्म ज्ञानं गया श्राद्ध गोगृहे मरणं तथा।
वासः पुसां कुरूक्षेत्रे मुक्ति-रेषा चतुविधा।।
ब्रह्म ज्ञानेन कि साध्यं गोगृहे मरनेणकिम्
वासेन किं कुरूक्षेत्र यदि पुत्रो गयां व्रजेत्।।

अर्थात् ब्रह्म ज्ञान, गया श्राद्ध, गोशाला में मरण, करुक्षेत्र का वास ये चार मुक्ति के साधन हैं। किन्तु यदि पुत्र गया चला आए तो अन्य तीन साधनों की कोई आवश्यकता ही नहीं है। और दूसरी ओर यह

भी कहा गया है कि –

जीवितो वाक्यं पालनात् क्षयाहे भूरि भोजनात्।
गयायां पिण्ड दानाश्च त्रिभि पुत्रस्य पुत्रता।।

अर्थात् श्रेष्ठ पुत्र वह है जो जीते जी पिता की आज्ञा का पालन करे। पिता की मृत्यु के बाद ब्रह्मणों को भोजन करवाये और गया–श्राद्ध करे। इन तीन कर्मो का जो पुत्र पालन करता है, वही योग्य पुत्र है।

पितृपक्ष श्राद्ध के लिए पन्द्रह तिथियाँ निर्धारित हैं। वर्ष के किसी भी माह के किसी तिथि में स्वर्गवासी हुए पितरों के लिए पितृपक्ष की उसी तिथि को श्राद्ध का विधान है। और नहीं तो अश्विन की अमावस्या तिथि पितरों के लिए और पितृपक्ष की नवमी तिथि मातृ श्राद्ध के लिए पुण्यदायी माना जाता है।

यूँ तो गया जी में श्राद्ध कर्म सालोभर चलता रहता है, लेकिन पितृपक्ष में यहाँ बड़ी संख्या में पिण्डदानी आते हैं और तब उन्हें देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जाता है कि त्रिस्थली में गया जी श्रेष्ठ है।

संपादक– 'टोला–टाटी'
महेश शान्ति भवन, हनुमान नगर, गया।
मो०–9934874307

✦

आध्यात्मिक जीवन में गयाधाम के अतिरिक्त कुम्भ पर्व की महत्ता

डॉ० शिववंश पाण्डेय

पितरों की मुक्ति हेतु किए जाने वाले अनुष्ठानों के लिए गयाधाम की महत्ता अक्षुण्ण है। इसी कारण गया जी को तीर्थो का प्राण कहा जाता है। प्रतिवर्ष भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या तक मनाया जाने वाला पितृपक्ष में देश–विदेश के सनातन धर्मावलंबी गया–तीर्थ में आकर पितृऋण से उऋण होते हैं। एक प्रकार का यह धार्मिक समागम कुम्भ महापर्व की ही भांति है, जो प्रत्येक बारह वर्ष पर भारतीय जन–जीवन को प्रभावित करता है। पितृपक्ष की अवधि मगध की धरती का यह महासंगम अथवा महाकुम्भ साल में एक बार पितरों के नाम समर्पित है और इसकी प्राचीनता भी कुंभ से कम नहीं।

पितरों की मुक्ति हेतु गया तीर्थ पधारे सनातन धर्मावलम्बी भक्तों की जानकारी के लिए कुम्भ पर्व की महत्ता और ऐतिहासिक परम्परा पर दृष्टिपात करते हुए उसके उद्भव एवं अन्य पावन स्थलों (तीर्थो) का भी वृतान्त प्रस्तुत करने का लोभ संवरित नहीं हो रहा है।

'कुम्भ' का सामान्य अर्थ 'घट' अर्थात् घड़ा होता है जिसमें जलादि द्रव पदार्थ रखे जाते हैं। 'कुम्भ' का संयोग तीर्थ के साथ कैसे जुड़ गया इसकी एक पौराणिक कथा है।

देवताओं और दानवों द्वारा क्षीर सागर का मंथन किया गया। सागर–मन्थन से 14 अलौकिक चीजें निकलीं 1. चन्द्रमा, 2. कामधेनु, 3. कौस्तुभ मणि, 4. श्वेत वर्णों का महान शंख, 5. चार दाँतों वाला ऐरावत हाथी, 6. उच्चैश्रवा अश्व, 7. रम्भा अप्सरा, 8. वारूणी (मदिरा) 9. शार्ग नामक धनुष, 16. पारिजात पुष्प, 11. हरि प्रिया, 12. तुलसी, 13. कालकूट विष, 14. अमृत घट धारण किए धन्वन्तरि।

अमृत घट को देख देवगण बहुत प्रसन्न हुए। देवगण को हर्षित देख असुर अमृत घट को धन्वन्तरि से छीनने लगे। घन्वन्तरि ने उसे नारायण को दे दिया। पर दैत्य नारायण से उसे छीनकर पूर्व की ओर भाग कर राजा बलि के देश सरयू के किनारे चले गए। देवता लोग भी पीछा करते हुए वहाँ आ पहुँचे। अमृत घटके लिए दोनों में संघर्ष शुरू हो गया। दैत्य अमृत घट लेकर जाह्नवी के उत्तर तीर की ओर आ गए। कुछ दूर के बाद गहन सेंमल (शाल्मली) के वन को देखकर बलि जिसके प्रधान थे वहीं ठहर गए।

भगवान ने मोहिनी का रूप धारण कर सभी को मोहित कर दिया। बलि ने मोहिनी से अमृत का देवो और दानवों में समान रूप से बँटवारा करने को कहा। मोहिनी के रूप में भगवान विष्णु ने पहले अतिथि देवताओं के बीच बाँटते हुए इसे खत्म कर देना चाहा पर राहु और केतु वेष बदलकर देवताओं की पंक्ति में बैठ गए। उन्हें पहचानते ही भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र चला दिया। राहु के दो टुकड़े हो गए पर अमृत का कुछ अंश उसके कंठ में चला गया। राहु के कबन्ध (शिर कटा शरीर) ने सहसा उठ मोहिनी को दबोच लिया पर देवताओं के सान्निध्य में वह शान्त हो गया। पर उसका कंठ से ऊपर का भाग कंठ गत अमृत होने के कारण इस लोक में अमर हो गया। ''भगवान विष्णु ने दैत्यों के उत्पात को देख जिस कुम्भ या घट में दो-तीन देवों के देने योग्य कुछ अशं बचे थे। उस उज्जवल गुणों से युक्त कुम्भ को बायें हाथ में धारण कर और विनता पुत्र गरूड़ पर चढ़कर ऊपर की ओर छलांग लगा दिया। अमृत कलश (कुम्भ) को गंगा जी में वहीं गिरा दिया और ऋषियों, पितरों, मुनियों और देहधारियों के सुधा पान हेतु वहीं छोड़ दिया।

ऋषिणां पितृणाम् चैव मुनीनाम् चैव देहिनाम्।
सुधा पानार्थम् उद्दिश्य कुम्भम् तत्र उत्सर्ज हा।।

चमस (कड़छुल) में जो अमृत अवशेष था उसे दूसरे-दूसरे स्थानों पर गिरा दिया। जिन-जिन दूसरे स्थानों पर अमृत गिरा उन-उन स्थानों (तीर्थों) का जल अमृतमय हो गया। उन स्थानों के नाम हैं - 1. प्रयागराज जो कुम्भ का प्रमुख क्षेत्र माना जाता है। यह गंगा, यमुना, और सरस्वती के संगम पर अवस्थित है। 2. गंगा के तट पर अवस्थित हरिद्वार, 3. पावन छिप्रा नदी के तट पर अवस्थित उज्जैन, 4. गौतमी नदी के तट पर अवस्थित नासिक बहु प्रचलित कुम्भ के क्षेत्र हैं।

''कुम्भ का चूँकि सूर्य की रश्मियों से संबंध है, इसलिए ये केवल चार नहीं 12 राशियों के अनुसार बारह होने चाहिए और 12 वर्षो के बाद इसका योग या छह वर्षो के बाद अर्द्ध कुम्भ का योग होना चाहिए।''

इन प्रमुख चार कुम्भ क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य कुम्भ-क्षेत्र हैं।

1. कुम्भ कोणम् - यह तमिलनाडु में अवस्थित है। आदि काल से कुम्भ क्षेत्र के रूप में यह सुख्यात रहा है।

2. सिमरिया घाट (बिहार) - सन् 2011 में गंगा नदी के तट पर सिमरिया घाट में कुम्भ लगा था जहाँ लाखों लोगों ने आकर मास भर कल्पवास किया था। 2017 ई० में यहाँ कुम्भ का लगना तय है।

3. पुरूषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथपुरी (ओडिशा) - यहाँ भी कुम्भ लगने का योग मिथिला मत से संभव है। यहाँ भी सिमरिया घाट की भाँति स्वामी चिदात्मन जी के प्रयास से कुम्भ लगना प्रारंम्भ हो चुका है।

अन्य पाँच स्थान

''जब सूर्य मीन राशि में स्थित होते हैं ब्रह्म पुत्र (कामाख्या) में, जब धनुराशि में स्थित होते हैं तब गंगा और सागर के संगम में, वृश्चिक राशि में होने पर ब्रह्म सरोवर (कुरू क्षेत्र में) में, कुर्म राशि में होने पर कृष्ण शासन (द्वारिकापुरी) में कन्या राशि में होने पर दक्षिण सिन्धु (रामेश्वरम्) में भी कुम्भ अपना पूर्ण स्वरूप प्राप्त करेगा, ऐसा स्वामी चिदात्मन जी महाराज का विश्वास है। कुम्भ जिन्होंने 2011 ई० में सिमरिया घाट (बिहार) में लगवाया था और 2017 ई० में वहाँ पूर्ण कुम्भ का लगना तय है।

''शाल्मली वन में (सिमरिया घाट) में मुरारि के चरण से उत्पन्न जाह्नवी उत्तर दिशा की ओर जाती हुई विशिष्ट है और महापुण्य दायिनी है और इसलिए यहाँ तुला राशि में सूर्य के होने पर कुम्भ लगता है जो 2011 में स्वामी चिदात्मन जी के नेतृत्व में अर्द्धकुम्भ के रूप में लगा और 2017 ई० में पूर्ण कुम्भ के रूप में लगेगा। भक्तगण इस पुण्य अवसर का लाभ उठाकर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

'लीलाधाम', 3/307 न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना

गया की प्राचीन साहित्य-साधना और साहित्यमाला

डॉ० राम-निरंजन परिमलेन्दु

बिहार में समस्यापूर्त्ति पत्रकारिता का श्री-गणेश जनवरी 1897, ई० में हुआ था। ''पटना कवि समाज'' की समस्यापूर्ति शीर्षक मासिक पत्रिका का प्रकाशन पटना से बाबा सुमेर सिंह के संरक्षण और ब्रजनन्दन सहाय 'ब्रज वल्लभ' के सम्पादन में प्रकाशित हुआ था और इसी पत्रिका के माध्यम से बिहार में समस्यापूर्त्ति पत्रकारिता का आरम्भ हुआ। गया में 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में 1908 ई० के आसपास पं० मुन्नू लाल खड़खौका के सम्पादन में साहित्य सरोवर मासिक द्विभाषी समस्यापूर्त्ति पत्रिका निकली थी।

तत्पश्चात् 1920 ई० पं. कान्हू लाल गुर्दा ने गया से समस्यापूर्त्ति की मासिक पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन आरम्भ किया। पं० कान्हूलाल गुर्दा गयापाल समाज में एक विद्वान कवि थे और उन्होंने ही 1905 ई० में वृहद् गया महात्म्य की रचना की थी, जिसका प्रथम व अंतिम प्रकाशन 1916 ई० में हुआ। गया में श्री विष्णुपद मंदिर में विद्वान कवि और अभिनव रामायण के रचयिता पं० कान्हू लाल गुर्दा (1867-1924 ई०) के सभा-पतित्व में 'साहित्य समाज' नामक साहित्यिक संस्था फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी, महाशिव रात्रि बुधवार विक्रम संवद 1976 को स्थापित हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी साहित्य की उन्नति, साहित्यक विषयक व्याख्यान, समस्यापूर्त्ति, गद्य और पद्य लेखन आदि के रूप में निहित था। प्रत्येक मास के प्रथम रविवार को इसकी गोष्ठी का आयोजन विष्णुपद मंदिर परिसर में किया जाता था। उक्त साहित्य समाज के तत्त्वावधान में ''साहित्यमाला' नामक समस्यापूर्त्ति की मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया था जिसका प्रथम अंक चैत्र शुक्ल 1, विक्रम संवद्व 1977 अर्थात् 1920 ई० को प्रकाशित हुआ था।

तत्कालीन गया और आसपास के अनेक नगरों के कवियों का पूर्ण सहयोग इसे प्राप्त था। पं० मोहन लाल महतो वियोगी के साहित्य निर्माण में पं०कान्हू लाल जी, साहित्य समाज और साहित्यमाला का बहुत बड़ा योगदान रहा। गुर्दा जी और साहित्यमाला से ही प्रभावित होकर वियोगी जी ने काव्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। पं० गुर्दा ने साहित्य माला के प्रवेशांक (चैत्र शुक्ल: संवत् 1977) में स्वयं लिखते हैं कि हमलोग भारतवासी सदगुण ग्राही गणों को चाहिये कि परम कारूणीक परमात्मा को सच्ची भक्ति के साथ स्मरण करते हुए अपनी मातृभाषा और मातृभाषा के साहित्य की सेवा में दत्तचित्त हों)।

(साहित्य समाज के सभापति पं० कान्हू लाल गुर्दा के अतिरिक्त पं० पन्ना लाल भैया 'छैल,' देव नारायण द्विवेदी 'विधु-कवि,' माधो लाल विट्ठल सजिले कवि, लक्ष्मण लाल गुर्दा, मंगला प्रसाद पाठक, मनोज कवि, गोविन्द, लाल उपाध्याय, मणिलाल कवि, गोपाल लाल देवनाहर, लक्ष्मी नारायण प्रसाद, रसमाघुरी कवि, पं० वासुदेव पाठक, पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, हबीन आदि गया के कवियों के अतिरिक्त पं० बक्श राम पाण्डेय (बलिया), गिरिजा प्रसाद मिश्र (हजारीबाग), पं० विशेश्वर उपाध्याय (जोरी), रामकृष्ण दास (छपरा) आदि अनेक कविगण साहित्यमाला के नियमित कवियों में थे।

साहित्यमाला के प्रथम अंक में गोरी शीर्षक पर समस्या पूर्ति की गई थी जिसकी पूर्ति अनेक कवियों ने अत्यन्त कलात्मक ढंग से की थी। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों में गया में समस्यापूर्त्ति की परम्परा अत्यन्त प्रखर थी। यह परम्परा गया में ही नहीं, काशी अवन्ति आदि प्राचीन नगरों में भी प्रखर

रूप से विद्यमान थी। इस समस्यापूर्त्ति रचनाओं में सफलता प्राप्त करने के बाद ही कोई भी कवि काव्य रचना के अन्य माध्यम में प्रवीणता प्राप्त कर पाता था। यह उस युग की कुछ ऐसी ही प्रवृत्ति थी। समस्यामूर्त्ति के माध्यम से ही पं० वियोगी ने साहित्य के क्षेत्र में प्रथम प्रवेश किया था। उनकी अत्यधिक रचनाओं का प्रकाशन सर्वप्रथम साहित्य माला में ही हुआ था। साहित्य माला के हरेक अंक के मुख पृष्ठ पर बासुरी बजाते श्री कृष्ण की आकर्षक छवि देखी जा सकती है। इस पत्रिका के एक अंक का चार आना और वार्षिक मूल्य 2 रु० अंकित है। लक्ष्मी प्रेस गया से मुद्रित इस पत्रिका के बाद के अंक में कभर लगाकर और पृष्ठ संख्या बढ़ाकर इसे आकर्षक रूप-सज्जा प्रदान किया गया।

इस पत्रिका के अंक के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इसके हरेक अंक में समस्यापूर्ति के साथ शिक्षा, धर्म, कला व समाज से जुड़ी बातों को स्थान दिया जाता था। समस्या 'गोरी' की पूर्ति में पं० कान्हू लाल गुर्दा लिखते हैं :-

मौज मृदङ्गनि कि धुनि धूम धमारिन जारिन की रसवोरी
छाई गुलाल की लाल घटा बरसै रङ्ग केशरि कोरि कमोरि।।
''कान्ह'' लिये सङ्ग छैल छबीले करै ब्रज गैलिन फैल अथोरी।
मैन समाज में फागु को राज में कैसे के लाज बचावैगी गोरी।।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में अस्वस्थ्य रहने के कारण पं० कान्हू लाल पत्रिका निकालने में कम समय देने लगे, फलतः पत्रिका का प्रकाशन क्रम बाधित होने लगा और 1924 में उनकी आयु के बाद तो इसका प्रकाशन ही बंद हो गया। पर 1920 के दशक में गया के साहित्यकारों की प्राणवन्त पत्रिका साहित्यमाला ही थी, जिसे सम्पूर्ण गया क्षेत्र का सर्वप्राचीन दूसरा गतिशील पत्रिका जाना समझा जा सकता है। सचमुच गया के पत्रकारिता-जगत् के प्रारम्भिक दौर का अनुपम दास्तान है 'साहित्य माला' जिसकी मूल प्रति अब अनुपलब्ध ही नहीं दुलर्भ हो गई है।

दक्षिण दरवाजा, गया
मो०-9470853118

✦

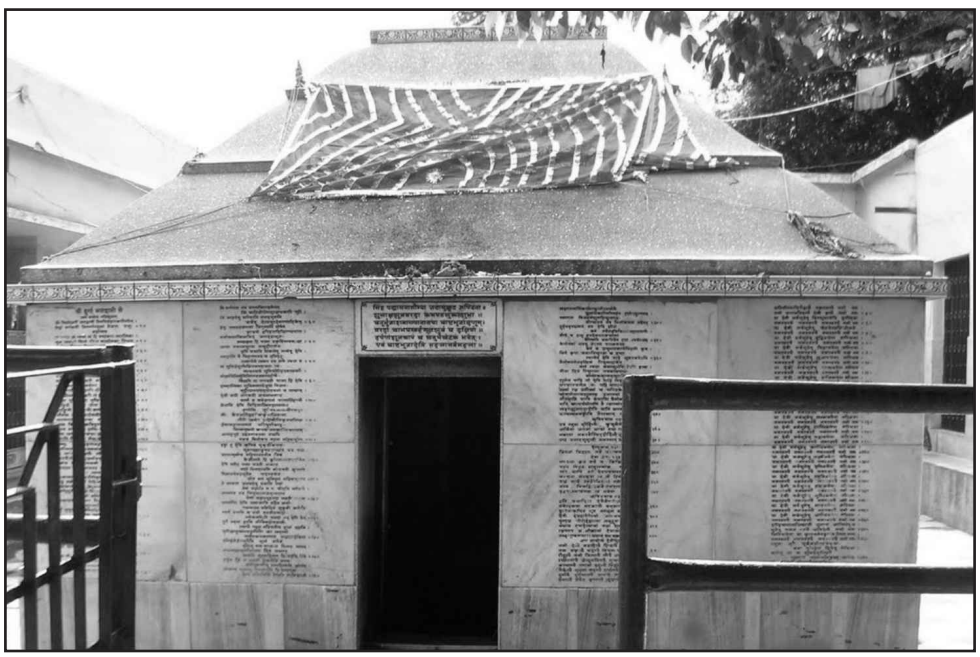

मंगलागौरी मंदिर

भवबंधनों से मुक्ति मानव का लक्ष्य

श्रीमती सुमित्रा कुमारी

जीव को तीन भवबंधनों में बँधा हुआ माना गया है। हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी और कमर में रस्सी से बँधे हुए चोर-तस्कर इधर से उधर ले जाए जाते हैं। घोड़े के पैरों में पिछाड़ी, गले में रस्सी और मुँह में लगाम लगी रहती है। भवबंधन भी वासना, तृष्णा और अहंता के तीन ही हैं। इन्हीं के कारण निरन्तर खिन्न-उद्विग्न रहना पड़ता है। इन तीन के अतिरिक्त मानव जीवन में अशान्ति छाई रहने का और कोई कारण नहीं। इन्हीं को काम, क्रोध, लोभ कहा गया है। इन्हीं तीनों के सम्मिश्रण में अनेकों प्रकार के मनोविकार उठते हैं और इन्हीं की प्रेरणा से अनेकानेक पापकर्म बन पड़ते हैं। इन तीनों बंधनों को खोला-काटा जा सके तो समझना चाहिए, बंधन मुक्ति का के खुलने पर तीन दिव्य शक्तियों के दर्शन एवं अनुग्रह का लाभ मिलने की बात कही गई है।

साधना विज्ञान के तत्त्वदर्शी वैज्ञानिकों ने तीन ग्रंथियों का विस्तृत विवेचन एवं निरूपण किया हैं। उन्हें खोलने के साधन एवं विधि-विधान बताए हैं। उनके नाम हैं, ब्रह्म ग्रंथि, विष्णु ग्रंथि, रूद्र ग्रंथि। रूद्र ग्रंथि का स्थान नाभि स्थान माना गया है, इसे अग्निचक्र भी कहते हैं। माता के शरीर से बालक के शरीर में जो रसरक्त प्रसव के उपरान्त नाल काटने पर ही माता और सन्तान के शरीरों का संबंध विच्छेद होता है। इस नाभिचक्र द्वारा ही विश्वब्रह्मांड की वह अग्नि प्राप्त होती रहती है।

जिसके कारण शरीर को तापमान मिलता और जीवन बना रहता है। स्थूल शरीर को प्रभावित करने वाली प्राण-क्षमता का केन्द्र यही है। शरीर शास्त्र के अनुसार नहीं, अध्यात्म शास्त्र के सूक्ष्म विज्ञान के अनुरूप प्राण धारण का केन्द्र यही है। कुण्डलिनी शक्ति इसी नामिचक्र के पीछे अधोगभाग में अवस्थित है। मूलधार चक्र का मुखद्वार नामि स्थान में है और अधोगभाग में मल-मूत्र छिद्रों के मध्य केन्द्र हैं। इस केन्द्र के जागरण-अनावरण का जो विज्ञान-विधान है यह त्रिपदा ब्रह्म् के प्रथम चरण का क्षेत्र समझा जा सकता है।

दूसरी ग्रंथि है विष्णु ग्रंथि। यह मस्तिष्क मध्य ब्रह्मरंध्र में है। आज्ञाचक्र, द्वितीय नैत्र इसी को कहते हैं। पिट्यूटरी और पीनियल हारमोन ग्रंथियों का शक्ति चक्र यहीं बनता है। मस्तिष्क के खोखले को विष्णुलोक भी कहा गया है। इसमें भरे हुए भूरे पदार्थ को क्षीरसागर की उपमा दी गई है। सहस्त्रार चक्र को हजार फन वाला शेष सर्प कहा गया है। जिसपर विष्णु भगवान सोए हुए हैं। ब्रह्मरंध्र की तुलना पृथ्वी के ध्रुव प्रवेश से की गई है। अन्नत् अंतरिक्ष में अंतरग्रही प्रचंड शक्तियों की वर्षा निरन्तर होती रहती है। ध्रुवों में रहने वाला चुंबकत्व इस अंतरग्रही शक्ति वर्षा में से अपने लिए आवश्यक संपदाएँ खींचती रहती है। पृथ्वी के वैभव की जड़े इसी ध्रुव प्रदेश में है। वहाँ से उसे आवश्यक पोषण निखिल ब्रह्माण्ड को सम्पदा काया एक स्वतंत्र पृथ्वी है। उसे अपनी अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर इसी ब्रह्मरंध्र के माध्यम द्वारा उप-लवध होता है। यह ध्रुवप्रदेश अवरूद्ध रहने से, मूर्च्छित स्थिति में पड़े रहने से सूक्ष्मजगत के अभीष्ट अनुदान मिल नहीं पाते और पिछड़ेपन की आत्मिक दरिद्रता छाई रहती है। विष्णुग्रंथि के जाग्रत होने पर ही वह द्वार खुलता है। दूर दर्शन, दूर श्रवण, भविष्य-ज्ञान, विचार-संचालन प्राण-प्रहार आदि अनेक योग और तंत्र में वर्णित शक्तियों का निवास इसी क्षेत्र में है। सिद्धियों की चौंसठ योगनियाँ यहीं समाधिस्थ बनकर लेटी हुई हैं। उन्हें यदि जगाया जा सके तो मनुष्य सहज ही सिद्ध पुरूष बन सकता है, उनकी अविज्ञान क्षमता विकसित होकर देवतुल्य समर्थता का लाभ दे सकती है।

यह भ्रम ही तो है जो मनुष्य को पथभ्रष्ट

करता और उसके अनुपम सौभाग्य को व्यर्थ की बरबादी में नष्ट करता है। इस विपत्ति से छुटकारा मिल सकने के साधनात्मक उपाय को विष्णुग्रंथि को खोलना कहते हैं। यह द्वार खुल जाने पर आनंत आकाश में बिखरी पड़ी बहुमूल्य ज्ञान सम्पदा को बटोर लेना भी सहज सम्भव हो सकता है। सामान्य शिक्षा से जितना जिस स्तर का ज्ञान सम्पादन किया जात है, उसकी तुलना में कहाँ ऊँचा और कहीं अधिक सुविस्तृत, परिकृत ज्ञान जाग्रत मनः संस्थान से अनायास ही उपलब्ध किया जा सकता है। विष्णुग्रंथि के जागरण से मिलने वाली सफलता के अनुपात से इस प्रकार के अनेकों दिव्यज्ञान साधना प्रयोगों द्वारा सहज ही उपलब्ध होने लगते हैं। त्रिपदा गयात्री का दूसरा चरण विष्णु ग्रंथि खुलने से संबंधित है।

त्रिपदा की तीसरा चरण ब्रह्मग्रंथि से संबंधित है। इसका स्थान हृदयचक्र माना गया है। इसे ब्रह्मचक्र भी कहते हैं। ब्रह्म परमात्मा को कहते हैं। भावश्रद्धा, संवेदना एवं आकांक्षायों का क्षेत्र यही है। शरीष्शास्त्र के अनुसार भी रक्त का संचार एवं संशोधन करने वाला केन्द्र यही है। इस धड़कन को ही पेंडुलन की खट-खट की तरह शरीर रूपी घड़ी का चलना माना जाता है। अध्यात्मशास्त्र की मान्यता इससे आगे की है। उनके अनुसार हृदय की गुहा में प्रकाश ज्योति की तरह यहाँ आत्मा का निवास है। परमात्मा भावरूप में ही अपना परिचय यहाँ मनुष्य को देते हैं। श्रद्धा और भक्ति के शिकंजे में ही परमात्मा को पकड़ा जाता है। यह सारा मर्मस्थल यहीं है। किसी तथ्य का हृदयंगम होना किसी प्रियजन का हृदय में बस जाना जैसी उक्तियों से यह प्रतीत होता है कि आत्मा का स्थान-निरूपण इसी क्षेत्र में किया गया हैं उर्दू का प्रसिद्ध शेर है - ''दिल के आइने में है तस्वीर यार की, जब जरा गरदन झुकाई देख ली।''

हृदय चक्र ब्रह्मग्रंथि है। वहाँ से भावनाओं का, आकांक्षा-अभिरूचि का परिवर्त्तन होता है। जीवन की दिशाधारा बदलती है। बाल्मीकि, अंगुलिमाल, अंबपाली, विहवमंगल, अजामिल आदि का प्रत्यावर्त्तन-हृदय परिवर्त्तन ही उन्हें कुछ से कुछ बना देने में समर्थ हुआ। जीवन का समग्र शासनसूत्र यहीं से संचालित होता है। आकांक्षाएँ विचारों का निर्देश देती है और मनः संस्थान को अपनी मरजी पर चलाती है। मन के अनुसार शरीर चलता है। शरीर का कर्म करता है। कर्म के अनुरूप परिणाम और परिस्थितियाँ सामने आती हैं। परिस्थितियों के सुधार मस्तिष्क का अधिपति हृदय है। प्रियतम को हृदयेश्वर और हृदयेश्वरी कहा जाता है। मानवी सत्ता पर स्वामित्व हृदय का ही है।

तेज प्रवाह में बहती हुई नदी के मध्य जो भँवर पड़ते हैं, उनकी शक्ति सामान्य प्रवाह की तुलना में सैकड़ों गुणा अधिक होती है। सुदृढ़ नावों, जहाजों और महलों को भँवर में फँसकर डूबते देखा गया है। हवा गरम होने पर चक्रवत उठते हैं। उनकी तूफानी शक्ति देखते ही बनती है। मजबूत छत, छप्पर, पेड़ और मकानों को वे उठाकर कहीं से कहीं पटक देते हैं। रेत को आसमान में छोड़ते हैं और आँधी तूफान के बवंडर उठकर अपने प्रभावक्षेत्र को बुरी तरह अस्त-व्यस्त कर देते हैं। ऐसे ही कुछ चक्रवत केन्द्र भँवर चक्र अपने शरीर में भी है। उनकी गणना षटचक्रों और नवचक्रों के रूप में की जाती है। छोटे चक्र और भी हैं। जिनकी गणना 108 तक की गई है। इन सब में तीन ग्रंथियाँ प्रधान हैं। रूद्रग्रंथि, विष्णुग्रंथि और ब्रह्मग्रंथि तीनों ही शरीर को परस्पर जोड़े हुए हैं और सूक्ष्म जगत के साथ आदान-प्रदान का सिलसिला भी बनाए हुए हैं। स्थूलशरीर नाभिचक्र के नियंत्रण में है। सूक्ष्म शरीर पर आज्ञाचक्र का कारण शरीर पर हृदय चक्र का आधिपत्य है। ताले खोलने की चाबी डालने के छिद्र यही तीन हैं। योगाभ्यास से इन्हीं की साधना को रूद्र, विष्णु और ब्रह्मा की साधना माना गया है। इसी समूचे सत्ता क्षेत्र को त्रिपदा साधना विहानी की परिधि कहा गया है।

गुणों की दृष्टि से त्रिपदा को निष्ठा, प्रज्ञा और श्रद्धा कहा गया है। निष्ठा का अर्थ है - तत्परता - दृढ़ता। प्रज्ञा कहते हैं - विवेकशीलता-दूरदर्शिता को श्रद्धा कहते हैं आदर्श वादिता और उत्कृष्टता को

कर्म के रूप में निष्ठा गुण के रूप में प्रज्ञा और स्वभाव के रूप में श्रद्धा। श्रद्धा की गरिमा सर्वोपरि है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों के परिष्कार का परिचय इन्हीं तीनों के आधार पर मिलता है। गुण, कर्म, स्वभाव ही किसी व्यक्तित्व की उत्कृष्टता के परिचायक होते हैं।

त्रिपदा का एक पक्ष सृजनात्मक है दूसरा ध्वंसात्मक एक आध्यात्मिक है दूसरे भौतिक। अध्यात्म के सृजन पक्ष को गायत्री कहते हैं और भौतिक विज्ञान पक्ष को सावित्री। अवांछनीयताओं के निराकरण का उत्तरदायित्व भी सावित्री का है। पौराणिक गाथा के अनुसार इन्हें ब्रह्मा जी की दो चर्चा अधिक हुई है। श्रुत ने 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय''- मृत्योर्माऽमृतं गमय' के रूप में त्रिपदा के तीन चरणों की अभ्यर्थना की गई अैर तृप्ति, तृष्टि एवं शान्ति का वरदान माँगा है।

दूसरे सावित्री पक्ष की चर्चा कम ही हुई है, पर है वह भी महत्वपूर्ण पक्ष। खेत जोतने से लेकर फसल पकने तक की प्रक्रिया लम्बी और समयसाध्य है। काटने का काम तो दो-चार दिन में ही पूरा हो जाता है। शरीर के परिपोषण में ही अधिक समय लगता है। बीमार पड़ने पर सुई लगाने पर ऑपरेशन होने का काम तो यदा-कदा ही होता है। मित्रता निर्वाह में ही जीवन का अधिकांश भाग बीतता है। शत्रु से लड़ने के अवसर तो थोड़े ही आते हैं। भौतिक उपार्जन और उपयोग के लिए तो काया अपने आप ही काम करती रहती है, संतुलन बनाने के लिए आध्यात्मिक प्रयत्नों पर ही जोर देना पड़ता है। ऐसे ही अनेक कागजों से त्रिपदा के अध्यात्म पक्ष का ही विवेचन और विधान शास्त्रकारों ने विस्तारपूर्वक बनाया है। यह दक्षिणमार्ग है, इसे देवयान भी कहते हैं। यह देवत्व का लक्ष्य प्राप्त कराती है।

पुस्तकालयाध्यक्षा, रामलखन सिंह यादव कॉलेज, गया

✦

य एवं हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उयौ तौ न विजानीतो नाथं हन्ति न हन्यते।।

(गीता)

जो व्यक्ति इस आत्मा को मारने वाला समझता है तथा जो इसको मरा मानता है, वे दोनो ही नहीं जानते (अर्थात् अज्ञानी हैं); क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी का मारता है और न ही किसी के द्वारा मारा जाता है।

पिता का श्राद्ध करने गयाजी आये थे चैतन्य महाप्रभु

श्री मुकेश कुमार सिन्हा

भारत वर्ष में महज अंगुलियों पर गिनने लायक है। वैसे ही शहर हैं, जिनके नाम के अंत में आदरसूचक शब्द 'जी' लगते हैं। विभिन्न कालखंडों को अपने गर्भ में समेटे गया को यह सौभाग्य प्राप्त है। ऐतिहासिक महत्ता से युक्त इस शहर को लोग श्रद्धा से 'गयाजी' कहते हैं।

गयाजी, काशी और प्रयाग को त्रिस्थली कहा गया है, लेकिन उनमें गयाजी का स्थान सर्वोपरि है। वह पावन धरती विविध गुणों से लबरेज है। धर्म, संस्कृति एवं संस्कार के संवर्द्धन में इस धरा की कोई सानी नहीं है।

गयाजी वह पवित्र भूमि है, जहाँ पितरों को मोक्ष मिलता है। यही वह पावन धरा है, जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। और तो और इसी पावन भूमि पर चैतन्य महाप्रभु को दीक्षा मिली थी। 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण, हरे-हरे, हरे राम, हरे राम, राम-राम, हरे-हरे संकीर्तन के आध्यात्मिक का सृजन इसी धाम पर हुआ है। आज यह मंत्र शहर-शहर और गाँव-गाँव में इस कदर लोकप्रिय हो गया है कि हर कोई सहज तौर पर इसे गुनगुनाने और गाने को उत्सुक रहते हैं।

बंगाल के नदिया गाँव में 1486 की फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था। नीम के पेड़ के नीचे महाप्रभु के जन्म होने से इनका बचपन का नाम निमाई था। वैसे, विश्वंभर, गौरंग, गौर हरि, गौर सुंदर आदि नामों से भी महाप्रभु ख्यात थे। बचपन से ही भक्ति भाव में निमाई लीन रहा करते थे।

कहते है कि वर्ष 1509 में 23-24 वर्ष की अवस्था में निमाई गया आये थे। उनके यहाँ आने का उद्देश्य पिता एवं पूर्वजों का श्राद्ध करना था। गया प्रवास के दौरान उनकी भेंट ईश्वरपुरी नामक संत से हुई थी। भक्तिभाव में लीन रहने के कारण संत ने निमाई को 'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तब, शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झांझ, मंजीरे आदि वाद्य-यंत्र बजाकर व ऊँचे स्वर में गाकर निमाई ने हरि नाम संकीर्तन करना शुरू किया। फिर 'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण, हरे-हरे, हरे राम, हरे राम, राम-राम, हरे-हरे का सृजन हुआ, जिसे तारकब्रह्म महामंत्र कहा जाता है। निमाई जब इस महामंत्र को वादन के बीच गाते थे, तो ऐसा लगता था कि मानों वे ईश्वर का आह्वान कर रहे हैं।

सन् 1510 को श्री पाद केशव भारती से संन्यास की दीक्षा लेने के बाद निमाई का नाम कृष्ण चैतन्य देव हो गया। नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज शिष्य बने। इसी काल खंड में गृहस्थ आश्रम त्याग कर चैतन्य महाप्रभु के रूप में ख्यात हुए। संन्यास लेने के बाद चैतन्य महाप्रभु पहली बार जगन्नाथ मंदिर पहुँचे। वहाँ भगवान की मूर्त्ति को देखकर वे भाव-विभोर हो गये। भक्तिभाव में इस कदर लीन होकर नृत्य करने लगे कि मूर्छित हो गये। तब प्रकांड विद्वान सार्वभौम भट्टाचार्य महाप्रभु की भक्ति से प्रभावित हुए और उन्हें घर ले गये। होश में आने के बाद शास्त्र की ढेरों बातें हुई। बाद में सार्वभौम भट्टाचार्य शिष्य बन गये। कहते हैं कि सार्वभौम भट्टाचार्य ने ही गौरांग की शत-श्लोकी स्तुति रची, जो आज चैतन्य शतक के नाम से ख्यात महाप्रभु ने गौड़ीया सम्प्रदाय की स्थापना की और विलुप्त वृंदावन को बसाया। भगवान श्री कृष्ण के प्रति इनकी भक्ति के फलस्वरूप ही आज श्री कृष्ण के अनुयायियों की संख्या बढ़ी है।

1533 में 47 वर्ष की आयु में रथ-यात्रा के दौरान चैतन्य महाप्रभु की मृत्यु हुई। भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में से एक चैतन्य के साथ गयाजी का संबंध होना इसकी महत्ता में और चार चाँद लगा रहा है। गया न केवल भगवान बुद्ध की ज्ञानस्थली व पितरों की मोक्षभूमि है, वरन् यही वह पावन भूमि है, जहाँ चैतन्य महाप्रभु ने हरि नाम संकीर्तन करना शुरू किया था।

भविष्य निधि निदेशालय
वित्त विभाग, बिहार, पटना
मो० - 9304632536

ग्लोबल वार्मिंग : भयावह स्थिति

डॉ० यू. एस. प्रसाद

मनुष्य पृथ्वी का सबसे विकसित प्राणी है। अत: पृथ्वी की सुरक्षा की सबसे अधिक जिम्मेदारी भी इसी की है। मगर आज विकास की अंधी दौड़, प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर पृथ्वी को विनाश की ओर ले जा रही है। विज्ञान की उन्नति ने जहाँ विकास के तमाम रास्ते खोले हैं, वही यह विनाश का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन ने, उर्जा के विभिन्न स्रोतों की खोज ने, गैर अनुशासित जीवन-पद्धति ने तोहफे में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा दे दिया है।

ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैसों का अत्याधिक उत्सर्जन है जिसमें प्रमुख है - कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन। वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को उम्मीद से ज्यादा खतरनाक बताया है। पृथ्वी के तमाम हिस्सों में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा साल दर साल बढ़ती जा रही है। वैज्ञानिकों ने कहा कि पृथ्वी को, भविष्य में जितनी गर्म होने की आशंका है उससे कहीं ज्यादा गर्म हो सकती है। पृथ्वी का तापमान पिछले 100 वर्षो से हर वर्ष 0.5°C - 0.8°C तक बढ़ रहा है मगर इक्कीस सौ ई० तक यह दर 5°C तक जाने की आशंका है। पृथ्वी के बढ़ रहे तापमान और कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा दो गुनी हो गयी है। दक्षिणी ध्रुव पर चालीस लाख वर्षो में पहली बार इस खतरनाक गैस की मात्रा चार सौ पार्ट्स प्रति मिलियन (पी०पी०एम०) को पार कर गई है। यहाँ पिछले चार वर्षो से कार्बन की मात्रा 2 पवी०पी०एम० से ज्यादा की सालाना वृद्धि दर्ज की जा रही है। जंगलों के घटते दायरे और कोयले के इस्तेमाल में अभूतपूर्व वृद्धि के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है।

नेशनल आर्सेनिक एण्ड एटमॉसफेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एन०ओ०ए०ए०) के वैश्विक ग्रीनहाउस गैस नेटवर्क के शीर्ष वैज्ञानिक पीटर टांस ने ताजा स्थिति की जानकारी दी है। शोध से पता चला है कि हाल के वर्षो में मौसम ज्यादा संवेदनशील हो गया है। मौसम की यह अनिश्चितता बढ़ती गर्मी का संकेत है। डेनमार्क और चीली के वैज्ञानिकों के बीते 560 लाख साल के मौसम के अध्ययन से भी यही बात सामने आयी है।

ब्रिटेन के महान भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग जिसे आधुनिक युग का आइन्सटीन भी कहा जाता है, ने मनुष्यों को मनुष्यता के लिए सबसे बड़े खतरों से आगाह किया है। उनकी नजर में पर्यावरण प्रदूषण, लोगों का लालच और बेवकूफी आज के सबसे बड़े खतरे हैं। 74 वर्षीय इस वैज्ञानिक ने बढ़ती आबादी पर भी चेतावनी दी है। गौरतलब है कि पिछले छह वर्षो में आबादी 50 करोड़ बढ़ी है। अगर इसी दर से आबादी बढ़ती रही तो 2100 तक दुनिया की आबादी ग्यारह अरब हो जाएगी। प्रदूषण में वृद्धि समूचे विश्व के लिए चिंता का विषय है। पिछले पाँच वर्षो में प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण शहरी इलाकों में 80% से ज्यादा लोग इसके असुरक्षित स्तर में जी रहे हैं। इसका नतीजा लोगों में दमा का बढ़ता प्रकोप है। अमेरिका जैसे विकसित देश में जहाँ सन् 2001 ई० में हर 12 में से 1 व्यक्ति को अस्थमा था वहीं यह आँकड़ा 2009 में बढ़कर 7 व्यक्ति हो गया है। भारत में भी अस्थमा के मरीजों की संख्या में गुणोत्तर वृद्धि हुई है। पिछले 56 वर्षों अस्थामा के मरीजों में 70% वृद्धि हुई है।

एक एन०जी०ओ० रिपोर्ट के अनुसार यूरोपियन यूनियन के देशों में पिछले एक वर्ष में 23000 लोगों की मौत कायेले पर आधारित पावर प्लांट से निकलने वाले धुँए से हुई। वहीं अमेरिका में यही आँकड़ा 13000 लोगों का है। मगर सबसे

भयावह स्थिति भारत की है, यहाँ लगभग सवा लाख लोगों की मौत कायेले पर आधारित पावर प्लांट से निकलने वाले धुँए से हुई।

ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में हो रही वृद्धि सम्पूर्ण विश्व के लिए चिंता का विषय है। पिछले वर्षों पेरिस में क्लाइमेट सम्मिट में सभी देशो ने ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को रोकने का वादा किया था, पर अभी तक कुछ नहीं हुआ।

पिछले दिनों भारत सरकार ने प्रदूषण रोकने के लिए कई कदम उठाए जिनमें जगह-जगह वृक्षारोपण प्रमुख है। उत्तर प्रदेश सरकार ने लगभग 10 लाख वृक्ष लगाने की घोषणा की। मगर इतना ही पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है कि हर व्यक्ति सचेत हो और अपने स्तर पर प्रदूषण को रोकने का प्रयत्न करें। अधिक-से-अधिक मात्रा में वृक्ष लगायें। अपनी चिंतन धारा को बदलकर हर मनुष्य को जागरूक होना होगा।

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिए लोगों को चाहिए कि बिजली से चलने वाले साधनों की अपेक्षा सौर उर्जा से चलने वाले साधनों का प्रयोग करें। दैनिक जीवन में यात्रा के लिए जहाँ तक संभव हो सार्वजनिक संसाधनों का ही प्रयोग करें। जल का दुरुपयोग न करें। आधुनिक चीजों के उपयोग को कम कर घरेलू एवं देशी वस्तुओं का इस्तेमाल बढ़ाना चाहिए। जब हम सभी ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निबटने का प्रयास करेंगे तभी हम इससे छुटकारा पा सकेंगे।

क्षेत्र-निदेशक
डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल
गया प्रक्षेत्र, गया।

✦

पितृतीर्थं गया नामं सर्वतीर्थवरं शुभम्।
यत्रास्ते देव देवेशः स्वमेन पितामहः।।

''गया तीर्थ सभी पितृतीर्थों में सर्वश्रेष्ठ तथा मंगलकारी है। इस तीर्थ पर सभी देवता विराजते हैं। यहाँ ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि सभी देवताओं का वास है।''

मनुष्य जीवन की सार्थकता

प्रो० (डॉ०) राधे मोहन प्रसाद

जीवन को जो मनुष्य शरीर की प्राप्ति हुई है। वह बहुत पुण्यों के उदय के बाद, इसीलिए मनुष्य को अपने शरीर का उपयोग परमात्मा की प्राप्ति में लगाना चाहिए इसी में इसकी सार्थकता है। इस संसार को चलाने वाला परमात्मा को प्राप्त करना ही इस मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। वह परमात्मा सत्त-चित्त आनन्द है। संसार में आकर प्राणी भूल जाता है कि उसने यह मनुष्य जन्म किसलिए प्राप्त किया। उसे बिल्कुल याद नहीं रहता कि उसका जन्म परमात्मा को पाने के लिए हुआ है। जब वह मृत्यु के नजदीक आता है या किसी भयानक रोग से ग्रस्त हो जाता है जिसमें उसकी मृत्यु निश्चित है तो फिर भयानक पछतावा होता है। जबतक शरीर स्वस्थ है, इन्द्रियाँ सशक्त हैं, मन प्रबुद्ध है और बुद्धि काम करती है तभी तक हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़कर जीवन को सफल बना सकते हैं। इन सबके असमर्थ होने पर कुछ भी नहीं हो पाता। मनुष्य अकेला ही जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त करता है। अपने हाथ से ही शुभ अशुभ कार्य करता है और अपने पाप-पुण्य का फल अकेले ही भोगता है। जन्म के साथ ही सब बिखर जाते हैं। मनुष्य जन्म से स्थापित इन्हीं संबंधों को सत्य भक्ति से जीवन भर विरक्त रहता है। अपने लिए जीवन का सुख केवल इन्हीं संबंधों में ढूँढता है। कहीं कर्त्तव्य तो कहीं अधिकार के नाम पर मनुष्य जीवन भर इन संबंधों के लिए लिप्त रहता है पर उसे मिलता कुछ नहीं है। कभी कभी तो उसके लिए यह संबंध तनाव का भी कारण बनते हैं। अपने परिवार के भरण पोषण के लिए मनुष्य हर तरह के कर्म करता है। कहीं शिष्टाचार तो कहीं भ्रष्टाचार करने के लिए मनुष्य हर तरह के कर्म करता है। वह नहीं जानता कि उसके फल और कुफल के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा, उसे दूसरा कोई भी साथ नहीं देगा, उसे स्वयं भोगना है।

अब तक जो भूल हो गयी सो हो गयी, उसके लिए पछताने से कोई लाभ नहीं है। जीवन के जितने दिन बचे हैं, उन्हीं को दृढ़ संकल्प करके गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भगवान के भजन-चिन्तन में लगाकर जीवन को सफल कर लेना चाहिए। एक बात हमेशा मन में रहना चाहिए कि मनुष्य इस पृथ्वी पर अकेला आया है और अकेला ही उसे जाना है। सभी अपने पराये यहीं छुट जायेंगे। मनुष्य जीवन बार-बार मिलने को नहीं, अत: इस अवसर का लाभ उठा लेना चाहिए। गर्भावस्था की स्थिति में प्राणी रो रोकर प्रभु से प्रतिज्ञा करता है कि 'इस जीवन को आपके भजन-स्मरण में लगाऊँगा'। पर पृथ्वी पर आते ही उस प्रतिज्ञा को भूलकर यहाँ के मोह-माया के जाल में फंसकर रह जाता है। 'आये थे हरिभजन को ओहन लगे कपास' वाली उक्ति चरितार्थ होने लगती है। प्राणी को चौरासी लाख योनियों में उसे कितने ही रूप में जन्म लिया, बताना संभव नहीं है क्योंकि पाप और पुण्य के आधार पर ही ये जन्म प्राप्त होते हैं। जब जीवात्मा का पुण्य उदय होता है तो मनुष्य शरीर की प्राप्ति होती है। लेकिन यह मानव शरीर भी क्षणभंगुर है, कब हमें इसे छोड़कर जाना पड़े यह किसी को ज्ञात नहीं है। इसीलिए इसका अच्छे कार्यो के लिए उपयोग कर लेना चाहिए। समय की धारा में बेजान मुर्दा भी बहता रहता है। वह लहरों के थपेड़ों में उड़ता-गिरता और पटखनी खाता रहता है। उसका न तो कोई लक्ष्य होता है और न ही वह उस तक पहुँचने के उद्देश्य से अपने पलपल का सदुपयोग करने में समर्थ होता है। बेजान-निष्प्राण हो उसे तो सिर्फ बहना आता है। समय के सदुपयोग के संदर्भ में अपनी स्थिति को टटोलना होगा कि कहीं हम भी तो ऐसे नहीं? जो भी जीवन के प्रवाह में अपने समय के सदुपयोग के लिए तत्क्षण तत्पर होना चाहिए, काल का नियम ही है अनवरत प्रवाह। अत: हमें ऐसी कार्ययोजना बनानी होगी जिससे प्रत्येक वर्ष के साथ हर दिन और हर पल के उद्देश्य पूर्ण उपयोग का अवसर हो। व्यक्ति की स्थिति के साथ ही सम्बन्ध भी बदलते रहते है। हमेशा एक जैसी स्थिति कभी और किसी के साथ नहीं रहती। अच्छे या बुरे कर्म कभी नहीं मिटते। सांसरिक मोह माया छुटने के बाद ही ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति होती है।

✦

जगजीवन कॉलेज, गया

होइहैं सोई जो राम रचि राखा ...

श्रीमती गीता कुमारी

बचपन से ही मेरी माँ हमेशा पढ़कर सुनाती थी और समझाया भी करती थी कि 'होइ हैं सोई जो राम रचि राखा।' एक दिन उसने कहा। भगवान का कहा सदा सत्य होता है, अत: इस पर बहस या तर्क नहीं करना चाहिए। मैं थोड़ा बहस करने लगी; इस पर उसने बताया कि एक बार स्वयं भगवान ने ऋषि नारद को समझाया कि ईश्वर की इच्छा से ही किसी का भला या बुरा होता है। परमात्मा अपने भक्त को बहुत प्यार करते हैं। भक्त का कभी बुरा नहीं करते। किसी-न-किसी रूप में उसका भला ही करते हैं, भले ही भक्त को यह बात देर से समझ में आये। मैं माँ की बात से पूर्णत: तो सहमत नहीं हुई, परन्तु बे-मन से ही मैं हाँ-में हाँ मिला कर चुप हो गई। जब पढ़-लिख कर कुछ बड़ी हुई; यानी नौकरी ज्वाइन कर ली तो मेरा पाला एक शायरी से हुई-मुदई लाख बुरा चाहे कुछ नहीं होता है, होता वही है जो, मंजुरे खुदा होता है। मुझे अपनी माँ की बात इस शायरी से मेल खाती लगी। एक बार बचपन में गाँव में दो औरतें आपस में बहस करती रहीं। अन्त में हार कर एक औरत यह कहते हुए आगे बढ़ गई छोड़ों, बहस क्या करना, इस बेवकूफ से। कसाई के श्राप देने से कोई गाय थोड़े ही मर जायेगी। इन सारी बातों को सुनते हुए भी मेरी आँखें पूर्णत: नहीं खुलीं। लेकिन आनर्स (दर्शनशास्त्र) की पढ़ाई करते समय श्रीमद्भागवत गीता का यह श्लोक *''कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेसु-कदाचन''* की सार्थकता भी इन सभी कथनों की याद दिलाने लगी। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाया, अपना काम करते रहो, फल की चिन्ता मत करो। पहले तो कर्म ही करना है, तभी तो फल मिलेगा। जैसा कर्म करोगे, वैसा फल मिलेगा। यदि निष्काम, भाव से काम करोगे, तो और भी अच्छा, ईमानदारी, कर्मठता, विश्वास और सोद्देश्य एवं सार्थक काम का फल अवश्य अच्छा होगा। फिर चिन्ता किस बात की? ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती गयी, परेशानियाँ बढ़ती गई। सोची हुई बात कभी होती नहीं। तब उपर्युक्त सारी बातों पर चिन्तन, मनन करने लगी, फिर इस निष्कर्ष पर पहुँची कि सचमुच होगा वहीं जो ईश्वर चाहेंगे, वे जो कुछ मेरे लिए निर्णय लेंगे, सोच-समझकर लेंगे; क्योंकि वे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, दयालु हैं, किसी का कुछ बिगाड़ने वाले नहीं है। बल्कि बिगड़े हुए काम को भी बनाने वाले हैं। किसी का बुरा नहीं हो सकता, जबतक उसकी गलती नहीं होगी। बुरा किसी का तभी होता है, जब जाने-अनजाने इंसान से गलती होती है। ईश्वर खुद को भी सबक सिखाने हेतु ही उसे उसकी गलती का एहसास कराते हैं। हम दु:ख के समय किसी को यहीं धैर्य दिलाते है, ईश्वर को शायद यहीं मंजूर था, वही आपको दु:ख सहने की ताकत देंगे। मैंने भी अपने जीवन में यही अनुभव हर वक्त किया है कि जब चिन्ता सताती है, दु:ख मिलता है या कोई दु:खद घटना घटती है, तो प्रभु ही इस बीच कुछ प्रिय चीज या अनुभव देकर दु:ख को हल्का कर देते हैं। अत: अब मैं अपने घर में सभी बच्चों को, काम करने वाले ड्राइवर या बाई को यही बात कहती हूँ। काम करते रहिए, फल अच्छा ही मिलेगा। जितना मन से काम कीजिएगा अंजाम उतना ही सुखद होगा। इसका जवाब भी मुझे अच्छा मिला है। विद्यार्थियों को भी यही संदेश देती हूँ। बच्चे आप अपना काम सच्चे मन से कर्मठता एवं ईमानदारी से करते रहिए, फल अवश्य अच्छा मिलेगा। यदि कभी परीक्षा में सफलता न मिले, तो भी निराश न हों, शायद आगे आपका भविष्य और भी अच्छा होने वाला है। अभिभावक भी सोंचें कि बच्चा का काम मेहनत करना है। फल तो भविष्य में मिलेगा। अत: अतीत

के सहारे वर्तमान को सम्भाले, तभी भविष्य सुधरेगा। अतीत की मजबूत नींव पर आपका वर्त्तमान तथा कल का भविष्य उज्जवल बनेगा। किसी ने भी अपने कल का भविष्य नहीं देखा है, फिर भी भविष्य को छोड़ा नहीं जा सकता। यदि इन्सान को भविष्य की चिन्ता न रहे, तो वह वर्त्तमान की सारी कमाई आज ही खर्च कर देगा। कल के लिए कुछ रखेगा ही नहीं; तब क्या होगा? यही वर्त्तमान भविष्य में अतीत बन जायेगा और उसे भूखे रहना पड़ेगा। अत: वर्त्तमान हार और असफलता से सीख लेकर, वर्त्तमान को अच्छा बनायें। बचत भी करें, जीवन बीमा भी करें, निवेश भी करें, भवन भी बनाये पैसा भी बचायें, अपनी ईमानदारी, सच्चाई, कर्मठता, दयालुता, सौहार्द और करूणामयी व्यवहार तथा परोपकार भी करें। यदि आपकी किसी भी उम्र में चले भी जायें, तो आपका हर चीज आपके आगे की पीढ़ी उपयोग करेगी। वह जो अपना सगा परिवार हो, आस-पड़ोस हो या समाज या देश-विदेश के लोग सभी भोगेंगे आपकी ईमानदारी, सच्चाई, परोपकार और आपकी मेहनत को अत: हर दृष्टि से यही उपयुक्त है और हमें कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए कि - होइहैं वही जो राम राखा। को करी तर्क बढ़ा वहि साखा।।

मुद्दई लाख बुरा चाहे, कुछ नहीं होता है।
होता वही है जो मंजूरे खुदा होता है।।

संयोजिका 'सुपर - 30', गया

✦

पितृपक्ष मेला - महासंगम

प्रकृति-पूजन का प्रत्यक्ष-स्थल गया

श्रीमती चंचला रवि

युगो-युगों से श्राद्ध-पिण्डदान की धरती के रूप में गया की प्रतिष्ठा-प्रभाविष्णु नाम की तरह संर्वत्र व्याप्त है। जो पंचतत्व से जुड़े प्रकृति-पूजन के अति पौराणिक स्थलों में सहज ही संपृक्त है। मोक्ष-भूमि गया जी में जहाँ-जहाँ श्राद्ध पिण्डदान से जुड़े धर्म अनुष्ठान का सम्पादन किया जाता है, उन्हें पिण्ड-वेदियाँ कहा गया है, जो आज भी नदी, तालाब, कुण्ड, सरोवर, वृक्ष व मंदिर के रूप में उपस्थित है। इस धरा पर मानवीय सृष्टि के स्तर पर चेतना कहाँ और कैसे समायी यह सोचने की बात है। वैदिक युग की बात चले तो यह सृष्टि को स्वेदज, उद्भिज, अंडज और जरायुज के चार-भागो में विभक्त करता है। वैदिक ज्ञान में परम सत्ता के पाँच कोश और सोलह कलाएँ बताई गयी हैं। अन्नमय कोश, प्राणामय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश पंच कोश हैं। जिनका सूत्र-सम्बन्ध गया से भी है। इसके साथ ही श्रद्धा, पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञान इद्रियाँ, मन, मंत्र, कर्म, लोक और नाम सोलह कलाएँ है। पंच महाभूतो अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु तत्त्व से निर्मित यह मानव-शरीर पिण्ड का ही रूप है और इसी पिण्ड की पूर्ण तृप्ति का विधान युगो-युगो से गया की धरती पर सम्पन्न हो रहा है। ऐसे भी श्राद्ध पिण्डदान के धर्म-अनुष्ठान में इहलोक से लेकर परलोक की बाते सन्निहित रहा करती हैं। तभी तो पृथ्वी पर प्रदत्त अन्न जल पितर लोक तक पहुँच जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते है कि मानव बस्ती का प्रथम अभ्युदय और विकास नदी घाटी क्षेत्र में हुआ और गया में श्राद्ध पिण्डदान के अन्तर्गत प्रथम पूजन में नदी अर्थात् फल्गु का नाम आता है। जहाँ स्नानादि से निवृत्ति के बाद ही इस कर्म- कृत्य का विधान है। शुभ शुरूआत की ये बातें पुन-पुन नदी से ही प्रारंभ की जाती हैं और प्रकृति-पूजन में नदी का अपना महत्त्व है। फल्गु के सप्तधार और फल्गु निर्माण का मूल आधारीय नदी निरंजना तट पर भी श्राद्ध कार्य किया जाता है।

प्रकृति-पूजन में कुण्ड-तालाब अथवा सरोवर का महत्त्व वर्णनातीत है और गया में गोदावरी, वैतरणी, ब्रह्म सरोवर, सूर्यकुण्ड, पितामहेश्वर, गदालोल, रामकुण्ड, सावित्री कुण्ड, ब्रह्म कुण्ड और गया कूप में श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना प्रकृतिक पूजन का ही तो रूप है।

प्रकारान्तर से ही वृक्ष हमारी सहचारी के रूप में यत्र-तत्र, सर्वत्र विराजमान हैं। इनमें पंचवृक्ष की महत्ता सर्वाधिक है। गया में श्राद्ध पिण्डदान का जहाँ इतिश्री होता है वह है अक्षयवट कहने का आशय युगपिता ब्रह्माजी के द्वारा संस्कारित यह कल्पवृक्ष माता-सीता की कृपा से सदा 'अक्षय' है। इसके साथ ही आम्र-सिंचन, बोधि वृक्ष और धर्मदण्ड के समक्ष पिण्डार्पित करना तो साक्षात वृक्ष पूजा ही है।

पर्वतों से मानव का रिश्ता युग-युगीन है और गया में पिण्ड वेदी के रूप में प्रेतशिला की महत्ता अक्षुण्ण है। इसके साथ ही रामशिला, आदि गदाधर का तीर्थ-करसिल्ली पहाड़, सीताकुण्ड का पर्वत आकाशगंगा आदि में पिण्डदान की प्राच्य परम्परा है। गया में भीम गया वेदी के एक श्याम पाषाण शिला की पूजा और धौतपद वेदी में श्वेत पाषाण खण्ड की पूजा होती है, तो गौ प्रचार वेदी एक ऐसे विशाल पाषाण खण्ड की पूजा होती है जिसपर सैकड़ों गऊ के पाद खण्ड के निशान पूर्व वैदिक युग से अंकित हैं।

प्रकृति में प्रतीक और प्रतिकांग पूजा युग विशेष की पहचान दिलाती है और इसकी परम्परा बड़ी पुरानी है। जैसे शिवशंकर का त्रिशूल, सूर्य भगवान का चक्र, लक्ष्मी माँ का कमल तो बाँसुरी श्री कृष्ण के नाम के साथ जुड़ गया। गया में भी श्री विष्णुपद में देव श्री विष्णु का चरण, माता मंगलागौरी स्थान में पंच पयोधन पीठ को प्रतीक पूजा का रूप माना जाता है; जैसा कि भैरो स्थान मंदिर में प्रभु के कपाल की पूजा होती है।

अभी भी गया में वृक्ष-पूजन, गौ-पूजन, नदी-कूप-पूजन और प्रकृति-पूजन स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है जिसकी प्राचीनता आदि युग से व्याप्त है।

✦

गोदावरी, भैरो स्थान, गया

संस्कार एवं संस्कृति के संदर्भ में गया जी

डॉ० राम सिंहासन

संस्कार एवं संस्कृति मानव मूल्यों के आधार स्तंभ होते है। इसके अभाव में मानवता का स्वरूप विकृत हो जाता है। संस्कार और संस्कृति के जड़ से उत्पन्न ही मानवता के बीज पुष्पित और पल्लवित होते हैं। यों तो भारत की सभ्यता और संस्कृति अति प्राचीन है। विश्व के जन-मानस ने भारत से ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, संस्कृति और संस्कार का पाठ पढ़ा और आलोकित होकर विश्व को प्रकाशित किया, यह सर्वविदित है। इतना ही नहीं भारत त्याग-तपस्या की भी भूमि रही है। धर्म- गुरू के अलंकार से भारत को ही अलंकृत किया गया है। जब-जब अधर्म का विस्तार और अन्याय बढ़ा है, यहाँ के मनीषियों ने अपनी हड्डी और शरीर दानकर यहाँ की संस्कृति और संस्कार को अक्षुण्ण रखा है।

मानवीय संस्कृति मूलतः उर्ध्वगामी है, क्योंकि इसका उद्‌भव एक दिव्य चेतना से हुआ है। इस सार्वभौम, सनातन चेतना को भारतीय वेदान्त में 'ब्रह्म' कहा गया है। सभी भारतीय धर्म-सम्प्रदायों के मूल में यह आधारभूत तत्त्व देखा जा सकता है। अन्य देशों में पैगम्बर, देवदूत या मसीहा की कल्पना में भी ऐसी ही शक्ति का समावेश है, जिसका प्रतिनिधित्व प्रतीकों के द्वारा किया गया है। अतः दिव्यता की खोज मानव-संस्कृति का उदात्त लक्षण है। श्रीमदभगवद् गीता में इसे बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा गया है। 'उर्ध्वमूलमथः शाखम् अश्रव्यं प्राहुख्यम' यही अव्यय ब्रह्म धार्मिक वाभामय में प्रकृति की शोभा और शक्ति में तथा मर्यादा पुरूषोत्तम के व्यक्तित्व में स्वयं को अभिव्यक्त करता, और सृष्टि में प्रसारित हो जाता है - 'एकोअहं बहुस्याम'। इस निराकार को साकार करने के लिए ऋषियों, सन्तों मनीषियों एवं कवियों ने अनेक दिव्य गुणों की कल्पना की है। उन गुणों की झलक इतिहास-पुरुषों अथवा लोक नायकों में देखकर सगुण अवतार का निरूपण किया है। इन्हीं गुणों के उदाहरण गीता के दैवी सम्पदा के सताइस लक्षणों में मनुस्मृति के दश धर्म लक्षण, जैनियों के आचरोग में दस, पंतजलि के योग-दर्शन में अष्यंग तथा पौराणिक देवताओं में और महाकाव्यों के नायकों में देखे जा सकते हैं। संस्कार और संस्कृति की दृष्टि में भारत की भूमिका अग्रगण्य है। संस्कार, संस्कृति और धर्म मानव और पशु में अन्तर स्थापित करता है। भारत की भूमि मनीषियों और साधकों की रही है। भारत तीर्थो का देश है। गंगा की पवित्रता, यमुना की महानता, मंदाकिनी की पौराणिकता, सरयू की आध्यात्मिकता, गोदावरी की ऐतिहासिकता, जिस प्रकार भारत की संस्कृति को समुज्ज्वल बनाती है, उसी प्रकार गया की फल्गु सभी नदियों की उज्ज्वलता अपने में समेंट कर भारत की अनेकता में एकता को और समृद्ध करते हैं, और गया को गौरवान्ति करती है। गया को तीर्थो का प्राण कहा गया है। चार पुरूषार्थो में अन्तिम मोक्ष की प्राप्ति का स्थान गया को हीं माना गया है। धर्म, अर्थ और काम की पूर्णता तभी सार्थक है, जब मोक्ष सुलभ हो और यह गया तीर्थ में सहज हीं प्राप्त होता है, गया में पिण्डदान से पितरों को सर्व तो भावेन शान्ति मिलती है।

भारत के मानचित्र पर गया का विशिष्ट स्थान है। छोटी पहाड़ियों से घिरा, प्राकृतिक सौन्दर्य सुषमा से अच्छादित प्रत्येक पहाड़ियों पर मंदिर, पूर्व भाग में निरंजना अंतः सलिला फल्गु नदी प्रवाहित, कल-कल झर-झर करते झरने, विष्णु पद का विशाल ऐतिहासिक मंदिर तो ब्रह्मयोनि पर्वत पर इसकी ऐतिहासिकता, पौराणिकता तथा धार्मिकता में चार चाँद लगा रहा है। गया एक साधना तपः भूमि तथा तंत्र के क्षेत्र में अग्रगण्य रहा है। भगवान विष्णु का चरण चिन्ह, भगवान बुद्ध के ज्ञानार्जन की भूमि, महर्षि कपिल मुनि का साधना-स्थल इसके विरातत्व

तथा गरिमा की गाथा आज भी अंकित है। नदी के किनारे और पहाड़ियों से घिरा हुआ, बल्कि एक प्रकार से पहाड़ियों पर बसा हुआ, साधना और तप के लिए प्राचीनकाल से उपर्युक्त रहा है, इसका कारण यही है कि महान तपस्यिों एवं साधकों ने यहाँ साधना की है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गया की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन और महिमामयी है।

महाभारत में गया को एक उत्कृष्ट और महत्व का तीर्थ माना गया है और सभी को एक बार यहाँ की यात्रा आवश्यक रूप से करने का निर्देश दिया गया है। कोई स्थान तीर्थ का दर्जा तभी प्राप्त होता है, जब वहाँ साधना करके सिद्धि प्राप्त की हो, अवतार हुआ हो या अवतारी पुरूष की लीला सम्पादित हुई हो, किसी देवता विशेष का घटना क्रम में वास स्थान रहा हो, साथ में कोई नदी था पहाड़ हो तो उसकी प्रमाणिकता एवं उपादेयता और बढ़ जाती है। वह स्थान सुरम्य हो जाता है और अपनी गुणवताओं के कारण, सिद्धि, पुण्य और पदलोक का वाहक बन जाता है। उपर्युक्त जितने भी समाहार हैं, वे भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं।

महाभारत के अनुसार गया नामक एक राजर्षि हुए थे। अमूर्तरमा के वे पुत्र थे। वह बड़े दिव्य और पवित्र थे। उन्होंने एक बहुत बड़ा और अपूर्व यज्ञ सम्पन्न किया, जिसमें लम्बे समय तक हविष्य, भोजन और दान से देवताओं और मनुष्यों को तृप्त किया। ऐसा यज्ञ पहले किसी ने नहीं किया था, और शायद बाद में कोई कर भी न पाये। इस प्रकार के यज्ञ का विस्तृत वर्णन है। इससे स्पष्ट है कि गया की संस्कृति उस काल में भी उत्तम थी। निष्कर्षत: महाभारत काल में गया साधना स्थल के रूप में विख्यात था, जहाँ साधना करने से सिद्धि शीघ्र मिल जाती है। ऐसा स्थल सिद्ध स्थान भी कहा जाता है, इसलिए कि जहाँ जाने मात्र से कुछ न कुछ लाभ सभी को मिल जाता है और जो साधना करते हैं, उन्हें पुरा मिलता है। गय का यह यज्ञ साधना का हीं एक प्रकट रूप है। राजर्षि गय का यज्ञ अपूर्व था, अर्थात गय की साधना अपूर्व थी। गय के साधना के कारण हीं उस पर्वत का नाम गय के नाम से सम्बद्ध हो गया।

भारतीय संस्कृति की महत्ता अनादि काल से चली आ रही है। यह संस्कृति ऐसी है, जिसने समस्त मनुष्य जाति के विकास और उन्नति की ओर ध्यान दिया है। जिस संस्कृति में सब के कल्याण की भावना निहित हो वही संस्कृति सर्व श्रेष्ठ मानी गयी है। आज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के चकाचौध में हम इतने डूब गये हैं कि इस ओर ध्यान नहीं देते, केवल अपने स्वार्थ की पूर्त्ति में लगे रहते हैं। हमें इससे बचना होगा और अपनी भारतीय संस्कृति जो शाश्वत संस्कृति है, उसे अंगीकृत करना होगा। हमारी संस्कृति की यह विशेषता है कि हम अपने स्वार्थ की अपेक्षा दूसरों की सेवा तथा महानता के कल्याण पर अधिक जोर देते हैं। स्वार्थ की अपेक्षा हमें परमार्थ पर ध्यान देना चाहिए। संस्कृति के इस मूल भाव को हम तभी समझ सकते हैं, जब हम अपने को अध्यात्म से जोड़कर रखेंगे। अध्यात्म हमें समाज में समष्टि तथा भगवान से जुड़ने का मार्ग बनाता है। जो मार्ग, जो उपदेश, जो विधि हमें भगवान की ओर ले जाती है वही सज्जन संस्कृति है, वही भारतीय संस्कृति है। इन सारी कसौटियों पर कसने के बाद गया की संस्कृति अहम् संस्कृति और प्राचीन संस्कृति प्रतीत होती है। भारतीय दर्शन में संस्कार का भी विशेष महत्त्व है। इसलिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अनेक संस्कार करने पड़ते हैं। संस्कार का अर्थ है सुधार, अनुभव, मनोवृत्ति या स्वाभाव का शोधन जो जन्म से लकर मृत्यु के बाद तक किये जाये वो कर्म है। संस्कारों का मूल उद्देश्य शरीर और आत्मा का शुद्धिकरण, विध्न ओर बाधाओं का निवारण तथा देवी देवताओं बड़े बजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना है। इसके अन्तर्गत देवताओं की स्तुति प्रार्थना और यज्ञों का आयोजन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि संस्कारहीन व्यक्ति का जीवन अपवित्र, अपूर्ण और अव्यव-स्थित होता है। यों तो धर्म ग्रन्थों में सोलह

संस्कार की चर्चा की गयी है, जिसमें गर्भाधान पुसवन सीमन्तोनयन, जाति कर्म, नामकरण वेदारम्भ अन्न प्रासन चूड़ाकर्मी, कर्णवेध, विधारम्य, उपनयन वेदारम्भ चूड़ान्त विवाह और सबसे अन्तिम अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है। लेकिन वैदिक काल की संस्कृति भी अलग है, जिसे वैदिक संस्कार कहते हैं।

संस्कार शरीर एवं आत्मा से दोषों का अपसरण करते हुए विशिष्ट गुणों का सन्निधान करता है। जन्म से मनुष्य अतिशय दोषों को भी साथ लाता है। पूर्वजन्म के गुण दोष भी साथ आ जाते हैं। कहा जाता है कि जो संस्कार प्रारम्भ काल में लग जाते हैं वे नवपात में लगे लकीर की तरह मिटते नहीं। पत्थर की दुकान में देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ प्रत्थर नहीं रहता है, लेकिन मंदिर में संस्कार होने के बाद देवी देवताओं का रूप धारण कर लेता है एवं पूजा के लिए भक्तगण अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं। संस्कृति एवं संस्कार के उपासकों का मानना है कि मर्यादापूर्ण निष्ठा के साथ यदि वैज्ञानिक भगवान तक हस्ताकमलवत उपलब्ध हो जाते हैं। संस्कार 'ब्रह्म' और 'देव' दो प्रकार के होते हैं। संस्कार मनुष्य में ब्रह्म या ब्रह्मवेता ब्राह्मण का गुण भर देते हैं। गया जी की धरती संस्कार, संस्कृति अध्यात्म और साहित्य से परिपूर्ण है। भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक विवेचन के साथ उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गया तीर्थ जिस भारतीय तीर्थ के साथ एकदम साम्य रूप में विराजमान है, वह अद्धितीय है। गया सात पर्वतो से परिवृत्त देव श्री विष्णु का आदि धाम है, जो भारतीय संस्कृति और संस्कार का मूलाधार है। भगवान विष्णु की शक्ति और उसकी महत्ता सर्वोपरि है। जिस प्रभु ने समस्त लोकों में अग्नि, वायु, सूर्य रूप से तीन पद धारण किये, अर्थात तीनों की स्थापना की, वह स्वयं अपरम्पार है, इसलिए विष्णु शब्द विश्ववादी की संज्ञा से अभिभूत किया जा सकता है। गया तीर्थ में विष्णुपद मंदिर का विशेष महत्व है जो तांत्रिक साधना की हीं रूप कहा जा सकता है। भगवान विष्णु का चरणचिन्ह का दर्शन पाकर भक्त धन्य हो जाते हैं। विशेष साधकों में गौतम बुद्ध ने रामशीला पर्वत पर सतरह वर्षो तक साधना की है। रामशीला पर्वत गया का महत्वपूर्ण पर्वत है, जो साधकों का केन्द्र रहा है। गया के इर्द-गिर्द भी भगवान गौतम बुद्ध ने कठिन साधना की है और अंत में बोधगया में पीपल वृक्ष के नीचे उनको बोधत्व की प्राप्ति हुई।

भगवान कपिल मुनि का भी नाम भारतीय साधकों में बहुत आदर के साथ लिया जाता है, वे सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक तथा ज्ञान मार्ग के परमाचार्य माने जाते हैं। वे परम साधक और तपस्वी थे। उनकी साधना पद्धति आज भी साधकों के लिए प्रेरणादायिनी है। भक्त साधकों में चैतन्य महाप्रभु का नाम बहुत हीं आदर के साथ लिया जाता है। श्री कृष्ण परंपरा एवं भक्त आन्दोलन के सर्वश्रेष्ठ साधक थे। ऐसा कहा जाता है कि भक्ति की धारा प्रवाहित होने का क्षेत्र गया में चैतन्य महाप्रभु का हीं है। चैतन्य महाप्रभु गया में वर्षो तक रहकर भक्ति की धारा बहाई और गया जी को शीर्ष बनाया। फल्गु नदी विश्व प्रसिद्ध बोधगया की ओर से बहकर गया में प्रवेश करती है। यह नदी गया शहर के पूर्वी किनारे पर दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर बहने वाली अंत: सलिला नदी है। गया आने से पूर्व इसका नाम निरंजना है तथा मोहानी नदी एवं निरंजना नदी के संगम के बाद जो संयुक्त धारा गया में प्रवेश करती है, उसे हीं फल्गु नदी कहा जाता है। गया में हीं विष्णुपद मंदिर से थोड़ी दूर भष्मकूट पर्वत सती के जले हुए शरीर को लेकर इधर-उधर घुमने लगे, तब भगवान विष्णु ने सती के शरीर के टुकड़े टुकड़े करने के लिए सुदर्शन चक्र चला दिया, इससे उनका अंग कट-कट गया में भष्मकूट पर्वत पर गिरा, जिसे मंगलागौरी के नाम से जाना जाता है। इस तरह गया का सांस्कृतिक और संस्कारगत पृष्ठभूमि अग्रगण्य है।

से.नि. प्रधानाचार्य
राम लखन सिंह यादव कॉलेज, गया
मो०-9631332910

भारतीय संस्कृति में माता-पिता का स्थान

डा० सोनू अन्नपूर्णा

भारतीय संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृतियों में से एक है। यह एक महान संस्कृति है, क्योंकि यहाँ ईश्वर में अडिग आस्था और विश्वास पर बल दिया जाता है। यहाँ गुरुजनों, माता-पिता तथा अपने से बड़ों चाचा-चाची, भाई-बंधु सभी को उचित सम्मान और आदर दिया जाता है। यह नैतिकता, ये संस्कार हमारे जीवन की आधारशिला हैं। हमारे पारिवारिक जीवन को मजबूती प्रदान करने में इन सब संस्कारों का समवेत प्रभाव पड़ता है। हमारे धर्म- ग्रंथों में गुरुजनों तथा माता-पिता के प्रति आदर-सम्मान की भावना पर बल देते हुए उनके प्रति अनेक कर्तव्यों के बारे में बताया गया है। देवऋण, पितृऋण तथा गुरूऋण से मुक्ति पाने के लिए हमारे लिए कुछ कर्तव्य निर्धारित हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य माना जाता है। वैसे आजकल की बात करें तो आज समाज में चातुर्दिक नैतिकता तथा जीवन-मूल्यों का ह्रास दृश्टिगोचर हो रहा है। फिर भी कुछ मान्यताएँ आज भी हैं, जिनका पालन समाज द्वारा किया जा रहा है। इन बहुत सारी मान्यताओं के अनुसार मनुश्य तप, उपवास, व्रत-नियम तथा अनेक प्रकार के अनुष्ठान आदि करता है। इन्हीं संस्कारों में से एक है - पितृ-तर्पण करना। यह गया का एक प्रमुख संस्कार है। यह अपने पूर्वजों के लिए श्रद्धास्वरूप किया जाता है। गया वह पावन नगरी है, जहाँ हर साल पितरों के तर्पण हेतु उनकी आत्मा की शान्ति के लिए पितृपक्ष मेला लगता है और दे।-विदे। से लोग आकर अपने पितरों को श्रद्धांजलि देते हैं। केवल गया ही नहीं, भारतवर्श के अन्य कई जगहों में पितरों की मुक्ति हेतु तर्पण आदि करने का विधान है। लेकिन गया में यह आयोजन बड़े विधि-विधान के साथ 15 दिनों तक चलता रहता है। इस विधान के पीछे पितरों की कृपा प्राप्त करने की कामना के साथ पितरों को 'मोक्ष' की प्राप्ति कराना तथा उनकी 'आत्मिक शांति' की कामना भी निहित है। पितरों हेतु किए जाने वाले ये संस्कार वेद-सम्मत हैं। कालान्तर में ब्राह्मण-ग्रंथों, धर्म-सूत्रों, पुराणों तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों में भी इसका वर्णन मिलता है। मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। मनुष्य योनि प्राप्त करने के बाद आत्मा का अंतिम लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति ही है। इसके लिए माना जाता है कि मनुश्य को अपनी जिंदगी को सत्कार्य में लगाना चाहिए। तभी मानव-जीवन की सार्थकता है। जीवन की समाप्ति के पश्चात् आत्मा की शांति के लिए किया गया अनुष्ठान भी इसी निमित्त होता है।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को सर्वोपरि मानते हुए उनको समुचित आदर-सम्मान देने की परम्परा रही है, उनको पूजने का विधान रहा है। गुरू के समकक्ष उन्हें भी रखा गया है। कठोपनिशद् में वर्णित है कि नचिकेता अपने पिता की आज्ञा के पालन हेतु यमलोक भी चला जाता है। यमराज जब उससे तीन वर माँगने को कहते हैं तो वह अपने पहले वरदान के रूप में यही माँगता है कि उसके पिता उद्धालक ;शि, जिन्होंने क्रोध के आवे। में आकर उसे यमराज के पास जाने को कह दिया था, वे उसके प्रति क्रोधरहित, फ्रांतचित्त और सर्वथा संतुश्ट हो जायँ तथा जब वह घर जाए, तब वे उसे पुत्र के रूप में पहचानकर उससे पहले की तरह ही स्नेह से बातचीत करें।

'तैत्तिरीयोपनिशद' में भी कहा गया है-'' सत्यं वद। धर्म चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद। मातृ देवो भव पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव।.....''

एक और उदाहरण है- भगवान श्री राम का।

'रामायण ' में वर्णित है कि राम पिता द्वारा वनवास की आज्ञा को सहर्श स्वीकारते हैं और बिना किसी अवसाद के वनगमन को तैयार हो जाते हैं–

प्रसन्नतां या न गतामिशेकस्तथा न मम्ले वनवास दु:खत:।

मुखाम्बुज श्रीरघुनंदनस्य मे सदास्तु सा मंजुल मंगलप्रदा।।

वे माता कौशल्या को कहते हैं–

''पिता दीन्ह मोहि कानन राजू, जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।। ''

इसी गया नगरी में भगवान बु) को निरंजना नदी के तट पर महाबोधि–वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस लिहाज से गया और बोधगया ये दोनों स्थान पितरों के तर्पण तथा बु) के उपदे ा– इन दोनों के लिए प्रसि) हैं। महात्मा बु) द्वारा संस्थापित बौ) धर्म दे ा क्या विदे ाों में भी व्याप्त है। अत: यहाँ दे ा तथा विदे ाों से भी लोग आते हैं। वे पितृ–तर्पण भी करते हैं और बु) के द ान भी करते हैं। भगवान बु) ने भी माता–पिता को सर्वोच्च स्थान देते हुए उन्हें 'ब्रह्म 'की संज्ञा से विभूशित किया है–

'ब्रह्मति मातापितरो '–– उनके अनुसार माता–पिता ही जन्म देने वाले और बच्चों का पालन–पोशण करने वाले होते हैं, इसलिए हर इंसान को अपने माता–पिता का आदर और उनकी सेवा करनी चाहिए। उनकी पूजा करनी चाहिए। ब्रह्म का मतलब है–अनंत मैत्री, अनंत मुदिता, अनंत करूणा और अनंत उपेक्षा द्ध समता भाव ऋ से भरा हुआ व्यक्ति।

आज पूरी दुनिया में हिंसा, आतंक और डर का माहौल बना हुआ है। सारे लोग तनाव में जी रहे हैं । पूरी मानव जाति विना ा की कगार पर खड़ी है। ऐसे में बु) की ािक्षा आज और भी प्रासंगिक हो गई है। उन्होंने कहा था कि –''बैर से बैर कभी शांत नहीं होता है। यु) किसी समस्या का हल नहीं होता है, क्योंकि हर यु) में धन–जन की अपार क्षति होती है। बैर–वैमनस्य मिटाने से ही समाज में शांति बढ़ेगी और मनुश्य का कल्याण होगा।''

भारतीय संस्कृति के पुरोधा कवि तुलसी ने भी माता–पिता, भाई–बंधु के बीच परस्पर प्रेम और भाईचारे की स्थापना को परिवार और समाज की शांति के लिए आव यक माना। उन्होंने भी ािव और पार्वती की वंदना गुरू और माता–पिता के रूप में की है

'' गुरू पितु मातु महेस भवानी।

प्रनवऊँ दीनबंधु दिन दानी।।

एसोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी विभाग, गया कॉलेज, गया।

✦

कबिरा संगति साधु की
जौं गंधी के वास।।
जो कछु गंधी दे नहीं
तो भी वास–सुवास।।

पर-हित-सरिस धर्म नहिं भाई

डॉ० संकेत नारायण सिंह

मानव का जीवन एक कला है, इसलिए जीवन को सुखमय बनाने के लिए उसमें सद्‌गुणों का ही विकास करना चाहिए और, स्वविवेक से अपने दुर्गुणों का त्याग करना चाहिए, क्योंकि, जिस तरह किसी कलाकार की प्रतिमा दूसरों के मनोरंजन और आनन्द के लिए उपयोगी होती है उसी तरह मनुष्य द्वारा अर्जित धन-दौलत, बुद्धि, विवेक, क्षमा, दया आदि का उपयोग अपने साथ-साथ दूसरे के हित में ही होना चाहिए। मनुष्य में ईश्वर ने गुण दिया है, उसका उपयोग लोकहित में करने से जीवन महान बनता है।

आधुनिक युग के कुछ महान पुरुषों का जीवन हमारे लिए मार्गदर्शक है -महात्मा गाँधी ने अपना जीवन समाजहित में समर्पित कर दिया और अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। इसलिए उन्हें आज संसार सादर याद करता है। मदर टेरेसा ने एक नर्स के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया और सारा जीवन मानवता की सेवा में अर्पित कर दिया। आज उसे संसार में मृत्यु के बाद भी सादर याद किया जाता है। कितने धन-दौलत वाले की मृत्यु पर शोक मनाया जाता है, किन्तु महात्मा गाँधी मदर टेरेसा आदि इंसानों की मृत्यु पर तो अधिकांश देशों के झंडे झुका दिए गए और अनेक देशों के राज्याध्यक्षों ने आकर उनके शव पर फूल मालाएँ अर्पित की। यही जीवन का महत्त्व है। अपनी ही चिन्ता करने वाला व्यक्ति तो पशु के समान है जो दूसरे की भी चिन्ता करता है, वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है।

इसलिए मानव जीवन का महत्त्व मानवता और इंसानियत का अनुसरण करने में ही है। मनुष्य जीवन का स्वभाव जल की तरह ही है, जो हमेशा नीचे की ओर प्रवाहित होने का प्रयास करता है। उसे उन्नति के मार्ग पर ऊपर उठाने के लिए सर्वस्व त्याग रूपी सद्‌विचार के बाँध की आवश्यकता होती है। शील-स्वभाव, विवेक, बुद्धि क्षमाशीलता, परहित आदि सद्‌गुण ही मानव-जीवन की उन्नति के मार्ग हैं, क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति के समक्ष दुनिया झुक जाती है और सर्वत्र उसका आदर होता है।

समाज के मार्गदर्शक संत तुलसी दास ने रामचरित मानस में लिखा है कि कर्म प्रधान विश्व कर रखा, जो जस करतस फल चाखा। अर्थात् इस संसार में कर्म ही प्रधान है और जैसा जो करता है वैसा ही फल उसे मिलता है। अच्छा कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा ही मिलता है। मानव के अच्छे कर्म की प्रशंसा होती है और बुरे कार्य की निन्दा।

मानव पृथ्वी का वह अनमोल रत्न है, जिसे पाकर वह धन्य है। सृष्टि की रक्षा, पृथ्वी की रक्षा एवं समस्त जीवों की रक्षा का दायित्व मानव पर ही सौंपा गया है। इसीलिए मानव को ज्ञानशील प्राणी बनाया गया है। वह पृथ्वी पर ईश्वर का ही प्रतिरूप है।

राष्ट्र-कवि दिनकर ने लिखा है मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है। भगवान बुद्ध के अनुसार- मानव का उद्देश्य होना चाहिए जीवन में मध्यम मार्ग को अपनाकर जीवन के उद्धार के लिए सतत प्रयासरत रहना। मानव- जीवन का उद्धार ईश्वर के प्रति भरोसा कर मानवता की सेवा में ही है।

✦

संस्थापक 'समर्पण'-सह -जिलाध्यक्ष
मानवाधिकार संरक्षण प्रतिष्ठान, गया
मो०-94310083141

पितृ तृप्ति की श्रेष्ठ भूमि गयाधाम

श्री प्रभात कुमार धवन

श्राद्ध और पिण्डदान के लिए प्रसिद्ध गया वेदों के अनुसार भारत के सप्त प्रमुख पुरियों में अपना विशेष महत्त्व रखता है। अनादि काल से ही गयाधाम में पितृ तर्पण, श्राद्ध-कार्य और पिण्डदान करने का विधान चला आ रहा है। वायु पुराण में इस बात की विशेष रूप से पुष्टि की गई है। महाभारत में इस स्थल पर निवास करने मात्र से सात पीढ़ियों के पवित्र होने की बात कही गई है।

कृष्ण शुक्ला पक्षो गयापां यो बसेन्नरः।
पुनात्या सप्रयं राजन् कुलं नारत्यत्र संशयः।।

यही कारण है कि देश-विदेश के हिन्दू समुदाय सालों भर यहाँ आते रहते हैं। पितृपक्ष यानी भाद्रपद की पूर्णिमा से अश्विन की अमावस्या तक का समय पितृ तृप्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस अवसर पर भिन्न-भिनन भाषाओं के लोग वैदिक मंत्रों द्वारा अपने पितरों को जल और पिण्ड अर्पित करते हैं। पूरे पितृपक्ष भर यहाँ मेला लगा रहता है। वातावरण पूजा, पाठ, शंख और घंटी से प्रभावित रहता है। इस अवसर पर हिन्दुओं की एकता, अखंडता और सद्भाव देखते ही बनता है। सच कहा जाय, तो यह हमारी धार्मिक तथा अध्यात्मिक भावनाओं का संगम स्थल है। यह हमारी संस्कृति, सभ्यता एवं लोक आस्था की धरोहर है।

श्राद्ध शब्द मृत्यु उपरांत जीवन अर्थात् परलोकवाद की आस्था से जुड़ा है। यह शब्द श्रद्धा से बना है। अपने स्वजनों, मित्रों, सत्पुरूषों के द्वारा किए गए सत्कर्मो के लिए हम उनके प्रति जो आदर सम्मान और कृतज्ञता की भावना प्रकट करते हैं, वह श्राद्ध कहलाता है। पितृलोक एक ऐसा प्रतिक्षा लोक है, जहाँ मृत्यु उपरान्त हमारे दिवंगत पूर्वजों की आत्माएँ अपने वंशजो से पिण्ड, तर्पण आदि प्राप्त कर मुक्ति प्राप्ति की आशा करते रहते हैं। इन प्यासी और प्रतिक्षारत विवश आत्माओं की मुक्ति के लिए हम कृतज्ञता भाव से तर्पण श्राद्ध पिण्डदान आदि करके अपने ऋण से मुक्ति पाते हैं।

मत्स्य एवं अन्य पुराणों के अनुसार परशुराम, राम, बलराम जैसे अवतारी पुरुष, महाभारत के भीष्म पितामह, सत्यवादी युधिष्ठर महाबलशाली भीम सेन, मुनि भारद्वाज जैसे महत्वपूर्ण लोगों द्वारा गया में किए गए पिण्डदान का उल्लेख मिलता है। ऐतिहासिक ग्रन्थों में मौर्य एवं गुप्त राजाओं से लेकर विजय नगर शासक जैसे अंतिम हिन्दू, आध्यात्म युग के कुमारिल मठ, आचार्य शंकर तथा वैष्णव सम्प्रदाय प्रवर्त्तकों के साथ ही राम कृष्ण परमहंस, चैतन्य महाप्रभु जैसे लेगों के आगमन का भी उल्लेख मिलता है।

गया का वैदिक नाम कीकट था। गया महात्म्य के अनुसार गया का नाम ब्रह्म गया भी है। मुगलकाल में गया का नाम आलमगीरपुर था। इस शहर की स्थापना कब हुई इस संदर्भ में वाद-विवाद है। महाभारत के अनुसार चन्द्रवंशी अमृतरथ ने धर्मपारायण राजर्षि पुत्र गय के नाम पर इस शहर का नाम गया पडा। परन्तु सर्वाधिक मान्य वायुपुराण के अनुसार इस शहर का नाम महान पराक्रमी बलशाली विष्णुभक्त गयासुर नामक एक दैत्य के नाम पर पड़ा। कथा है, एक बार वाराहकल्प में कोलाहल पर्वत पर 1000 वर्षो तक गयासुर ने कठिन तपस्या कर भगवान विष्णु को प्रसन्न कर लिया। विष्णु ने कहा तुम्हारी क्या इच्छा है वर मांगो। गयासुर ने कहा कि मेरा शरीर ब्रह्मा, विष्णु महेश से भी पवित्र हो एवं मेरा स्पर्श मात्र से लोग सीधे स्वर्ग को जाये। भगवान विष्णु वरदान देकर चले गए। वर प्राप्त करने के बाद

गयासुर फल्गु के तट पर विराजमान हो गया। मरणान्न लोगों को स्वर्ग पहुँचाने लगा। इससे स्वर्ग के राजा इन्द्र चिंतित होने लगे। उधर ब्रह्मलोक बिल्कुल सूना पड़ा था। देवताओं ने एक योजना के तहत यज्ञभूमि हेतु उस गयासुर से शरीर की, मांग की वह तैयार हो गया। वह बोला जब तक सूर्य चाँद रहेगा; यहाँ ब्रह्मा विष्णु महेश का वास रहे। जो मानव यहाँ श्राद्ध पिण्डदान करने का कार्य करेगा, वह वैकुण्ठ प्राप्त करेगा।

प्रासिद्ध अंग्रेज विद्वान बुकानन ने काफी पहले अपने यात्रा-वृतांत में लगभग 1 लाख यात्रियों द्वारा पिण्डदान की चर्चा की है। सन् 1750 ई० में जर्मन यात्री टिफेन थेलर ने भी यहाँ भ्रमण कर इस बात की पुष्टि की है। आज भी यहाँ श्रीलंका, नेपाल, फिजी, मारीशस, बर्मा, तिब्बत, भूटान, जापान, चीन, थाइलैण्ड आदि के विदेशी यात्री देखे जा सकते हैं।

गया को यदि स्वर्गारोहण का द्वार कहा जाये तो कोई अनुचित न होगा। क्योंकि, अस्वाभाविक मृत्यु होने से आत्मा भूतयोनि में रहती है। स्वाभाविक मृत्यु से आत्मा को प्रेत योनि प्राप्त होता है और सुकर्म करने वालो को देवयोनि प्राप्त होती है। गया श्राद्ध करने वालो से ही भूत-योनि की भटकती आत्मा को शांति और सद्गति मिलती है।

आज जरूरत है हम अपने पूर्वजों को इस अवसर पर जरूर याद करें। उनकी खुशियाँ, अच्छाईयाँ व गुण का अनुसरण करें। हमपर, राष्ट्र पर, संस्कृति पर जो उन्होंने उपकार किया है, उसका प्रत्युत्तर उन्हीं के पदचिन्हों पर चलकर दें। हम बुराइयों को छोड़ने का संकल्प लें साथ ही, कुछ सुप्रवृत्तियों का श्री गणेश कर अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें।

उप सम्पादक,
'आज' हिन्दी दैनिक, पटना

✦

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरित निस्पृहः।
निर्मनो निरहंकारः शान्ति मधिगच्छती।।

गीता- 2/71

- जो मनुष्य सब इच्छाओं को त्याग देता और कामना-रहित होकर कार्य करता है, जिसे किसी वस्तु के साथ ममत्व नहीं होता और जिसमें अहंकार की भावना नहीं होती, उसे शान्ति प्राप्त होती है।

गया-संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक केन्द्र : एक झलक

डॉ० विनय कुमार

धरोहरों, पुरावशेषों कलाकृतियों को संग्रहीत, संरक्षित एवं सम्बर्द्धित करने में संग्रहालयों की मुख्य भूमिका होती है। जहाँ अपार जनसमूह एवं प्रशासकीय शक्तियों के सहयोग जिस संग्रहालय को प्राप्त होती है उसका क्रमिक विकास भी वैसा ही होता है।

विश्व प्रसिद्ध मोक्षदायनी विष्णु की महान नगरी एवं ज्ञान प्राप्ति स्थली बोधगया को कौन नहीं जानता ? गया की इस धरती पर कला एवं संस्कृति अदभुत है, जिनके अति दुर्लभ प्रादर्श सर्वत्र फैले हुए विराजमान है। गया जिला के लगभग प्रत्येक गाँव में कलात्मक चिन्ह नजर आते है। प्राचीन काल से ही गया कलात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। गया के सुदूर गाँवों में भी कलात्मक अवशेष बिखरे मिलते है। भारतीय कला के विकास में मगध क्षेत्र का विशेष योगदान सदियों से रहा है। गया संग्राहलय गया में प्रदर्शित संग्रहित एवं संरक्षित अभुत अमूल्य पुरावशेषों के दुलर्भ नमूने बखूबी देखे जा सकते है।

गया संग्रहालय गया 23 नवम्बर, 1952 में स्थापित हुआ। परन्तु इसका विधिवत उद्घाटन 27 नवम्बर, 1952 के 9:15 बजे गया नगर पालिका भवन के एक भाग में नगर पालिका गया के अध्यक्ष श्री राधा मोहन प्रसाद द्वारा किया गया। 27 नवम्बर, 1952 को इसे सार्वजनिक रूप से जनता के लिए खोल दिया गया। तत्पश्चात, ज्ञान-पिपासु बुद्धिजीवियों द्वारा कलात्मक अवशेषों का संग्रह आरम्भ हो गया।

हालांकि सन् 1955 में ही इस संग्रहालय निर्माण का बीजारोपण हो गया था, जब वर्तमान जिला केन्द्रीय लोक पुस्तकालय खोला गया, अंग्रेजो ने स्थानीय कलाकृतियों को संरक्षित करने के लिए उन्हें वहाँ इकटठा करना शुरू कर दिया था। इस प्रकार परोक्षरूप से वर्तमान संग्रहालय की नींव उसी समय पड़ गई थी। उस समय प्राप्त कलाकृतियों में पाल- कालीन बुद्ध की बैठी हुई मूर्त्ति मंजु श्री, दो राजकीय बन्दूकें, जिसके घोड़ो और कुन्दो पर हाथी दाँत के बेहतरीन नक्काशी है। एक लम्बा सा भाला भी रखा गया ये सभी वस्तुएं सन् 1976 में संग्रहालय गया को हस्तांतरित कर दी गई।

गया संग्रहालय के क्रमिक विकास में तत्कालीन दो कलक्टर मि० ग्रियर्सन और मि० ओल्डहैम का विशेष योगदान रहा है। जिन्होंने प्राचीन कलाकृतियों का विवरण सिलसिलेवार रखा। मि० ग्रियर्सन ने 1885 से 1891 तक के कार्यकाल में गया जिले पर एक टिप्पणी भी तैयार की, जिसमें विभिन्न प्राचीन कलाकृतियों का जिक्र था। उस चर्चित टिप्पणी का नाम था Bihar Peasants life and Notes on the District of Gaya तत्पश्चात् मि० ओल्डहैन ने 1898 से 1902 के दौरान प्रक्षेत्र में कई दौरा कर प्राचीन कलाकृतियों की तस्वीरे खिँचवाकर उसे इक्टठा किये।

दिन-बदले युग बदला लगभग 90 वर्षो के एक अंतराल के बाद संग्रहालय आन्दोलन पुनः जोर पकड़ा, जिसका श्रेय श्री बलदेव प्रसाद को जाता है। यह आन्दोलन महान समाज सेवी तथा स्थानीय वकील श्री बलदेव जी ने शुरू की। 23 अप्रैल 1947 को सोसायटी ऑफ इन्डियन कल्चर की स्थापना हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्र की पुरातात्विक और ऐतिहासिक धरोहरो को बचाना था। इस दिशा में तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट जे०सी०माथुर ने श्री बलदेव प्रसाद के साथ प्रस्तावित संग्रहालय के लिए प्राचीन कला कृतियाँ एकत्र करना आरम्भ किया। तत्पश्चात् 21 जनवरी 1950 को सोसायटी ने गया

संग्रहालय बनाने के लिए घोषणा की। समिति गठित की गई जिसका पदेन अध्यक्ष जिला मजिस्ट्रेट तथा सचिव पुलिस सुपरिटेनडेन्ट बनाये गये। श्री बलदेव प्रसाद संयुक्त सचिव बने। गया के इस संग्रहालय का नाम गया संग्रहालय रखने का प्रस्ताव पारित किया गया।

गया संग्रहालय हेतु कलाकृतियों के संग्रहण में स्थानीय नागरिकों की भूमिका काफी सराहनीय रही, जिनमें प्रमुख रूप से उमाशंकर भट्टाचार्य उर्फ राजाबाबू, श्री छोटे लाल भैया तथा कृष्णा लाल बारिक प्रमुख थे; जिन्होंने 1952 से 1954 के बीच भेंट स्वरूप वस्तुएँ प्रदान किया। गया संग्रहालय जिसका नाम सामूहिक सहमति से अब गया संग्रहालय सह मगध सांस्कृतिक केन्द्र, गया कर दिया गया, जिसमें विभिन्न आकार-प्रकार के पुरावशेषों, कलाकृतियों एवं देवी देवताओं की प्रतिमाएं संग्रहित तथा प्रदर्शित हैं।

गया जिला के खिजरसराय से प्राप्त पाल कालीन विष्णु की काले पत्थर की मूर्त्ति जिसकी लम्बाई 9 फुट है प्रधान आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। विष्णु की यह मूर्त्ति 8वीं से 10वीं शताब्दी की है। विष्णु की दूसरी मूर्त्ति दशावतार की है। जिसका निर्माण सन् 11वी शताब्दी की है। विष्णु दशावतार की यह मूर्त्ति दाबथू नामक स्थान से प्राप्त की गई है। ब्राह्मण देवी देवताओं की मूर्त्तियाँ 6 वी०सी० 12 वी० शताब्दी की है। अन्य देवी-देवताओं की मूत्तियों में शिव, नृत्यरत शिव, भैरव, लकुलिश, अजा-एक पद, उमा-महेश्वर, सूर्य, रेवन्त, अग्नि, कामदेव, हरिहर, सरस्वती, पार्वती, दुर्गा, चामुन्डा, नृत्यरत गणेश, भैरव आदि की है।

ब्राह्मण मूर्तियों के पश्चात बौद्ध प्रतिमाओं का स्थान है। इसके अन्तर्गत अवलोकितेश्वर, मंजु श्री, मंजुवर, मैत्रेय, तारा अपराजिता की प्रतिमाऐं संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

पाण्डुलियाँ जो 16 वीं से 19 वीं सदी की है, इनमें श्री मद्भागवत गीता, स्कन्द, पुराण, रामचरित मानस, दुर्गा सप्तशती प्रमुख हैं। सिक्के में स्वर्ण, रजत तथा कास्ंय की है। फारसी में आइने-ए-अकबरी, खम्साई शेख निजामी उपलब्ध है। मृण मूर्त्तियाँ (टेराकोटा) ईसा पूर्व तीसरी से 6वीं सदी की है, जो वैशाली और कुम्हरार से प्राप्त की गई हैं।

व्यक्ति परमात्मा का दूत होता है। इसका पुनीत कर्त्तव्य है अंत: में छिपे पड़े ईश्वरीय संदेश को विश्व के सम्मुख रखना। इस नाते हमारा पूरे मगध क्षेत्र सबसे अलग है। इसने अपने दायित्व को आज भी विश्व में अनमोल बनाये रखा है। इसे सुरक्षित, संरक्षित और संग्रहित करने की आवश्यकता हम सबों की है। हम अपने समस्त धरोहरों, पुरावशेषों एवं कलाकृतियों को सुरक्षित संरक्षित एवं संग्रहित करने में सचेष्ट रहे।

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग का यह केन्द्र गया संग्रहालय-सह-मगध सांस्कृतिक केन्द्र जिला प्रशासन एवं इस क्षेत्र के व्यापक जन-समूहो के सहयोग से सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक ज्ञानोपार्जन तथा मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ावा देने से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

गया संग्रहालय-सह-
मगध सांस्कृतिक केन्द्र, गया।

नि: स्वार्थ सेवा ही धर्म है

श्री अनिल स्वामी

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख और दु:ख आता-जाता रहता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति इस भू-मण्डल पर नहीं मिलेगा, जिसे कभी किसी तरह का दु:ख न हुआ हो अथवा जिसे कभी भी सुख की अनुभूति न हुई हो। सुख-दु:ख, धूप-छाँव की तरह प्रत्येक प्राणी के जीवन के साथ संयुक्त है। किन्तु जिस प्रकार जीवन क्षण-भंगुर है, उसी प्रकार सुख और दु:ख भी स्वामी नहीं हैं। इनका आना जाना, रात्रि और दिवा की तरह जीवन के साथ लगा है। अत: हर प्राणी को यह चाहिए कि इस क्षण-भंगुर स्थिति में वह स्थिर रहे। सुख के हर्षातिरेक्त और दु:ख में विषादातिरेक्त से अपने को बचाये रखें। अन्य जीवों की अपेक्षा, मनुष्य विवेकशील है। अत: हमें हर स्थिति में समभाव बनाए रखना चाहिए। किन्तु यह स्थिति जीवन में किस प्रकार आ सकती है कि हम सुख में अह्लादित न हो और दु:ख में अहर्निश रोते-कलपते न रहे, इसकी ओर ध्यान देना चाहिए।

हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि जब जीवन में अपने स्वार्थ अर्थात् 'मैं' से ऊपर उठने की कला आ जाती है, तब हमारा हर काम नि:स्वार्थ भाव से सम्पादित होने लगते हैं। नि:स्वार्थ भाव से सेवा-कार्य में संलग्न रहने पर ही 'मैं' से ऊपर उठकर 'पर' के क्षेत्र में हम प्रवेश करते हैं। इसी से परोपकार की भावना जगती है। और, जो व्यक्ति निरंतर परोपकार में लगा रहता है उसके जीवन में सुख और दु:ख का कोई स्थान नहीं है। हर स्थिति में वह प्रसन्न रहेगा। व्यक्ति विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों की लालसा रखता है। उसकी प्राप्ति नहीं होने पर उसका 'मैं' उसे दुख में ढकेलता है। यदि हमारे 'मैं' लालसाएँ समाप्त हो जाय, तो फिर दु:ख कैसा! इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपनी इच्छाओं पर अंकुश रखें और निरंतर प्रसन्नतापूर्वक परहित की सेवा में संलग्न रहें। यही मानव-जीवन का सबसे बड़ा और यथार्थ धर्म है।

आज कल धर्म की बड़ी चर्चा होती है। सभी लोग अपने को धार्मिक कहने में गौरव का अनुभव करते हैं। किन्तु समाज के हित के लिए नि:स्वार्थ भाव से सेवा-कार्य में संलग्न रहना कोई नहीं चाहता।

आज हमें अपने देश को, समाज को एक आदर्श बनाना है। यह तभी सम्भव है, जब हम एक कर्मयोगी की तरह समाज-सेवा के काम में नि:स्वार्थ भाव से लग जाय।

इस काम में आज के युवकों को आगे आने की अपेक्षा है; क्योंकि वे ही हमारे देश के भविष्य हैं। जब हमारे देश के युवक नि:स्वार्थ भाव से देश-निर्माण के कार्य में लग जायेंगे; तब हमारा देश पुन: जगत् गुरु के आसन पर प्रतिष्ठित हो जायेगा इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

नया पीपरपाँती, गया

✦

पर हित सरिस धर्म नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई ।।

– गोस्वामी तुलसीदास

गया श्राद्ध-कतिपय मिथक एवं उनका प्रत्याख्यान

प्रो० (डॉ०) रामनिहोर पाण्डेय

उत्तराखण्ड में गन्धमादन पर्वत पर अलकनन्दा (गंगा नदी की जो धारा कैलाश और बद्रीकाश्रम से होकर बहती है, उसे अलकानन्द कहा जाता है) के दाहिने तट पर बद्रीनाथ का प्रसिद्ध मंदिर एवं तीर्थ है, जिसकी गणना भारत का चार प्रसिद्ध धमों (तीन अन्य - जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम तथा द्वारका) में की जाती है। वराहपुराण में बदरिकाश्रम तीर्थ पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। बद्रीनाथ में अलकनन्दा का न केवल प्रवाह अति तीव्र है, अपितु जल भी अत्यन्त शीतल है। अत: मैदानी क्षेत्र के तीर्थयात्री मंदिर के नीचे समीप में स्थित तत्पकुण्ड में ही स्नान करके शालग्रामशिला से बनी बदीविशाल भगवान की चतुर्भुजी मूर्ति का दर्शन-पूजन करते हैं। तप्तकुण्ड के नीचे सड़क पर लगभग 280 मीटर दूर अलकनन्दा के किनारे एक शिला है, जिसे ब्रह्मकपाल या ब्रह्मकपाली (कपालमोचन) कहा जाता है। अनुश्रुति है कि भगवान शंकर ने जब कटुभाषी होने के कारण ब्रह्मा का पंचम शिर काट दिया तो वह उनके हाथ में चिपक गया। समस्त तीर्थों की यात्रा करते हुए जब भगवान शंकर यहाँ आए तो वह हाथ में चिपका कपाल स्वत: यहाँ गिर पड़ा था। ब्रह्मकपाली पर बद्रीनाथ की यात्रा करने वाले श्राद्ध तथा पिण्डदान करते हैं। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि बदरी तीर्थ में श्राद्ध करने वाले परम गति को प्राप्त करते हैं। कूर्मपुराण के अनुसार बद्रिकाश्रम में समाहित मन से श्राद्ध करके मनुष्य अपने सभी पितरों को मुक्त कर देता है।

मिथक एक : बद्रीनाथ में ब्रह्मकपाली के सम्बन्ध में सनत्कुमार संहिता में दो श्लोक उद्धृत हैं, जिसके अनुसार ''प्राचीन काल में जहाँ ब्रह्मा का शिर कपाल गिरा था, वहीं बद्री क्षेत्र मेंजो पुरुष पिण्डदान करने में समर्थ होते हुए यदि मोहवश गया में पिण्डदान करता है तो वह अपने पितरों को अध:पतन करा देता है और उनसे शापित होता है।'' इस वक्तव्य कि अतार्किक व्याख्या कर कतिपय महानुभावों ने यह सिद्धान्त स्थापित किया कि बद्री क्षेत्र में पिण्डदान करने के बाद गया में पिण्डदान नहीं करना चाहिए। बद्रीनाथ की यात्रा एवं वहां पिण्डदान करने के बाद वहाँ के तीर्थपुरोहितों ने मुझसे भी कहा था कि अब कहीं पिण्डदान करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु यह निर्वचन सर्वथा अयौक्तिक तथा निर्मूल है। धर्मशास्त्रों में गया में पिण्डदान की अतिशय प्रतिष्ठा निर्गदित है। गरुड़पुराण के अनुसार ब्रह्मज्ञान, गया श्राद्ध, गोशाला में मृत्यु तथा कुरुक्षेत्र में निवास ये चारों मुक्ति के साधन हैं। अन्यत्र आख्यात है कि ब्रह्महत्या, सुरापान, स्वर्ण की चोरी, गुरुपतत्नीगमन और इनसे संसर्गजनित महापातक गया में पिण्डदान से नष्ट हो जाते हैं। अपने पुत्र अथवा पिण्डदान देने के अधिकारी अन्य किसी वंशज के द्वारा जब गया क्षेत्र में स्थित गयाकूप में जिस किसी के नाम से पिण्डदान दिया जाता है उसे शाश्वत ब्रह्मगति मिलती है। गयाशीर्षतीर्थ में नामोच्चार के साथ-साथ पितरों को पिण्डदान करने से नरकलोक में रहने वाले पितृजन स्वर्गलोक तथा स्वर्ग में रहने वाले पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है। कूर्मपुराण में विवृत है कि गया नामक परमगुह्राय तीर्थ पितरों को अत्यन्त प्रिय है। वहाँ पिण्डदान करके मनुष्य पुनर्जन्म नहीं प्राप्त करता। गया की यात्रा करने में समर्थ होते हुए भी जो वहाँ नहीं जाता उसके सम्बन्ध में पितर शोक करते हैं। उसका अन्य सभी परिश्रम व्यर्थ होता है। गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान की महत्ता तथा एक प्रकार से अनिवार्यता को देखते हुए यह कहना कि ब्रह्मकपाली में पिण्डदान करने के बाद गया या अन्यत्र श्राद्ध या पिण्डदान नहीं करना चाहिए सर्वथा अनुचित है।

वास्तव में सनत्कुमार संहिता के उल्लेख में प्रयुक्त प्रभु:+पुमान् शब्द की गलत व्याख्या करने से ही पूर्वमत स्थिर किया गया। कुछ विद्वानों ने सुझाया है कि इस पद का सही अर्थ है – बद्री क्षेत्र में श्राद्ध करने में समर्थ होते हुए भी यदि कोई व्यक्ति गया में श्राद्ध करके ही सन्तुष्ट हो जाय तो उसके पितृगणों का अध: पतन हो जाता है। इनके विचार से गया श्राद्ध अकेले ही पितरों की मुक्ति के लिए पर्याप्त है। ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध तथा पिण्डदान ऐच्छिक है। पुराणों में तथा धर्मग्रन्थों में गया श्राद्ध का ही विशद् विवेचन है तथा इसकी महत्ता प्रतिपादित है। ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध की अनिवार्यता पर विशेष बल नहीं दिया गया है। अथच यदि सनत्कुमारसंहिता में ब्रह्मकपाली में श्राद्ध तथा पिण्डदान की महत्ता तथा वहाँ श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद गया में श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के निषेध की घोषणा को सही भी मान लिया जाय तो हमें उसे लेखक की अतिशयोक्ति करने की बद्धमूलता में आशातीत वृद्धि का परिणाम ही मानना पड़ेगा। लेखकों से देश, निवास स्थान या तीर्थ स्थानों से उनके विशेष परिचय तथा अनुराग से ही उनमें यह प्रवृत्ति विकसित होती है। कतिपय पुराणों तथा महात्म्यों में कभी–कदा किसी तीर्थ विशेष की प्रशस्ति इतनी अधिक कर दी गयी कि दूसरे अन्य तीर्थ उनके सामने नगण्य हो गये। उदाहरणार्थ पद्मपुराण में पुष्कर को संसार में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ मान लिया गया। इसी प्रकार महाभारतकार ने घोषणा की कि पुष्कर में स्नान तथा देव एवं पितृपूजन से अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है। वाराणसी की प्रशंसा करते हुए कूर्मपुराण में कहा गया है कि इससे बढ़कर न कोई स्थान है, न कोई ऐसा होगा। संभवत: सनत्कुमार संहिताकार ने भी इसी विचारधारा का अनुसरण किया तथा यह मान लिया कि ब्रह्मकपाली में श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद गया में पिण्डदान की आवश्यकता नहीं है।

मिथक दो : आजकल यह भ्रामक तथा मिथ्या प्रचार अथवा यों कहिए लोकमत प्रचलित है कि गया श्राद्ध अथवा ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध एवं पिण्डदान करने के बाद घर में वार्षिक श्राद्ध, महालयाश्राद्ध या अन्य पर्वों तथा तिथियों पर श्राद्ध, पिण्डदान तथा तर्पण की आवश्यकता नहीं है। प्राय: देखा भी जाता है कि गया में पिण्डदान करने के बाद लोग घर पर श्राद्ध के अवसरों पर श्राद्ध नहीं करते। कुछ लोग ऐसे अवसरों पर ब्राह्मण को भोजन करा कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। किन्तु यह सर्वथा अनुचित है। धर्मशास्त्रों एवं पुराणादिकों में जहाँ गया श्राद्ध एवं पिण्डदान की चर्चा है वहाँ कहीं भी, जहाँ तक मैंने देखा है, यह नहीं लिखा है कि गया में पिण्डदान के बाद श्राद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। आर्ष ग्रंथों के अनुसार ''पितृपूजन से आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशु, सौख्य तथा धन–धान्य की प्राप्ति होती है। कूर्मपुराण में आख्यात है कि अमावस्या के दिन पितर लोग वायव्य का रूप धारण कर अपने पुराने घर के द्वार पर आते हैं और देखते हैं कि उनके कुल के लोगों द्वारा श्राद्ध किया जा रहा है कि नहीं। ऐसा वे सूर्यास्त तक देखते हैं। सूर्यास्त के बाद भूख–प्यास से व्याकुल निराश हो जाते हैं। बहुत देर तक दीर्घ श्वास छोड़ते हुए अन्त में अपने वंशजों को कोसते हुए चले जाते हैं। कृष्ण चतुर्दशी को छोड़कर शेष प्रतिपादिक तिथियां, पौष माघ तथा फाल्गुन मास की अष्टकाएं (कृष्णाष्टमी), अमावस्या तीनों अन्वष्टकाएं (नवमी) तथा माघपूर्णिमा श्राद्ध के लिए पुण्य तिथियां हैं। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि पितृपक्ष तथा भरणी में किया गया श्राद्ध गया श्राद्ध के बराबर है। आनन्दरामायण में यात्राकाण्ड में उल्लेख मिलता है कि स्वयं भगवान राम ने गया में पिण्डदान करने के बाद (गया में महारानी सीता ने पितरों को पिण्डदान दिया था)। सरजू में स्नान करने के बाद दधि–श्राद्ध किया था। अत: गया तथा ब्रह्मकपाली पर श्राद्ध तथा पिण्डदान करने के बाद भी शास्त्रानुमोदित तिथियों, नक्षत्रों, पर्वों तथा माता–पिता के क्षयावह (मृत्युतिथियों) पर श्राद्ध तथा पिण्डदान अवश्य

करना चाहिए। परम्परा से जो ऐसा नहीं करते वे प्रमादवश समय तथा अर्थ की बचत के लिए ही ऐसा करते है। श्रृष्यश्रृंग का विचार है कि जिसने चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण के समय श्राद्ध किया मानो उसने सारी पृथ्वी को ब्राह्मण को दे दिया।

मिथक तीन : सामान्यत: लोक परम्परा में यह प्रचलित है कि गया में श्राद्ध एवं पिण्डदान केवल आश्विन कृष्ण पक्ष एवं चैत्र कृष्णपक्ष में ही किया जाय। अधिकतर लोग इसी नियम का अनुपालन भी करते हैं। इसीलिए इन समयों में गया यात्रियों की संख्या अधिकाधिक हो जाती है और प्रशासन के लिए व्यवस्था करना चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है। किन्तु यह परम्परा एवं लोकमत भी शास्त्रसम्मत नहीं है। वायुपुराण में स्पष्ट निर्देश है कि गया में सभी समय पिण्डदान किया जा सकता है, यहाँ तक कि अधिमास, जन्मदिन, गुरु-शुक्र के अस्त तथा सिंह राशि पर गुरु के रहने पर भी गया यात्रा त्याज्य नहीं है। अग्निपुराण में भी कहा गया है कि गयातीर्थ में काल का कोई नियम नहीं है। यहाँ प्रतिदिन पिण्डदान किया जा सकता हे।

मिथक चार : आमतौर पर देखा जाता है कि लोग गया में श्राद्ध तथा पिण्डदान माता-पिता दोनों के परलोकगमन के बाद ही करते हैं। लोकमत में ऐसा प्रचलित भी है कि दोनों का एक साथ ही किया जाय। किन्तु ऐसा शास्त्रीय विधान नहीं है। अग्निपुराण में स्पष्ट निर्देश है कि गया अष्टका तिथियों, आभ्युदयिक कार्यों तथा पिता आदि की क्षयाह तिथियों में भी माता के लिए पृथक श्राद्ध किया जा सकता है। अन्य तीर्थों में स्त्री का श्राद्ध उसके पति के साथ ही होता है। लोग अपनी सुविधा, समय तथा अर्थ की बचत के लिए ही पिता एवं माता की मृत्यु के बाद दोनों का गया श्राद्ध साथ-साथ सम्पन्न करते हैं। यदि कोई तो जिसकी मृत्यु पहले हो गयी हो, उसका श्राद्ध सम्पन्न कर सकता है। ऐसे कुछ उदाहरण मिलते भी हैं।

मिथक पांच : गया वालों अर्थात् गया के तीर्थ पुरोहितों (गया के ब्राह्मणों) का अपना विशिष्ट समुदाय है। उसमें किसी अन्य के प्रवेश की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। वायुपुराण, अग्निपुराण, गरुड़पुराण आदि में ऐसा उल्लेख मिलता है कि विष्णु द्वारा गयासुर को वरदान देने के बाद ब्रह्मा ने गया के ब्राह्मणों को पचपन गाँव, पाँच कोस तक विस्तृत गया क्षेत्र, कामधेनु गाएं, कल्पतरु तथा अन्यान्य विविध उपहार दिया किन्तु यह शर्त रखी कि वे न तो किसी से भिक्षा मांगेंगे, न दान लेंगे। किन्तु यम (धर्म) द्वारा सम्पादित यज्ञ में उन्होंने पौरोहित्य कर्म किया तथा दक्षिण मांगी। इस पर ब्रह्मा ने उन्हें लोभी, विद्याविहीन तथा सदा ऋणी रहने का शाप दिया तथा उनसे कामधेनु, कल्पवृक्ष तथा अन्य उपहार छीन लिया। तब ब्राह्मणों ने अपनी जीविका का साधन ब्रह्मा से मांगा। ब्रह्मा ने उनसे कहा कि ''इस तीर्थ से तुमलोगों की जीविका चलेगी। जो लोग गया की यात्रा करेंगे वे तुम्हारी पूजा करेंगे तथा हव्य, कव्य, धन आदि से तुम्हारा सत्कार करेंगे। ''इस प्रकार पुरातन काल से गया तीर्थ यात्रियों के दान-दक्षिणा से उनकी जीविका चलती आ रही है। हालांकि समय के मुताबिक अब कुछ लोग अन्य पेशे में भी सक्रिय हो रहे हैं। आम धारणा है कि गयावाल यात्रियों से सफल बोलने के नाम पर अधिकाधिक दक्षिणा की अपेक्षा रखते हैं। मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के परीक्षक के नाते मुझे कई बार गया जाने का सुयोग मिला। तथा मुझे भी पिण्डदान करने का अवसर मिला है। इस दरम्यान गया कॉलेज के प्रो० महेश कुमार शरण तथा उनके प्रिय शिष्य डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि' के माध्यम से मैं प्रो० (अब स्व०) एस०एन० गुर्दा के सम्पर्क में आया। प्रो० गुर्दा कुल परम्परा से गयावाल (तीर्थपुरोहित) के साथ-साथ पाली तथा संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान, नितान्त तपस्वी तथा अध्ययनशील व्यक्ति थे। उनकी इच्छा के अनुसार मैं, इलाहाबाद सी.पी.आई. के सेवा

निवृत प्रोफेसर श्री शिवबरन त्रिपाठी, श्री इन्द्रमणि देवी तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ सपरिवार दिसम्बर 2010 में (धनु राशि पर सूर्य के आने पर पौषमास में) पिण्डदान निमित्त गया की यात्रा की। प्रो० गुर्दा जी तथा उनके सुपुत्र ने जिस आत्मीयता के साथ गया के आवयश्यक तीर्थस्थलों (पिण्डियों) में श्राद्ध तथा पिण्डदान सम्पन्न कराया था तथा जो समुचित आवासीय सुविधा उपलब्ध करायी थी वह चिरस्मरणीय है। सुफल बोलते समय उन्होंने कोई मांग नहीं की। हमलोगों ने श्रद्धाभाव से यथाशक्ति जो दक्षिणा दी उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर हमलोगों को हार्दिक आशीर्वाद दिया। मेरी गया यात्रा के पश्चात् कई अन्य महानुभाव मेरे माध्यम से गया की यात्रा की। प्रो० गुर्दा जी का सभी के साथ वही सद्भावना पूर्ण व्यवहार रहा। प्रो० गुर्दा एवं उनके सुपुत्र के सद्भावनापूर्ण व्यवहार से इस सम्बन्ध मिथक पर विराम लग जाता है कि सभी गयावाल ब्राह्मण तीर्थयात्रियों से सुफल बोलने के नाम पर दक्षिणा वसूलते हैं।

पूर्व ऐसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

✦

मनुष्य का धर्म

श्री राकेश कुमार सिन्हा 'कुन्नू'

हर प्राणी में अच्छे और बुरे गुण विद्यमान रहते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसमें पूर्णत: सद्‌गुण ही रहें अथवा केवल दुर्गुण ही रहें। 'जड़-चेतन गुण दोषमय विश्व किन्ह करतार'-इसी में से जो व्यक्ति अपने सद्‌गुणों का विस्तार करता है, उसके दुर्गुण दबे रहते हैं। गीता में भी कहा गया है कि सत्, रज तथा तम - सभी व्यक्ति में रहते हैं। जहाँ सत गुण, रजोगुण दब गए, वहाँ तमो गुण उभर आते हैं; जो व्यक्ति, समाज तथा सम्पूर्ण मानवता के लिए घातक होता है। किन्तु जब तमो गुण और रजो गुण दब जाते हैं, तब मनुष्य में सत्व गुण का अभ्युदय होता है। फिर ऐसा ही व्यक्ति समाज तथा देश के लिए आदर्श माना जाता है। धर्म मनुष्य को सत्व गुण की ओर प्रेरित करता है। जिस मनुष्य ने अपने जीवन में धर्म को धारण किया, वह मानवता और इंसानियत के लिए आदर्श माना जाता है।

सच पूछा जाए, तो धर्म मानव-जीवन में लोक मंगल की कामना है। इससे जीवन में त्याग, समर्पण और पर-हित की भावना पैदा होती है। इन गुणों को अपना कर ही मनुष्य-जीवन में ही देवत्व की प्राप्ति होती है। अत: यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने जीवन की धारा को त्याग और समर्पण के दो किनारों के बीच ही अनवरत प्रवाहित रखे। धर्म के संबंध में तरह-तरह की धारणाएँ प्रचलित हैं। किन्तु धर्म जीवन का अत्यंत ही सहज गुण है। जैसे पानी का धर्म शीतलता है, अग्नि का धर्म ज्वलन है, उसी प्रकार मनुष्य का धर्म प्रेम है। कठोर-से-कठोर व्यक्ति में ही प्रेम का भाव भरा रहता है। केवल मनुष्य ही नहीं प्रत्येक जीव में प्रेम का भाव प्रत्यक्ष है। पशु-पक्षियों को देखिए; खूँखार से खूँखार जानवरों में भी अपनी संतान के प्रति प्रेम अनवरत छलकता रहता है। मनुष्य विवेकशील है, अत: उसने अपने हृदय के प्रेम को विस्तृत करने की कला सीखी है।

मनुष्य ने अपने विवेक से जाना है कि धर्म के मूल में जीव की प्रसन्नता, परिश्रम, भक्ति, परोपकार आदि भाव निहित हैं। स्पष्टत ये ही गुण मानवीय गुण हैं। हम जिस स्थिति में रहें, अपने को प्रसन्न रखें। इससे जीवन में कभी निराशा नहीं आयेगी। हम ईमानदारी से परिश्रम करें। सफलता निश्चय मिलेगी। ईमानदारीपूर्वक किए गए परिश्रम से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। और भक्ति की कोई सीमा नहीं है। माता, पिता गुरु तथा देवों अथवा सभी जीवों के प्रति हमारी भक्ति प्रेम-पूर्ण गंगाजल की तरह सबों का कल्याण करती रहेगी और दूसरे माध्यम से ही हम में परोपकार की भावना जागती रहेगी।

मनुष्य विवेकशील प्राणी है। अत: इसे जीवन में परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहना चाहिए। समाज-कल्याण के लिए उसे त्याग और नि:स्वार्थ भाव से अपना काम करना चाहिए। इससे ही किसी व्यक्ति को सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। विवेकानन्द के शब्दों में, धर्म वह वस्तु है जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है।

अत: प्रत्येक मनुष्य को समाज के प्रति नि:स्वार्थ भाव से सेवा-कार्य करते हुए मानव-धर्म का पालन करना चाहिए। ऐसा करने पर ही कोई मानव सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी हो सकता है।

अधिवक्ता
सरोज मार्केट, टिल्हा, गया

✦

जगदीश चन्द्र माथुर और गया

डॉ० मनोज कुमार अम्बष्ट

देश की आजादी के उपरान्त गया जिले के प्रशासन और विकास की जिम्मेवारी जिस तीस वर्षीय नौजवान को सौंपी गई थी। वे कोई और नहीं बल्कि हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार और लेखक जगदीश चन्द्र माथुर थे। दिनांक 15 अगस्त 1947 ई० को गया के जिलाधिकारी के रूप में योगदान देकर उन्होंने 9 अप्रैल, 1949 ई० तक के अपने कार्यकाल में गया को कुशल प्रशासन प्रदान करते हुए यहाँ की साहित्यिक और सांस्कृतिक भूमि को भी सिंचित किया। आजाद पार्क के पश्चिमी भाग में गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना में उनकी भूमिका और गांधी मैदान में गांधी मंडप का निर्माण इसका प्रमाण है। विद्यार्थी जीवन से ही हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाले, इंडियन सिविल सर्विस के इस अधिकारी का साहित्यिक योगदान प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

दिनांक 16 जुलाई, 1917 ई० को उत्तरप्रदेश के खुर्जा में जन्में जगदीश चन्द्र माथुर की उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हुई। शहर और विश्वविद्यालय के साहित्यिक वातावरण ने इनकी प्रतिभा को निखारने में अनुकूलता प्रदान की। इसका प्रभाव उनपर आजीवन बना रहा। उन्होंने किशोरावस्था से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था और सन् 1930 से इसमें सक्रिय हो गये। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र जीवन में ही उन्होंने नाटक लिखे, जिसका मंचन भी हुआ। वे कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक पत्रिका 'मतवाला' में भी छपने लगे और तत्कालीन साहित्यकारों को इस होनहार युवक से काफी उम्मीदें थी। सन् 1939 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम०ए० किया। प्रसिद्ध साहित्यकार राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के ज्येष्ठ पुत्र राजेन्द्र प्रसाद सिंह इलाहाबाद में इनके सहपाठी थे, जिससे छात्र जीवन से ही वे राजा साहब से जुड़ गये थे। उनके साथ अपने संबंधों में उन्होंने 'जिन्होंने जीना जाना' नामक पुस्तक मे स्पष्ट रूप से लिखा है। सन् 1941 में वे प्रतिष्ठित इंडियन सिविल सर्विस में आए और उन्हें बिहार संवर्ग मिला। इस प्रकार उन्हें बिहार को जानने का मौका मिला और बिहार को उनसे लाभान्वित होने का।

उनकी तैनाती हाजीपुर में अनुमंडल पदाधिकारी के पद पर हुई। वहाँ उन्होंने विश्व की प्राचीनतम गणतंत्र वैशाली की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का कार्य किया और वैशाली महोत्सव की शुरुआत की। गया में उन्होंने जिलाधिकारी में रूप में गांधी मैदान के मध्य में 1.78 एकड़ भूमि पर बौद्ध और हिन्दू वास्तुकला पर आधारित वृत्तकार गांधी स्मारक बनवाया जिसका शिलान्यास बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री एम० ए० अजे ने दिनांक 20 जून 1948 ई० को किया। यहाँ पर कार्यक्रम हेतु खाली मैदान, दर्शक दीर्घा, केन्द्र के बापू की स्मृति में कलात्मक स्तंभ और दक्षिणी छोर पर मंचनुमा ऊँचाई पर खुला बरामदा के अतिरिक्त दो कक्ष भी बने हुए हैं, जिसमें एक का नाम बाद में उनकी स्मृति में जगदीश चन्द्र माथुर कक्ष रखा गया है। हिन्दी सेवियों और हिन्दी के विकास के निमित्त स्थापित गया जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना में भी इनका योगदान स्मरणीय है। वह 6 वर्षों तक बिहार के शिक्षा सचिव भी रहे। इस अवधि में हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि हेतु पटना के सैदपुर मुहल्ला में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद (16 जून 1951 ई०) की स्थापना में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। बिहार के मेधावी छात्रों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने हेतु नेतरहाट आवासीय विद्यालय (15 नवम्बर 1954 ई०) की

स्थापना एक अभिनव प्रयोग था, जो स्थापना काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ। यह माथुर साहब की दूरदृष्टि का परिचायक है।

भारत में टेलिविजन की शुरुआत सन् 1949 ई० में हुई। माथुर साहब ने इसका नाम 'दूरदर्शन' रखा। वे सन् 1955–62 ई० तक ऑल इंडिया रेडियो के महानिदेशक रहे। इस संस्थान के मूल उद्देश्य और भावना के अनुरूप उन्होंने इसका नाम 'आकाशवाणी' रखा। सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे उच्च कोटि के साहित्यकारों को आकाशवाणी से जोड़कर उन्होंने सूचना संचार तंत्र को विकसित किया। शहर से सुदूर गाँव तक, शिक्षित से अशिक्षित तक इस प्रभावोत्पादक संचार माध्यम को पहुँचाने के कारण उन्हें 'सूचना संचार क्रांति का जनक' भी कहा जा सकता है। दिनांक 19 दिसम्बर 1971 ई० से उन्होंने भारत सरकार में हिन्दी सलाहकार का कार्य भी किया। उनकी साहित्यिक कृतियों में 'भोर का तारा' (नाटक, 1946), 'कोणार्क' (नाटक, 1950), 'ओ मेरे सपने' (1950), 'शारदीया' (नाटक, 1959) 'दस तस्वीरें' (1962), 'परंपराशील नाट्य' (समीक्षा, 1968), 'पहला राजा' (नाटक, 1970) और 'जिन्होंने जीना जाना' (1979) प्रमुख है। नाटक की विद्या को उन्होंने अपनी लेखनी से समृद्ध किया। उन्होंने अच्छे एकांकी भी लिखें। 'परंपराशील नाट्य', लोक नाट्य की परंपरा और उसका सामर्थ्य की विवेचना है। 'दस तस्वीरें' और 'जिन्होंने जीना जाना' में, सच्चिदानन्द सिन्हा, जवाहर लाल नेहरू, राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह, देविका रानी जैसे समाज के विभिन्न क्षेत्रों की महत्त्वपूर्ण हस्तियों के संस्मरण हैं, जिनसे माथुर साहब प्रभावित हुए। 'भोर का तारा' में संग्रहित सभी नाटक उनके छात्र जीवन के हैं और प्रयाग प्रवास में लिखे गये हैं। उन्होंने परंपरा को माध्यम और संदर्भ के रूप में सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। ऐतिहासिक नाटक 'कोणार्क' माथुर साहब की रचनात्मक संभावना को स्थापित करता है। 'रीढ़ की हड्डी' जैसे एकांकी में उन्होंने समाज के अन्दर बदलते रिश्तों और मानवीय संबंधों को दर्शाया गया है। उन्हें छायावादी संवेदना का रचनाकार माना जाता है। साहित्यिक अभिरूचि और व्यक्तिगत संबंध के कारण पटना से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' जिसमें तत्कालीन सम्पादक राजा साहब के पुत्र उदयराज सिंह थे, में भी वह लिखते रहे।

अंग्रेजी में शिक्षित होकर हिन्दी की सेवा करने वालों में जगदीश चन्द्र माथुर का नाम अग्रगण्य है। सच कहा जाय तो, 'अंग्रेजी शिक्षित हिन्दी साहित्यकार एवं उनकी प्रवृत्तियाँ' हिन्दी साहित्य शोध का एक महत्त्वपूर्ण विषय हो सकता है। दक्षतापूर्वक प्रशासन की व्यस्त सेवा से समय निकाल कर साहित्य की सेवा करना कोई माथुर साहब से सीखे। अपने जीवन में प्रशासन के प्रशस्त पथ के मध्य साहित्य के सुमन खिलाकर चौराहे पर संस्कृति रूपी प्रकाश बिखेरने की व्यवस्था उन्होंने की है। उनका जीवन प्रशासन साहित्य एवं संस्कृति की त्रिवेणी के रूप में अनुकरणीय है।

फ्लैट नं० - 204, रीना रेसिडेन्सी
श्री कृष्ण नगर, पटना
मो० : 9430200800

ऋतु आये फल होय

श्री गौतम कुमार

जीवन क्रमशः आगे बढ़ने का नाम है। छलांग मारकर दौड़ने वाला मुँह के बल गिरेगा ही, धीरे-धीरे एक-एक सीढ़ी पर चढ़ने वाले को गिरने का भय नहीं रहता। ऊपर चढ़ने में देर अवश्य लगती है, पर वह एक-न-एक दिन मंजिल पर पहुँच ही जाता है। मृत्यु दिखाई नहीं देती, पर वह हमेशा प्राणिमात्र के साथ छाया की तरह फिरती रहती है। कितने भी पहरे में रहो, अपनी कितनी भी हिफाजत करो, पर मौत कहीं भी तुम्हें छोड़नेवाली नहीं। उसे बहाने की तलाश रहती है, जरा भी बहाना मिला और उसने अपना मुख खोला। जैसे किसी अपराधी के पीछे पुलिस लग जाती है, पर जबतक अपराध साबित न हो, वह उसे पकड़ नहीं सकती। लेकिन अपराध साबित होते ही वह उसी समय अपराधी को पकड़ लेती है। एक पल की भी देर नहीं करती। इसी प्रकार मौत भी बहाना ढूँढती हुई प्राणिमात्र के पीछे लगी रहती है। ज्ञानी मनुष्य मृत्यु से सतर्क रहता है। वह आसानी से उसके पंजे में नहीं आता। ज्ञानी पुरुष वह है, जो अपनी बुद्धि से काम लेता है। किसी भी काम को करने से पहले उसका परिणाम सोच लेना ही बुद्धिमानी की निशानी है। यदि तुम्हें अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं, तो अपने आपको भगवान के चरणों में सौंप दो। जिस तरह नासमझ बच्चा माँ की गोद में जाकर निर्भय हो जाता है। माता अपने बच्चे के दुःख-सुख का भार अपने ऊपर लेकर उसकी रक्षा करती है।

तुम भी भगवान पर भरोसा रखकर निर्भय हो जाओ। सोच लो, वे जो भी करेंगे तुम्हारे भले के लिए ही करेंगे। जो कुछ भी वे तुम्हे दें, प्रसन्नतापूर्वक लो। दूसरे के सुख-वैभव को देखकर मन मत ललचाओ, अपने भाग्य को मत धिक्कारो। सोच लो कि जितना तुम भोग सकते हो, उतना ही भगवान ने तुम्हें दे रखा है। जिस तरह माँ अपने चार बच्चों में सबको एक समान प्यार करती है, पर एक समान प्यार करते हुए भी उसे कभी-कभी व्यवहार में भेद करना पड़ता है। मान लो, चार में से एक बच्चा रोगी हो जाता है, ते चारों में समानता रखते हुए भी माँ तीन को मिठाई खिलाती हैं और उसको कड़वी दवा का सेवन कराती है। कड़वी दवा पीने वाला बालक दूसरे भाइयों को मिठाई खाते देखकर माँ से लड़ता है, रोता है, तंग करता है, तो क्या माँ अपने उस रोगी बेटे को मिठाई खाने देगी ?कभी नहीं। बच्चे का भला चाहने वाली माँ कभी भी उसे हलवा-पूरी नहीं दे सकती। इसलिए यदि हम दूसरे भाइयों को सुख-वैभव भोगते देखकर अपने को दुखी करें, भगवान को भला-बुरा कहें, तो यह हमारी मूर्खता होगी। दयालु प्रभु हमारी इस अज्ञानता पर मुस्करा देते हैं।

दुःख कड़वी दवा के समान है, जिसे देखते ही हम अबोध बच्चे की तरह हाथ-पाँव मारने लगते हैं, अपने भाग्य को कोसते हैं, यह नहीं समझते कि दयालु प्रभु ने हमारे अच्छे के लिए ही यह कड़वी दवा भेजी है। हमारी बढ़ती इच्छाएँ ही हमारी बीमारी है। ये जब बढ़ती जाती है, तब हमें भले-बुरे का कोई ज्ञान नहीं रह जाता। जिसपर प्रभु की कृपा दृष्टि हो जाती है, उसे जल्द ही ठोकर लग जाती है और वह संभल जाता है। जिन पर प्रभु कृपा नहीं करते उनकी इच्छाएँ बढ़ती ही रहती हैं, मृत्यु-पर्यन्त उन्हें संभलने का मौका नहीं मिलता। इसलिए जितना भी हो सके, अपनी इच्छाओं का दमन करो और जहाँ तक भी हो सके उनसे दूर रहने की कोशिश करो।

तुम मानो या ना मानो, तुम्हें जितनी जरूरत है, उतना भगवान ने तुम्हें दे रखा है। छोटे-से-छोटे कीड़े का भी पेट वे भरते हैं।

शरीर में गरमी का रहना जरूरी है, इसे कौन नहीं जानता। जब यही गरमी उचित मात्रा से अधिक बढ़ जाती है, तब लोग उसे बुखार कहने लगते हैं। इसी प्रकार जितनी तुम्हारे शरीर की जरूरत है, उससे अधिक की इच्छाएँ भी एक बुखार की तरह हैं। इससे जितना दूर रहो, उतना ही अच्छा है। नहीं तो, यही इच्छाएँ एक दिन तुम्हारे लिए मृत्यु का बहाना बन जायँगी। इच्छाओं के वशीभूत हुआ प्राणी जीवन में छलाँगें मारने लगता है, और मृत्यु उसकी तरफ बढ़ती चली आती है।

एक लक्खूमल थे – पता नहीं माँ–बाप ने क्या समझकर उनका लक्खुमल नाम रख दिया था। पर लक्खुमल समझते थे कि मेरा यह नाम लखपति बनने की निशानी है। भगवान ने खाने–पहनने को पर्याप्त दे रखा था। दो ही जीव थे पति–पत्नी। मजे में गुजर चल रही थी। पर ज्यों–ज्यों लखपति बनने की इच्छा बलवती होती गयी, सुख–शांति दूर हटती गयी। रात को नींद और दिन को खाना–पीना हराम हो गया। इतना पैसा कैसे प्राप्त हो, बस दिन–रात यही चिन्ता। थोड़ा–थोड़ा जमा करते तो सारी उम्र ही निकल जायेगी। इच्छारूपी बुखार बढ़ता जा रहा था। रोग जब असाध्य हो गया तो अच्छे–बुरे का ज्ञान भी जाता रहा। घर में जो जमा–पूँजी थी, सट्टे में लगा बैठे। जीत हुई, हौसला बढ़ा। जीता हुआ रुपया फिर लगा दिया और एक ही दिन में लक्खुमल लखपति हो गये। खुशी के मारे चीख उठे, बेहोश हो गये। लोगों ने संभाला, देखा सेठ ठंडे हो चुके थे। मृत्यु को उनकी दौड़ भायी नहीं, उसे बहाना मिल गया–लोगों में चर्चा थी कि खुशी के मारे हार्ट फेल हो गया।

दूसरे थे करोड़ीमल। तीन–चार लाख रुपये पास थे, स्त्री थी, बच्चे थे। आनन्द से गुजर कर रहे थे। पर करोड़ीमल की इच्छा अपने नाम को सार्थक करने की थी। दो–चार लाख हुआ तो क्या हुआ। नाम तो उनका करोड़ीमल था। कैसे इन लाखों का करोड़ हो, इसी चिन्तन में रात–दिन घूमने लगे। पैसे वालों के सलाहकार भी कम नहीं होते। कुछ मित्रों ने सलाह दी कि – रेस में घोड़ा लगा दो, एक दिन में करोड़पति हो जाओगे। मन के किसी कोने से पुकार उठी–यह घबराहट अच्छी नहीं। पर इच्छा सेठ को बढ़ावा दे रही थी। कुछ रुपया लगाए हारे, डरे भी, ठोकर लगी तो पीछे हटने लगे, पर मित्रों ने उत्साहित किया।

गिरते हैं शह सवार ही मैदान–ए–जंग में।

वह तीफ्ल क्या गिरेंगे, जो घुटनों के बल चलें।

सेठ जी चढ़ गये। हारते रहे, खेलते रहे – एक दिन जब मुनीम जी से रुपये माँगे, तब पता चला कि फूटी कौड़ी भी नहीं रह गयी है। सेठ आँख फाड़े, हाथ पसारे मुनीम जी को देखते खड़े रह गये। सेठ जी! सेठ जी! मुनीम जी उन्हें इस तरह देखते देखकर पुकारा – पर सेठ वहाँ कहाँ थे – मृत्यु ने मौका देखा और हाथ मार गयी। घर में रोना–पीटना हो गया था – आज बच्चों के पास कुछ खाने के लिए भी नहीं बचा था। लोग कह रहे थे, दु:ख से हार्ट फेल हो गया सेठ जी का।

इच्छाएँ ज्यों–ज्यों बढ़ती हैं, मृत्यु हमारी ओर बढ़ती है। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसमें संतोष मानो। इच्छाएँ तुम पर हावी न हो सकें, तुम इच्छाओं पर हावी जाओ। फिर देखो तुम्हें कितना आनन्द मिलता है। इच्छाएँ तुम्हारी आज्ञा पर चलेंगी, मृत्यु तुमसे कोसों दूर रहेगी – भगवान के कृपा–पात्र बने रहोगे और इसी पृथ्वी पर स्वर्ग–सुख का अनुभव करोगे। इसलिए मनीषियों ने कहा है –

धीरे–धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।

माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होय।।

सहायक ऑडिट ऑफिसर
ए० जी० ऑफिस, पटना
मो० : 8084696692

मंत्राधीन मोक्षः

डॉ० कमला गोखरू

जग की संरचना करते समय रचनाकार ने समष्टि में व्यष्टि की आकृति-प्रकृति की भिन्नता रची है। या यों कहें कि प्रकृति का कर्ण-प्रिय, दृष्टि -प्रिय काव्य ही समष्टि का रूप है। उसमें व्यक्ति की उत्पत्ति से लेकर अवसान तक की प्रवृत्ति का पूरा-पूरा ख्याल रखा गया है। फिर उनके कर्म-क्षेत्र के अनुसार कार्य, कार्य के अनुसार धर्म, धर्म के अनुसार उनकी आकृति-प्रकृति एवं मन-विश्वास की संरचना हुई है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक व्यक्ति का एक ही निर्धारित कर्म होता है, जो दूसरों से भिन्न होता है और उसके लिए कालखण्ड के अनुसार क्षेत्रखण्ड भी आवंटित किए जाते हैं। इसे ध्यान में रखें तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का यह गया-तीर्थ अद्‌भुत, अकेला और अद्वितीय है। इस क्षेत्र में मंदिरों की स्थापना के पूर्व निश्चित रूप से बृहद् कानन रहा होगा, जहाँ तपश्चर्चा के लिए असंख्य ऋषि प्रणतातिरेक का अनुभव करते होंगे। उनके मुखारविंद से उद्‌भुत मंत्रों की ध्वनि ने ही इसे सिद्धपीठ स्थापित कर दिया होगा। इससे ही आज मोक्ष नगरी के रूप में यह गयाधाम प्रतिष्ठित हो गया है। यह तो धाम की प्रतिष्ठा है। परन्तु धाम मंत्र के बिना फल नहीं देते। इसे और स्पष्ट कर देखा जाए। गया पितरों की नगरी है और श्राद्ध कर्म से मोक्ष-प्राप्त होती है यह सर्व विदित है। हिन्दू संस्कृति और सनातन धर्म के अनुसार इस में एक अद्‌भुत विश्वास संचारित है इसकी शक्ति ध्वनि में है। परन्तु पुराणों को देखें।

पितरः वाक्यमिच्छिन्ति भावमिक्षन्ति देवताः।

यहाँ वाक्यम् इच्छान्ति से तात्पर्य है मंत्र जो शुद्ध ध्वनि विज्ञान है। मंत्र-विज्ञान पर कई शोध हुए और वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि यह योग की एक इकाई है, जो दूर बोध सम्मत है एवं ध्वनि विज्ञान का परम शक्तिशाली आविष्कार है। यहाँ थोड़ा भ्रम हो सकता है। हमारी आर्ष-संस्कृति में ऋषि-मुनि मंत्र-द्रष्टा होते रहे हैं। मान सकार ने आज से 500 वर्ष पूर्व संकेत दिया था :-

मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरिहर सुर सर्व
महा मत्त गजराज कँह, बस कर अंकुस खर्व
मंत्राधीन। देवताः

इसलिए इसे वैज्ञानिकों का अविष्कार नहीं कह कर, इसे एक अनुसंधान कहा जाना ही उचित है। मंत्र ध्वनि विज्ञान है। इसलिए इसे मसि-कागज के संयोग की आवश्यकता नहीं होती। यह गुरु-ज्ञान या गुरु-आदेश के रूप में एक ऋषि से दूसरे ऋषि तक पहुँचाया गया है। इसकी ध्वनि में परिवर्त्तन होने से इसकी शक्ति कुण्ठित हो जाती है। अक्षरों के सुन्दर संयोग, ध्वनियों के सुमधुर सरगम को मंत्र की परिभाषा दी जा सकती है। परन्तु शास्त्रों की परिभाषा उल्लेखनीय है।

<u>मनजात जपते इति मत्रं:</u>। यानि जिसके मनन (जपने) से जन्म मरण के बन्धन से छुटकारा मिल जाय वही मंत्र है। ध्यान रहे उच्चारण की ध्वनि मुख अक्षर के बाहर नहीं निकले, यानि अपना कान भी नही सुने, वही मंत्र है। आज भी मंत्र के प्रयोग-उपयोग हो रहे हैं। अदृश्य शक्तियों में मंत्र की ध्वनि से स्पन्दन पैदा कर आज भी सिद्ध मंत्र-मर्मज्ञ जन कल्याणार्थ इस कार्य को सम्पादित कर रहे हैं। मंत्र-जाप के द्वारा इच्छित्त कार्य करने-करवाने में समर्थ लोग ही योगी ऋषि-मुनि कहलाते हैं। अतः मंत्र में आत्मा की मुक्ति जो स्वयं मुक्त है, सम्भव है। आवागमन से मुक्ति दिलाने की शक्ति इन मंत्रों में है और मुझे प्रतीत होता है कि इस कला के विशेषज्ञ गया-तीर्थ क्षेत्र में ही रहते थे, जिनका कार्य ही था पीड़ित प्रेतात्माओं को मुक्ति दिलाने का इतदर्थ ही

इस कार्य के लिए इससे प्रभावित लोग अधिकाधिक संख्या में गया जी पधारते थे। इसीलिए यह क्षेत्र मुक्ति क्षेत्र (धाम) के रूप में विख्यात हुआ है। साथ ही ऋषियों के वासानुकूल यहाँ के जंगल, पेयानुकूल अन्तः सलिसा नदी आसनार्थ प्रचूर वालु का राशि, अर्पण पाती अक्षयवट सुलभ है। यह सब कुछ प्रासंगिक हैं। इन्हीं मंत्रों, विश्वासों धारणाओं एवं कार्य-कारण से सापेक्ष रूप में सम्पृक्त रहने के संयोग-बल से इस क्षेत्र का कण-कण, यहाँ की फल्गु की रेत, यहाँ के वनों के पत्र-पुष्प फलादि सभी कुछ एक साथ एक रूप में बन्दनीय, नमनीय हैं। मैं गया के कण-कण को नमन करती हूँ।

मैं गयाधाम को शत्-शत् प्रणाम करती हूँ।

हृदय चिकित्सा केन्द्र
अजमेर, राजस्थान

✦

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि

डॉ० नलिनी राठौर

हमारे धर्मग्रन्थों में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पंच विकार कहे गये हैं, जो व्यक्तित्व विकास के बाधक हैं। लेकिन, क्या ये विकार पूरी तरह त्याज्य हैं? क्या मानव भी इन विकारों को पूरी तरह से त्याग करने में सक्षम है? ये सब भावनाओं के आवेग हैं जिसके आते ही शरीर में एक प्रकार की रासायनिक क्रिया अपने-आप आरम्भ हो जाती है, जो मानव की बुद्धि को प्रभावित कर देती है। प्रभाव सकारात्मक हो तो आवेग बुद्धि का सहायक बनकर कर्म का मार्ग भी दर्शाते हैं और उसके लिए साहस और क्षमता भी अर्जित कर देते हैं। ऐसी अवस्था में मानव असाध्य कार्य भी कर लेता है। इसके विपरीत यदि आवेगें पर नियंत्रण न किया जाये, या सब यह अपनी सीमा का उल्लंघन करते हैं, तभी ये विकार कहे जाते हैं अन्यथा इनके बिना मानव अपना सांसरिक जीवन ही नहीं चला सकता।

काम या शक्ति के अभाव में पितृ ऋण से मुक्ति संभव नहीं। लोभ प्रेरणा है जीवन में कुछ पाने की। लोभ एक आवश्यकता है, जिसके बिना पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह कठिन है। घर का प्रेम, ग्राम का प्रेम तथा देशप्रेम इसी पवित्र लोभ के क्रमशः विस्तृत रूप हैं। मोह अदृश्य बंधन है, परिवार को बांधने का मोह मानव को पितृत्व व मातृत्व के साथ-साथ अन्य रिश्तों के दायित्व को निभाने की प्रेरणा देता है, और इसी मोह के कारण हम अपने पितरों का तर्पण मोक्ष प्राप्ति हेतु विभिन्न अनुष्ठान करते हैं।

लोभ का तात्पर्य केवल इच्छा, लालसा, कामना नहीं है। ये तो जीवन के आवश्यक अंग हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है ''इच्छाविहीन नरस्य पशुर्समान।'' लेकिन जब इच्छा पर लोभ आ जाता है और लोभ व मोह के कारण अति ममत्व आ जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप जो असंतोष मन में उत्पन्न होता है, उसे लोभ कहा जाता है। धन, द्रव्य एवं भौतिक पदार्थों सहित अपनी कामनाओं की प्राप्ति के लिए असंतुष्ट रहने की वृत्ति को लोभवृत्ति कहा जाता है। लोभ के स्वरूप हैं। लालच, प्रलोभन, तृष्णा असंयम के साथ अनियंत्रित एषना। संग्रह प्रवृत्ति, अदम्य आकांक्षा, कृपणता (कंजूसी), प्रतिस्पर्धा, प्रमाद आदि लोभ के हीं भाव हैं।

जब लोभ व्यक्ति के जीवन में आता है तो उसके धैर्य को खा जाता है; संतोषभावना का विनाश कर देता है। लोभवश व्यक्ति अपनी नैतिकता खो बैठता है। क्रोध, हिंसा, झूठ, चोरी आदि लोभ के सहचर हैं, जो कदम-कदम पर मानसिक विक्षोभ और सामाजिक अशांति के कारक बनते हैं।

आधुनिक युग में हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण लोभ ही है। कबीर ने कहा है कि तृष्णा मन को विविध विषयों में भटकाती रहती है। संसार का समस्त वैभव समाप्त हो जाने के बाद भी तृष्णा जीवित रहती है।

''माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया शरीर।

आशा तृष्णा ना मुई कहि गये दास कबीर।।

मोह का सीमा-उल्लंघन एक मानसिक व्याधि है, जिसके कारण व्यक्ति आसक्ति के चक्र में फंस जाता है। सामान्य रूप से 'मोह' का अर्थ अज्ञान, अविद्या, भ्रांति लिया जाता है। यह सद्वृत्तियों का विनाशक और निम्न वृत्तियों का उत्पादक होता है। लोभ या मोहवश कुछ लोग सामाजिक तथा नैतिक मर्यादाओं को लांघकर अपने स्वजनों का हित करने में लगे रहते हैं।

''तमस्त्वज्ञानजं विछिद मोहनं सर्वदेहिनाम्।

प्रभादालस्यनिद्राभिष्टन्निबध्यनाति भारत।।

(गीता 28 अध्याय)

हे भरतवंशी! तमोगुण को शरीर के प्रति मोह के कारण अज्ञान से उत्पन्न समझ जिसके कारण जीव प्रमाद, आलस्य और निद्रा द्वारा बंध जाता है।

महाभारत उसी अनवरत युद्ध की कथा है, जो मनुष्य को अपने बाहरी और भीतरी शत्रुओं के साथ निरन्तर करना पड़ता है। धर्मक्षेत्र और कुरूक्षेत्र हमारा शरीर है। श्री कृष्ण कहते हैं। ''इदं शरीरं कैन्तेय क्षेत्रभित्यभिघीयते।

(गीता अध्याय 13.2)

हे अर्जुन ये शरीर ही क्षेत्र है जब हृदय में दैवी संपत्ति (अच्छी भावनायें) बढ़ती हैं, तब यह शरीर धर्मक्षेत्र बन जाता है और जब हृदय में आसुरी संपत्ति (राक्षसी भावनायें) बढ़ती हैं, तब यह कुरूक्षेत्र बन जाता है। अज्ञानता से सना हुआ मन ही अंधा घृतराष्ट्र है। मोहरूपी दुर्योधन अज्ञान मन से पैदा होता है। सद्गुणों और दुर्गणों के बीच प्रतिदिन हमारे मन में चलने वाला द्वन्द्व ही महाभारत है।

कुरुक्षेत्र में जब धनुर्धर अर्जुन की दृष्टि अपने स्वजनों पर पड़ी, तो उन्हें मोह ने जकड़ लिया, ऐसे में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्म का बोध कराया कि मनुष्य का असली पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्त करना है। जीवन-मरण के बंधन से छूटना है।

कबीर ने मोह को एक ओर तो भक्ति में बहुत बड़ी बाधा समझा और दूसरीओर समाज के विकास को अवरूद्ध करने का प्रमुख कारण माना। इसीलिए उन्होंने लोगों को मोह त्याग का उपदेश देते हुए मोहरूपी संकीर्णता का परित्याग करने को कहा।

कई महानुभाव हैं जो मोह से स्वयं को मुक्त बताते हैं और पत्नी व बच्चों से भागते, फिरते हैं लेकिन धन व नाम के मोह में लिप्त रहते हैं।

''त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा, अभिलाषा और तृष्णा पर विजय प्राप्त की जाय।'' (ह० सुफियान सूरी)

जब मानव के मन-मस्तिष्क पर मोह अधिकतम जम जाता है; तब वह बुद्धि विवेक-शून्य होकर अज्ञान के अंधकार-पथ पर चल पड़ता है। लोभ और मोह के इस अंधकार से बाहर आना सरल कार्य नहीं है। संतों ने इससे बाहर निकलने का उपाय बताया है। गुरु ज्ञान, साधु संगति और प्रभु का स्मरण।

''बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग।

मोह गएँ बिनु रामपद होई न दृढ़ अनुराग।।

(रामचरित मानस 6/61)

अध्यक्ष, रसायन विभाग
गौतम बुद्ध महिला कॉलेज, गया।

श्राद्ध कर्म: क्या करें और क्या न करें

श्री कंचन

पितरों का श्राद्ध-कर्म करना शास्त्रों, पुराणों व अन्य धर्मग्रंथों में अनिवार्य बताया गया है। इससे पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्राद्ध कार्य श्रद्धा से जुड़ा है, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अपने पितरों के प्रति श्रद्धा नहीं होगी, तो श्राद्ध-कार्य भी नहीं किया जा सकता। लेकिन श्राद्धकर्म के लिए धर्मग्रंथों में कई विधान बताये गये हैं। श्राद्ध कार्य के समय कर्त्ता को क्या करना चाहिए व क्या नहीं करना चाहिए। कैसे बरतन प्रयोग में लाने चाहिए, खान-पान में क्या लें आदि-आदि कार्य पर ध्यान देना आवश्यक है।

श्रद्धा अनुसार ब्राह्मण भोज :

पितृपक्ष में ब्राह्मण भोज जरूरी है, दरअसल, ब्राह्मण के रूप में पितृपक्ष में दिये हुए दान-पुण्य का फल दिवंगत पितरों की आत्मा की तुष्टि के लिए होता है। ब्राह्मण भोज के माध्यम से पितृजन को प्रसन्न किया जाता है। लेकिन, अपात्र ब्राह्मण को कभी भी श्राद्ध करने के लिए आमंत्रित नहीं करना चाहिए, ऐसा मनुस्मृति में कहा गया है। धन और समय के अभाव में यदि ब्राह्मण भोजन न करा सके, तो भोजन का सामान ब्राह्मण को भेंट करने से भी संकल्प हो जाता है, लेकिन इस सब में शुद्धता के साथ-साथ श्रद्धा का भाव भी जरूरी है, गरीब व्यक्ति जल में काले तिल डालकर तर्पण करें, विद्वान ब्राह्मण को काले तिल की मुट्ठी दान करने से पितृ प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसा संभव न हो, तो पितरों को याद कर गाय को चारा खिला दें।

कुश व तिल का महत्त्व :

शास्त्रों में तिल को देव अन्न कहा गया है। यह पितरों को भी प्रिय है, इससे पितृगण संतुष्ट होते हैं। इसलिए काले तिल से ही श्राद्धकर्म करने का विधान है। मान्यता है कि बिना तिल बिखरे श्राद्ध किया जाये, तो दुष्ट आत्माएं हवि को ग्रहण कर लेती है। श्राद्ध में यही महत्त्व कुश का भी है। गरुड़ पुराण के अनुसार, तीनों देवता ब्राह्मा, विष्णु व महेश कुश में क्रमश: जड़, मध्य व अग्रभाग में वास करते हैं। पितृपक्ष में पितर कुश की नोक पर निवास करते हैं। इसी कारण तर्पण करते समय कुश को अंगुलियों में धारण किया जाता है। इस समय जो भी हम तर्पण करते हैं, वह कुश के द्वारा हमारे पितरों को प्राप्त होता है।

तर्पण में लोहे का बरतन, कभी नहीं :

जहाँ तक बात श्राद्ध-कर्म में बरतनों के इस्तेमाल की है, तो इस कार्य के लिए सोना, चाँदी, काँसा व तांबे के पात्र को उत्तम माना गया है। इनके अभाव में पत्तल का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन केले के पत्ते पर श्राद्ध-भोजन निषेध है। इसके साथ लोहे का इस्तेमाल भी वर्जित है, चाहे वह बरतन ही क्यों न हो। श्राद्ध में पितरों को भोजन सामग्री देने के लिए मिट्टी के बरतनों का प्रयोग भी करने की बात कही गयी है। लेकिन इस पर भी एकमत नहीं है, वैसे तर्पण में मिट्टी के बरतन वर्जित है। लकड़ी के बरतन, पत्तों के दोने इस्तेमाल कर सकते हैं।

श्राद्ध का अन्न :

श्राद्ध का पकाया हुआ अथवा बिना पकाया हुआ अन्न प्रदान करके पुत्र अपने पितृ को तृप्त करें। श्राद्ध में गाय का दूध व उससे बनी हुई वस्तुएं, जो, धान, तिल, गेहूँ, मूंग, आम, बेल, अनार, खीर, नारियल, फालसा, खजूर, अंगूर, चिरौंजी, बेर, इंद्र, मटर, सरसो का तेल, तिसी का तेल आदि का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन श्राद्ध में उड़द, मसूर, अरहर, गाजर, गोल लौकी, बैगन, शलजम, हींग, प्याज, लहसुन, काला नमक, जीरा, सिंघाड़ा, जामुन, सुपारी, कुलथी, कैथ, महुआ, अलसी, पीली, सरसों, चना, मांस, मछली, अंडा आदि का इस्तेमाल वर्जित है।

कुश का आसन :

वैसे तो पूजा-पाठ में आसन का इस्तेमाल होता ही है, लेकिन श्राद्ध में आसन का महत्त्व बताया गया है। श्राद्ध बिना आसन के नहीं करना चाहिए। इसमें कुश के आसन को श्रेष्ठ माना गया है। इसके अलावा लकड़ी के पट्टे को भी आसन के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे, उसमें लोहे की कील नहीं लगी हो, क्योंकि श्राद्ध कर्म में लोहा निषेध है। इनके अलावा ऊन, रेशम के आसन का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसी तरह कंबल, तृण, पर्ण आदि के आसन भी श्राद्ध के लिए श्रेष्ठ हैं।

श्राद्ध अन्न में कौवों का हिस्सा :-

पितृपक्ष और कौए को लेकर कई किस्म की किवंदियां हैं, हालांकि शास्त्रों में इसके बारे में कोई विशेष प्रमाण नहीं है, लेकिन कौओं को पितर के रूप में माना जाता है। कौए का काला रंग होता है, जो राहु-केतु का रूप माना जाता है। राहु-केतु के कारण ही पितृदोष लगता है। कौए व कुत्ते को यम जीवन भी कहा गया है। यही नहीं शास्त्रों में कौवे व पीपल को पितरों का प्रतीक भी माना गया है। इसलिए पितृपक्ष में दही में डूबोकर पुरियां सबसे पहले कौए को दी जाती है। मान्यता यह भी है कि पितृपक्ष में कौए को भोजन कराने से पितरों को शांति मिलती है और वे तृप्त होकर परलोक जाते हैं।

पितृपक्ष में दान क्यों ?

पितृपक्ष में जो भी हम पितरों के निमित्त निकालते हैं, वह उसे सूक्ष्म रूप में आकर ग्रहण करते हैं, क्योंकि श्राद्ध पक्ष में पितृगण अपने-अपने स्वजनों के यहाँ बिना आह्वन किये पहुँचते हैं और 15 दिनों तक वहीं विद्यमान रहते हैं। इसलिए अधिकांश घरों में पितरों को प्रसन्न करने के लिए इन दिनों गरीबों और ब्राह्मणों को अपने सामथर्यनुसार दान देने की परंपरा है।

धन के अभाव में अर्पित करें पितरों को श्रद्धा :

पर्याप्त धन नहीं है, पितरों का श्राद्ध कैसे करें ? यह सोच कर मन दुखी करने की जरूरत नहीं है। धन न होने पर केवल शाक से भी श्राद्ध किया जा सकता है। बस मन में श्रद्धा होनी चाहिए। यदि शाक न हो, तो घास काटकर गाय को खिला देने से श्राद्ध संपन्न हो जाता है। यह भी न कर सकें, तो किसी एकांत स्थान पर जाकर श्रद्धा व भक्तिपूर्वक अपने हाथों को ऊपर उठाते हुए पितरों से प्रार्थना करें ' न मेस्ति वितं न धनं नान्यच्छ्राद्धोपयोग्यं स्वपितृन्नोस्मि, तृष्यंतु भक्त्या पितरो मयैतो तौ भुजी वत्मर्नि मारुतस्य, अर्थात् हे मेरे पितृगण, मेरे पास श्राद्ध के उपयुक्त न तो धन है, न धान्य, हां, मेरे पास आपके लिए श्रद्धा है, मैं इन्हीं के द्वारा आपको तृप्त करना चाहता हूँ, आप तृप्त हो जायँ, मैंने दोनों भुजाओं को आकाश में उठा रखा है।

श्राद्ध में दान की वस्तुएं :

श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से किये जाने वाले दान में गाय, भूमि, तिल, सोना, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चांदी व नमक में से एक या अधिक या सभी वस्तुएं होनी चाहिए। शास्त्रों में इन सभी वस्तुओं का दान महादान कहलाता है। श्राद्ध में चांदी का दान या उसका दर्शन अथवा उसका नाम लेना भी पितरों को अनंत व अक्षय स्वर्ग देनेवाला दान कहा गया है। श्राद्धकाल में ब्राह्मणों को अन्न देने में यदि समर्थ नहीं है, तो ब्राह्मणों को कंदमूल, फल, शाक आदि भी दान में दे सकते हैं। अगर यह भी संभव न हो, तो किसी भी द्विज श्रेष्ठ (श्रेष्ठ ब्राह्मण) को प्रणाम करके एक मुट्ठी काले तिल दें अथवा पितरों के निमित्त नम्रतापूर्वक सात-आठ तिलों से युक्त जलांजलि दें।

तर्पण का महत्त्व

ब्राह्मण भोज से एक पितृ और तर्पण से सभी पितृ तृप्त व संतुष्ट होते हैं, यही कारण है कि श्राद्ध कर्म में तर्पण का विशेष महत्त्व है।

चीफ रिपोर्टर
'प्रभात खबर', गया
मो०-9431416311

गयासुर का तप-बल और गयाधाम

श्री शिव वचन सिंह

परम पिता परमेश्वर द्वारा प्रकाशित स्थावर एवं वन सृष्टि में 'मानव' सर्वाधिक श्रेष्ठ है। समस्त वेदों में मानव मात्र को ''अमृतस्य पुत्रा:'' कहकर उसकी श्रेष्ठता का मूल्यांकन किया गया है।

विश्व के आदिम हिन्दू संस्कृति में ऋषि-मुनियों ने मानव-जीवन के पुरुषार्थ चातुष्टय की व्याख्या के क्रम में 'मोक्ष' को सर्वाधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार प्रमुख तीर्थ स्थलों में 'गयाजी' का नाम निर्विवाद है। उल्लेख है कि हम मानव तीन ऋणों के भार से दबे हैं :- देव ऋण, ऋषि ऋण व पितृपक्ष। इन ऋणों से त्राण हेतु महर्षियों ने क्रमश: पूजन, अर्पण एवं तर्पण का मार्ग प्रशस्त किया हैं। अत: मानव के अपने पूर्वजों के कर्ज से मुक्ति-हेतु तीर्थ स्थलों में तर्पण, श्राद्ध एवं दान आदि करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है।

विदित है कि 'मोक्ष' प्राप्ति ही मानव का परम लक्ष्य है। शास्त्रों के अनुसार प्रयाग राज, वाराणसी, हरिद्वार, बद्रीका श्रम स्थित सरस्वती कुण्ड, हरियाणा स्थित 'कुरूक्षेत्र' के समीप पीहोबा नामक नगर एवं बिहार प्रान्त के गया-धाम स्थित विष्णुपद क्षेत्र का धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। इन तीर्थों में तप, तर्पण एवं दान कभी निष्फल नहीं होते।

पुराणों में गया धाम की अस्मिता सभी तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ पिण्डदान, श्राद्ध आदि करने से पितरों को मुक्ति अवश्य मिल जाती है। पुराण में उल्लेख है कि ''पितृ तीर्थ गयाधाम सर्व तीर्थवरं शुभम। यत्रास्ते देव देवेश: स्वयं मेव पिता-मह''।

गया श्राद्ध के विषय में लिंग पुराण, वामन पुराण, वराह पुराण, पद्म पुराण, कुर्म पुराण व वायु पुराण में विशेष रूप से वर्णन है। वायु पुराण के अनुसार देवासुर संग्राम में दान व राजा त्रिपुरासुर के मारे जाने के बाद उसकी धर्म- पत्नी अपने बालक पुत्र गयासुर के साथ लेकर भागते हुए फल्गु नदी के पूर्वी तट पर स्थित 'कोलाहल' पर्वत पर आकर निवास करने लगी। गयासुर की माता का नाम प्रभावती था जो कि धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। उसके पति त्रिपुरा सुर की मृत्यु देवासुर संग्राम में हुई थी। इसलिए देवताओं से बहुत डरी हुई थी। वह अपने प्रिय पुत्र गयासुर को भी असुरों से अलग रखती थी। कुछ बड़ा होने पर गया सुर को उसकी माँ ने जानकारी दी जिसमें इसके पिता मारे गये थे। कोलाहन पर्वत पर उसकी माँ ब्रह्मा, शिव भगवान विष्णु की शक्ति तथा अन्य देवताओं का गुणगान सुनाते हुए गयासुर का पालन-पोषण कर रही थी। माता की ममता भरी बातों को सुन गयासुर में देवताओं के प्रति श्रद्धा-भाव जागृत हो गया। उसमें धार्मिक प्रवृत्ति पनपती गयी और युवा होने पर गयासुर ने भगवान विष्णु के दर्शनार्थ तपस्या करने की ठान ली। अपने पाँव के एक अंगूठे पर खड़ा होकर हजारों वर्षो तक श्री विष्णु भगवान के दर्शनार्थ तपस्या करता रहा, तब देवलोक में हलचल मच गया कि कौन ऐसा तपोनिष्ट है जो हजारों वर्षो से तपस्या करता आ रहा है। देवतागण ने भगवान विष्णु के पास जाकर इस तपोनिष्ट के विषय में कहा। भगवान विष्णु स्वयं चल कर कोलाहल पर्वत पर आये और उन्होंने गयासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा। उसने वर मांगा कि ''मेरा शरीर त्रिदेवों से भी अधिक पावन हो, जिसके स्पर्श मात्र से ही भक्त को मुक्ति मिल जाय। भगवान श्री विष्णु ने ''तथा वस्तु'' कह अंतर्ध्यान हो गये। तब से गयासुर फल्गु तट पर प्राणियों को मोक्ष प्रदान करने लगा। इस प्रकार 'यमलोक' खाली होने लगा और तब देवलोक

में हलचल मच गयी। सभी देवता घबड़ा कर भगवान विष्णु के पास जा पहुँचे और प्रार्थना की कि इसे कैसे रोका जाय। भगवान विष्णु ने उन्हें ब्रह्माजी के पास जाकर यज्ञ करने हेतु गया सुर का शरीर मांगने को कहा। चूँकि इसके शरीर जैसा पवित्र पृथ्वी पर कोई स्थान नहीं है। तत्पश्चात् सभी देवता ब्रह्माजी को साथ लेकर गयासुर के पास गये और ब्रह्माजी ने यज्ञ करने हेतु गयासुर से उसके शरीर देने की याचना की; जिसपर वह सहर्ष तैयार हो गया और उन्होंने अपना शरीर अर्पण कर दिया।

जब यज्ञ की क्रिया विधिवत् प्रारम्भ की गई तो उसके शरीर पर पत्थर रखा गया इस पर भी हिलने से गति शान्त नहीं हुई; तब धर्मराज ने उसके सिर पर धर्मशिला रखा। और भगवान श्री विष्णु का स्मरण किया; तब भगवान श्री विष्णु गदाधर रूप में स्वयं पधारकर अपना पाँव उसके सिर पर रखे और अन्य देवता उसके शरीर पर विराजमान हो गये। असुर राज ने प्रसन्न होकर उसने मांगा कि इस स्थल पर पावन तीर्थ के रूप में प्रसिद्धि हो, पाँच कोसों में उसका शरीर एवं एक कोस में उसका मस्तक आच्छादित हो तथा यहाँ के सारे जल एवं भूमि पवित्र हों। भगवान विष्णु सहित सभी देवता सृष्टि पर्यन्त विद्यमान हों, जिससे गयाधाम में पिण्डदान, श्राद्ध, तर्पण एवं दान करने वाले श्राद्धकर्त्ता के पूर्वजों को अक्षय वरदान मिले। उनके पाप नष्ट हो जायें वे सीधे मुक्ति-लोक को जाएँ।

गया में प्रत्येक दिन कम से कम एक पिण्ड एवं एक मुण्ड की व्यवस्था अवश्य है। भगवान विष्णु ने तथा-वस्तु कहकर मोक्ष का द्वार सदा के लिये खोल दिया।

अधिवक्ता एवं समाज सेवी
'वीणा कुंज', निकट जिला स्कूल, गया
मो०-9430058965

✦

पितृ-पूजा के दैनिक कार्यक्रम

पं० मणिलाल बारिक

श्राद्धार्थी को चाहिए कि प्रथम दिन पूर्णिमा तिथि को गया में प्रवेश कर फल्गु में जल का समुत्पादन, अर्थात् बालू के नीचे से जल निकाल कर निर्मल जल में स्नान करे। देवर्षि पितृ-तर्पण करके विधिपूर्वक श्राद्ध करे।

ततो गया प्रवेशो तु पूर्वऽस्ति महानदी।

तत्र तोयं समुत्पाद्य स्नातव्यं निर्मलेजले।।

(वायु पुराण)

दूसरे दिन प्रतिपदा तिथि को स्नानादि नित्य क्रिया से पवित्र होकर प्रेतशिला तीर्थ की यात्रा करें। वहाँ जाकर ब्रह्मकुण्ड में स्नान कर देवर्षि पितृ-तर्पण तथा श्राद्ध करें। वर्तमानकाल में ब्रह्मकुण्ड के जल दूषित होने से स्नान न करके तीर्थ को प्रणाम कर शुद्ध जल से तर्पण श्राद्ध करें।

तीसरे दिन पञ्चतीर्थों में सर्वप्रथम द्वितीया तिथि को उत्तर मानस तीर्थ में आचमन कर कुश से सिर पर जल छिड़क कर स्नान करें। स्नान आचमन योग्य जल न रहने पर फल्गुतीर्थ के जल से क्रिया करें। मंत्र बोले और भाव करे कि आत्मशुद्धि और सूर्य लोक की प्राप्ति लिए उत्तर मानस में स्नान करता हूँ। स्नान तर्पण करके पितृ विमुक्ति के लिए सपिण्ड श्राद्ध करें।

तीन पक्ष, सतरह दिनों में श्राद्धपूर्ण करने वाले श्रद्धालु चौथे दिन तृतीया तिथि को बोधगया से नीरञ्जना नदी पार करके धर्मारण्य जाते हैं। उस क्षेत्र में तीन तीर्थ सरस्वती, मर्तगवापी तथा धर्मारण्य अवस्थित है। सरस्वती में केवल तर्पण किया जाता है। तर्पण कर मतंग वापी में श्राद्ध कर प्रार्थना करने का विधान है, ताकि सभी देवता प्रमाण रहें। सभी लोकपाल साक्षी रहें।

पाँचवें दिन चतुर्थी तिथि को श्राद्धार्थी जन ब्रह्म सरोवर तीर्थ पर जाते हैं। वहाँ पहुँच कर पुत्र सर्वप्रमाण से विधिवत् मंत्र द्वारा स्नान करके सपिण्ड का श्राद्ध करते हैं।

त्रिपाक्षिक श्राद्ध करने वाले पञ्चमी तिथि को सर्वप्रथम विष्णुपद में श्राद्ध करते हैं। भीष्मपितामह जब गया श्राद्ध करने आये तब पितरों का ध्यान कर पिण्ड देने के लिए जब उद्यत हुए तो उनके पिता शांतुन के दोनों हाथ निकले। भीष्म ने उनके हाथ पर पिण्ड न देकर विष्णु-पद पर पिण्ड दे दिया। इससे संतुष्ट होकर शान्तनु ने कहा कि तुम शस्त्रार्थ में निश्चल होवो। दृष्टि निहाल होवे और अन्त में विष्णुलोक की प्राप्ति हो।

सातवें दिन षष्टी को विष्णुपद मन्दिर परिसर में सोलह वेदी नामक स्थल में अवस्थित अहनीयाग्निपद, सम्याग्नि पद, इन्द्र पद, अगस्त्य पद आदि तीर्थों में श्राद्ध करने का विधान हैं। अहनीयाबिन पद पर श्राद्ध करने से अश्वमेघ यज्ञ करने का फल मिलता है। अश्वमेघ से सभी पापों का शमन होता है। महाराज दशरथ ने पापों को समूल नष्ट करने के लिए पहले अश्वमेघ यज्ञ किया उसके बाद पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न किया जिससे सन्तान की प्राप्ति हुई। गया श्राद्ध के आठवें दिन को कृत्य में त्रिपाक्षिक गया श्राद्ध करने वाले श्रद्धालुजन सप्तमी तिथि को आठवें दिन सोलह वेदी मण्डप में अवस्थित क्रौंचपद, मतंगपद, सूर्यपद, कण्ठ-पद तथा कार्तिकेय-पद तीर्थों पर श्राद्ध करते हैं।

क्रौच-पद, मतंग-पद पर श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। सूर्य-पद श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है। कहा गया है कि सूर्य पद श्राद्ध करने से कल्याणकारी लोक की प्राप्ति होती है।

तीन पक्षीय में गया श्राद्ध करने वाले श्रद्धालु दसवीं तिथि अर्थात् ग्यारहवें दिन गया सिर नामक तीर्थ में सर्वप्रथम श्राद्ध करते हैं। गया सिर का उल्लेख लगभग सभी स्मृतियों में मिलता है। गया तीर्थ का यदि कोई सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थान है तो गया सिर है। ऐसे तो विष्णुपद मन्दिर के दक्षिण भाग में श्मशान घाट के पास गया सिर नाम से तीर्थ स्थल बनाया हुआ है। किन्तु गया सिर तीर्थ की लम्बाई चौड़ाई एक कोस में व्याप्त है।

गया श्राद्ध के बारहवें दिन एकादशी तिथि का कृत्य सर्वप्रथम मुण्ड-पृष्ठा तीर्थ पर श्राद्ध करना होता है, जो गया का मध्यस्थल नाभितीर्थ है। इसी तीर्थ के चारों तरफ ढाई-ढाई कोस का गया क्षेत्र है। मुण्ड-पृष्ठा तीर्थ करसिल्ली पहाड़ पर विष्णुपद के पास है। यह गयासुर के मुण्ड पर स्थापित होने के कारण मुण्ड-पृष्ठ कहलाता है। यहाँ विरजा देवी का मन्दिर है जो औरंगजेब के द्वारा खण्डित कर दिया गया था। यहाँ श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

गया श्राद्ध के तेरहवे दिन का कृत्य तीन पक्षीय का सतरह दिनों के अन्तर्गत गया श्राद्ध करने वाले सुधिजन द्वादशी तिथि को स्नान तर्पण करके भीम गया गोप्रचार गदालोल तीर्थो में श्राद्ध करते हैं। भीमसेन जी ने यहीं अपने पूर्वजों का गया श्राद्ध किया था। वहाँ उनके घुटने का निशान एक गड्ढे के रूप में आज भी दिखाई देता है। वहाँ श्राद्ध करने से पितरों को विशेष तृप्ति होती है। गोप्रचार तीर्थ में श्राद्ध करने और एक ब्राह्मण को भोजन कराने से करोड़ों ब्राह्मणों को भोजन कराने का फल मिलता है।

भगवान ने हेति दैत्य को गदा से मार कर स्वर्ग का राज्य देवताओं को दे दिया था। इसके पश्चात् उन्होंने जहाँ पर गदा को धोया था। वहाँ गदालोल परम पावन तीर्थ बन गया।

त्रिपाक्षिक गया श्राद्ध करने वाले पितृ भक्त-जन चौदहवें दिन त्रयोदशी तिथि को प्रातः काल फल्गु नदी में स्नान करें, क्योंकि पितरों की चाहना रहती है कि उनके वंशजों को पैरों से भी जल-स्पर्श हो जायेगा तो उससे भी उनकी तृप्ति हो जायेगी।

इस दिन ही संध्या काल में नदी किनारे श्री गदाधर मन्दिर, विष्णुपद मन्दिर एवं अन्य देवालयों में दीप-दान किया जाता है। श्राद्ध में दीप दान करने से मनुष्य तेजस्वी होता है तथा रूप-धन, भोग-सुख और ऐश्वर्य को प्राप्त करता है।

गया श्राद्ध के पन्द्रहवें दिन, त्रिपाक्षिक गया श्राद्ध करने वाले पितृभक्त सुधि चतुर्दशी तिथि को वैतरणी तर्पण और अपने तीर्थ पुरोहित को गोदान करते हैं। पिण्ड रहित ब्राह्मण भोजन रूप श्राद्ध करते हैं। बीच (मध्य) में आने वाले पिण्डदान भी करते हैं। वैतरणी का जल आचमन एवं तर्पण के योग्य नहीं है। इसलिये फल्गु के जल से ही तर्पण किया जाता है। वैतरणी तर्पण करने एवं गोदान करने से इक्कीस कुलों का तारण हो जाता है।

त्रिपाक्षिक गया श्राद्ध करने वाले अथवा अन्तिम सप्ताह में श्राद्ध करने वाले सोलहवें दिन अमावस्या को अक्षयवट तीर्थ में श्राद्ध कर अपने पण्डा को षोड्सदान देकर संतुष्ट करते हैं तथा उनसे सुफल आशीर्वाद लेकर पितृविसर्जन करते हैं। अक्षयवट पर यत्न पूर्वक अन्न से श्राद्ध करने से तथा अक्षयवट के समीपस्थ वटेश महादेव को देखकर नमस्कार करके एकाग्रचित्त से पूजा करने पर पितर सनातन अक्षय लोक को चले जाते हैं।

विष्णुपद मंदिर मार्ग, गया

✦

श्राद्ध और सात्विक भोजन

डॉ० मंजु शर्मा

सनातन धर्म की परंपरानुसार हर प्राणी (मनुष्य) अपने पितरों के मोक्ष के लिए गया जी में श्रद्धा से शुद्ध विचारों, भावों एवं सात्विकता के साथ तर्पण एवं श्राद्ध-कर्म करता है। हर प्राणी निश्चित तौर पर खान-पान की शुद्धता पर भी पूरा ध्यान रखता है। हमारे धर्म एवं संस्कारों से भी स्पष्ट होता और हमारे महापुरूषों ने यह माना है कि 'अन्न' का भी असर हमारी सोच एवं हमारे व्यवहारों पर पड़ता है। कहा भी गया है कि 'जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन'। वेदो में लिखा है ''अन्न ही प्राण है'' अत: हम जैसा खाते हैं वैसा ही सोचते हैं और वैसा ही आचरण करते हैं। हमारे सारे कर्म-काण्ड, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि बहुत ही सात्विक तरीके से निभाए जाते हैं। तन-मन, विचार, भाव एवं खान-पान की शुद्धि का विशेष ध्यान रखा जाता है, तभी मन को संतुष्टि मिलती है। यही वजह है कि श्राद्ध करने वाला प्राणी शुद्ध शाकाहारी एवं सात्विक भोजन ही ग्रहण करता है।

हमारे जीवन में भोजन का काफी महत्त्व है और स्वास्थ्य के साथ-साथ शुद्धता और पौष्टिकता का भी ख्याल रखना पड़ता है। इसके लिए आहार संयम भी अत्यन्त आवश्यक है। भगवान् महावीर ने ''आहार-विवेक'' का जो दर्शन दिया वह स्वयं में अनूठा है। भोजन और जीभ का समझौता हो जाना ही ''अविवेक'' है, जीभ को अच्छा लगे वही अच्छा है। इस दुरभिसंधि को महावीर ने तोड़ा। ''भोजन का विवेक'' का अर्थ है शरीर, मन और भावना के साथ भोजन का समझौता हो जाए इसका नाम है विवेक। वैसा भोजन करना चाहिये जिससे शरीर बूढ़ा न हो, क्षीण न हो यह है आहार का विवेक। इन्होंने '''मिताहार'' यानि अल्पाहार (कम खाना) भी विवेक की बात मानी। शरीर की मांग कितनी है और कितना खाना चाहिये, इसका विवेक होना चाहिये, ताकि मन प्रसन्न रहे। बुरे विचार एवं कल्पना नहीं आये। इतना ही नहीं वैसा भोजना करना चाहिये जिससे क्रोध न आए, न भय लगे, न अहंकार सताए न ही वृत्तियों को उद्धीपन मिले। भोजन इन सारी बातों को प्रभावित करता है।

वैज्ञानिकों ने शोधों के आधार पर यह माना है कि सात्त्विक भोजन से मन शांत रहता है और तामसी भोजन से मन चंचल बनता है। वर्तमान पोषण वैज्ञानिकों और आहार शास्त्रियों ने इसे विषय पर अनुसंधान किया है कि किस प्रकार के भोजन से न्यूरोट्रांसमीटर बनता है और हमारे आचरण एवं व्यवहार को प्रभावित करता है। इस परिभाषा को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावात्मक स्वास्थ्य के साथ भोजन का समझौता है। इसी का नाम आहार का विवेक है।

वायु व जल के साथ ही भोजन हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसीलिए सिर्फ क्षुब्धा तृप्ति एवं चारित्रिक विकास के लिए भी भोजन का चयन ठीक से करना चाहिये।

विश्व के सभी धर्मो एवं महापुरूषों ने मांसाहार की निन्दा की है, शाकाहार की प्रशंसा की है। आधुनिक शोधों एवं वैज्ञानिक खोजों से यह साफ पता चलता है कि शाकाहारी भोजन से न केवल उच्च कोटि के प्रोटीन प्राप्त होते हैं, बल्कि अन्य आवश्यक पोषक तत्त्व विटामीन, खनिज, कैलोरी आदि भी प्राप्त होते हैं। शाकाहारी व्यक्ति मांसाहारी की तुलना में ज्यादा स्वस्थ्य एवं दीर्घायु होता है। इतना ही नहीं सात्विक विचारों वाला भी होता है। शक्तिशाली, परिश्रमी अधिक सहनशीलता वाले जो लगातार कई दिनों तक काम कर सकते हैं, वो हैं हाथी, घोड़ा, बैल

आदि वे सभी शाकाहारी हैं। बकरी जिसे लोग खाते हैं खुद शाकाहारी होती है। इंगलैण्ड में परीक्षण कर यह देखा गया कि स्वभाविक मांसाहारी शिकारी कुत्तों को भी जब शाकाहार पर रखा गया तो उनकी बर्दास्त शक्ति एवं क्षमता में बृद्धि हुई। जापान में किए गए अध्ययनों से भी यह पता चलता है कि शाकाहारी न केवल स्वास्थ्य व निरोग रहते हैं बल्कि दीर्घजीवी भी होते हैं। इतना ही नहीं विजेता तेनजिंग ने शेरपाओं की शक्ति का रहस्य उनका शाकाहारी होना ही बताया। अनेक सूफी संतों ने भी मांस न खाने पर जोर दिया है व शाकाहारी को अच्छा बताया है। लंदन मस्जिद के इमाम उल हाफिज वशीर अहमद मसेरी ने अपनी पुस्तक ''इस्लामिक कंसर्न एबाउह एनीमल्स'' में मजहब के हिसाब से पशुओं पर होने वाले अत्याचारों पर दुख प्रकट करते हुए पाक कुरान मजीद व हजरत मोहम्मद साहब के वचन का हवाला देते हुए किसी भी जीव जन्तु को कष्ट देने, उन्हें मानसिक, शारीरिक प्रताड़ना देने यहाँ तक कि पक्षियों को पिंजड़े में कैद करने को भी गुनाह बताया है। उनका कथन है कि इस्लाम तो पेड़ों को काटने तक की इजाजत नहीं देता है। इमाम साहब ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 18 में हजरत मोहम्मद साहब का कथन इस प्रकार दोहराया है ''यदि कोई इंसान किसी बेगुनाह चिड़िया तक को भी मारता है तो उसे खुदा को इसका जवाब देना होगा और जो किसी परिन्दे पर दया कर उसकी जाने बक्सता है तो अल्लाह उसपर कयामत के दिन रहम करेगा।'' इमाम साहब स्वयं भी शाकाहारी थे और सब को शाकाहार की सलाह देते थे। संत मीर दाद, महात्मा सरमद ने मांसाहार का विरोध किया। ईसा मसीह को आत्मिक ज्ञान जॉन दिबैपटिष्ट से प्राप्त हुआ जो मांसाहार के सख्त विरोधी थे। सिक्ख धर्म भी ''अन्न-पानी थोड़ा खाय'' का आदर्श गुरूमुखों और गुरूवाणी के लिए मानता है। वैज्ञानिक, कलाकार, कवि, लेखक जैसे पाहया गोरस, प्लूटार्क, प्लॉटीनस, न्यूटन, चिकार लिनार्डो जविसी, डॉ० एनी बेसेन्ट, अलबर्ट ऑईन्सटाइन, रेवरेण्ड, डॉ० वाहटर शैले, सुकरात एवं अरस्तु सभी शाकाहारी थे। हमारे प्रिय डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम भी शाकाहारी थे। शाकाहार ने ही इन्हें सहिष्णुता दयालुता, अहिंसा आदि सद्‌गुणों से विभूषित किया। आइन्सटाईन का मानना था कि ''शकाहार हमारी प्रकृति पर गहरा असर डालता है। महात्मा गांधी ने अपने बीमार बच्चे को डाक्टरों के कहने पर मांसाहार नहीं दिया और फिर भी वह बच गया। भारतीय ऋषि-मुनि कपिल, व्यास, पाणिनी, पतंजलि, शंकराचार्य, आर्यभटट् आदि सभी महापुरूष, इस्लाम के सूफी संत कबीर आदि महात्मा गांधी बुद्ध भगवान महावीर, गुरूनानक सभी शाकाहारी थे तथा इन्होंने मांसाहार का विरोध किया। क्योंकि शुद्ध वृत्ति और आध्यात्मिकता मांसाहार से सम्भव नहीं है।

पूर्व-अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
जी०बी० एम कॉलेज, गया

✦

गया और गयावाल पंडे

श्री नचिकेता वत्स

गया जी का नाम लेते ही सबसे पहले यहाँ के मूल निवासी गयावाल पण्डों के चित्र हमारे जेहन में आते हैं। गया जी, जो फल्गु नदी के तट पर स्थित है, या यूँ कहें फल्गु यहाँ के भगवान विष्णु को चरण-स्पर्श करते हुए आगे जाती है, तो कोई दो राय नहीं होगी। विष्णु पुराण में कहा गया है कि पितृपक्ष में पितृगण स्वयं तर्पण ग्रहण करने यहाँ आते हैं। यहाँ हम गयावाल पंडों की बात कर रहे हैं - उन पंडों की जिनकी वृत्ति परंपरा से चली आ रही है। पिंडदान जैसे महान धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े कार्य को क्रियान्वित करने की है। वेद-पुराण में भी इन गयावाल पंडों का उल्लेख कहीं-कहीं मिलता है। वेद-पुराण के अनुसार गयावाल पंडे इस कार्य को करने के लिए अत्यंत पूज्य माने गए हैं। बिना इनकी उपस्थिति अथवा सहयोग के पिंडदान का वैदिक अनुष्ठान करना किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं माना गया है।

संसार के कोने-कोने से आने वाले श्रद्धालु इस अंतिम श्राद्ध-स्थल पर इन्हीं गयावाल पंडों को अपना पुरोहित मानकर अपने धार्मिक अनुष्ठानों की पूर्त्ति करते हैं। सभी जातियों से अलग-थलग दिखने वाले पंडे कभी अपने जमाने में काफी समृद्ध माने जाते थे। ये लोग आर्थिक रूप से तो बुलंदी पर थे ही, साथ-साथ साहित्य-संगीत एवं पहलवानी का इनका अपना नशा, गांजा, भांग और अफीम से भी कहीं बढ़कर था। गया शहर ने इन्हीं लोगों को अपनी गोद में खेलाकर एक तरह से शहर होने का अर्थ पूरा किया था। गयावाल पंडों के घर सिर्फ परिवार के रहने की जगह नहीं थी, बल्कि उनके घरों में साहित्यकारों की लेखनशालाएँ, संगीतकारों का साधना-कक्ष एवं पहलवानों का अखाड़ा-स्थल भी था। साहित्य के धुरंधर लेखक देवकीनन्दन खत्री को तो इनके घरों से संबंध था ही महामना पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी' ने तो 'जन्मशाला से लेकर मृत्युशाला तक' की सफर यहीं पूरी की।

आज भी अगर हम गयावाल पंडों के घरों की तरफ जानेवाली गलियों में कदम रखते हैं, तो जो इक्का-दुक्का सायंकालीन सांगीतिक बैठक नजर आती है, वो गया की पुरानी संगीत अनुरागिता का ही एक रूप है। आज भी यह समाज अपनी पुरानी समृद्ध परंपरा से गहराई पूर्वक जुड़ा है। यद्यपि अब पुराने जमाने की बात नहीं रही, क्योंकि इस भूमि पर जन्मे उत्कृष्ट स्वर-साधक शनैः-शनैः लोकान्तरक करते गए। अपने जमाने में जिन लोगों ने सोनी जी, झंगर जी का हारमोनियम वादन के दौरान उनकी अंगुलियों से निकले स्वर सुने होंगे। उन्हें याद होगा कि कितना दम था उनके वादन में। कठोरतम वंदिश आरोह-अवरोह को वे लोग कुछ इस कदर अपनी अंगुलियों पर नचाते थे कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते। अब उनकी झलक इन पंडों की भावी पीढ़ियों में हल्की-फुल्की नजर आती है।

पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर, बड़े गुलाम अली खाँ, बेगम अख्तर जैसे अपने जमाने के महान संगीतकार का जब भी कहीं जिक्र होता है, तो उन्हें सबसे पहले इसी शहर से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। क्योंकि वे लोग जब भी गया आते थे, गयावाल पंडों के सामिप्य से मुग्ध होकर वापस जाते थे। इन गयावाल पंडों की उस समय भी बेहद तंग-पतली एवं आड़ी-तिरछी घुमावदार गलियाँ हुआ करती थीं, जो कि आजतक है। लेकिन तब आज की भांति उन गलियों में केवल दुकानें नहीं थीं। उस जमाने में इन गलियों में सदैव एक सुरीली आवाज गूँजती रहती थीं। कहते हैं उस दौरान जब दीवार से दो ईंट भी टकराकर गिरती, तो एक सुरीला स्वर फूटता था एवं उसकी खनक सुनाई पड़ती थी। अब यहाँ वैसा कुछ नहीं रह गया। फिर भी, इन तंग गलियों में अवशेष के रूप में दबे संगीत की वह सोंधी महक अब भी भावानुभूति में वर्त्तमान है।

नई गोदाम, गया

अतिथि देवो भव

श्री दिलीप कुमार देव

पितृपक्ष मेला, महासंगम-2016 इस वर्ष 15 सितम्बर 2016 से 30 सितम्बर 2016 तक चलेगा। प्रत्येक वर्ष भादो माह के शुक्ल पक्ष की अनन्त चतुदर्शी के दिन से यह महासंगम गया-धाम में आयोजित होता है। यह अवसर धार्मिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। सनातन धर्मावलंबियों की मान्यता के अनुसार इस अवधि में पितरों की आत्मा की शान्ति के लिए गयाधाम में ही पितर-पूजा के विभिन्न अनुष्ठान सम्पादित किए जाते हैं। इसी कारण गयाजी को मोक्षधाम की संज्ञा दी गयी है। हमारे आर्ष-ग्रंथों में यह स्पष्ट उल्लेख है कि इस अवधि में हमारे श्रद्धास्पद दिवंगत महानुभावों की आत्माएँ गयाजी में आती हैं, और उन्हें यह लालसा रहती है कि उनका कोई भी सुपुत्र अथवा वंशज गयाधाम आकर उनका श्राद्ध कर्म पूरा करे, ताकि उन्हें चिर-शान्ति प्राप्त हो।

इसी विश्वास और भक्ति के कारण देश-विदेश के लाखों सनातन धर्मावलंबी पितृपक्ष की अवधि में यहाँ आते हैं और पितर-पूजा के विभिन्न अनुष्ठानों को सम्पादित करते हैं। फलत: गयाजी के निवासियों को यह अवसर मिलता है कि वे अपने अतिथियों का हृदय से स्वागत करें। यहाँ के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि अतिथि देवो भव! यों तो सभी तीर्थ-यात्रियों की समुचित देख-रेख, उनकी सुरक्षा, उनका आवासन आदि का उत्तरदायित्व जिला प्रशासन पर रहता है। किन्तु, गयाधाम के स्वयं सेवी संगठनों तथा समाज-सेवी व्यक्तियों का भी पूरा सहयोग प्राप्त होता है। गया प्रशासन के साथ मिलकर ये लोग भी तीर्थ-यात्रियों को हर प्रकार की सुविधा देने के लिए तत्पर रहते हैं; ताकि जिस सात्विक अनुष्ठान के लिए दूर-दूर से जो भी धर्मानुरागी यहाँ आये हैं, वे अपने अनुष्ठानों को अच्छी तरह सम्पन्न कर सकें। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीर्थ-यात्रियों के आवासन के लिए पण्डों के घर, धर्मशालाएँ, होटलों तथा विभिन्न विद्यालयों में व्यवस्था की गयी है। साथ ही, जहाँ भी यात्री ठहराये जायेंगे; उन-उन स्थानों पर जलापूर्त्ति, बिजली, साफ-सफाई आदि की भी व्यवस्था प्रशासन की ओर से की गयी है। यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की यातायात व्यवस्था पर भी पूरा ध्यान दिया गया है। इनके अतिरिक्त मेला-क्षेत्र में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर भी खोले गए हैं, जहाँ पर कोई भी तीर्थ-यात्री जाकर, बीमार पड़ने पर दवा आदि की सेवा ले सकते हैं। तीर्थ-यात्रियों की सुरक्षा के लिए भी पुलिस बल की पर्याप्त व्यवस्था है।

इनके अतिरिक्त सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा गया रेलवे स्टेशन तथा विष्णुपद मंदिर परिसर में सूचना-केन्द्र में प्रतिनियुक्त पदाधिकारी तथा कर्मचारी चौबीसों घंटा अपने अतिथियों की सेवा के लिए सुलभ रहेंगे। किसी भी श्रद्धालु तीर्थ-यात्री को यदि किसी प्रकार की कोई जानकारी प्राप्त करनी हो, तो इन केन्द्रों से सम्पर्क कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त मेला अवधि के लिए संवास सदन समिति में एक नियंत्रण कक्ष सह-हेल्प लाईन खोले गए हैं। यहाँ पर हर समय वरीय दण्डाधिकारी के साथ पुलिस बल तैनात किए गए हैं। यहाँ से भी यात्रीगण कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा अपनी समस्यों का निदान खोज सकते हैं। गयाधाम में पधारे श्रद्धालु तीर्थ-यात्रियों के मनोरंजन तथा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए विष्णुपद मंदिर परिसर में निर्मित्त भव्य पण्डाल में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रवचन की भी व्यवस्था की गयी है। हमें विश्वास है, श्रद्धालु भक्त जन इसका भी भरपूर आनन्द उठायेंगे। पितृपक्ष मेला के सफल आयोजन के लिए जिला प्रशासन द्वारा दो तीन माह पूर्व से ही तैयारी प्रारंभ कर दी गयी थी। स्वयं जिलाधिकारी महोदय हर बिन्दु पर बारीकी से ध्यान दे रहे थे। इसी का परिणाम है कि मेला क्षेत्र में बिजली, पानी, सफाई आदि सभी कार्य सहज ढंग से होते चले जा रहे हैं।

हमें पूरा विश्वास है कि इस वर्ष पितृपक्ष मेला के महासंगम में आये यात्रीगण पूरी तरह मात्र संतुष्ट ही नहीं, वरन् हर तरह से सफल-मनोरथ होकर अपने-अपने घर जायेंगे और गया जी तथा गयाधाम के निवासियों की एक अच्छी छवि अपने-अपने हृदय में प्रतिष्ठित रखेंगे।

✦

जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी, गया।

पिण्डदान कार्यक्रम

15.09.2016		पुनपुन पयपुजा ओर गोदावरी श्राद्ध
16.09.2016	प्रथम	फल्गु स्नान और श्राद्ध
17.09.2016	दूसरा दिन	ब्रह्मकुण्ड श्राद्ध, प्रेतशिला श्राद्ध, रामशिला श्राद्ध, रामकुण्ड श्राद्ध, काकबली
18.09.2016	तीसरा दिन	पंचतीर्थ उत्तर मानस श्राद्ध, उदीची श्राद्ध, कनखल श्राद्ध, दक्षिणमानस श्राद्ध, जिह्वालोल श्राद्ध, गजाधर जी का पंचामृत स्नान
19.09.2016	चौथा दिन	सरस्वती स्नानतर्पण पंचरत्न दान मातंगवापी श्राद्ध, धर्मारण्य कूप के मध्य में श्राद्ध, बौद्ध दर्शन (बोधगया)
20.09.2016	पाँचवा दिन	विष्णुपद श्राद्ध
21.09.2016	छठा दिन	(सोलह वेदी) (सोलह वेदी) रूद्रपद, ब्रह्मपद, विष्णुपद श्राद्ध, गार्हपत्याग्नि पद श्राद्ध, आहवनीयाग्नि पद श्राद्ध
22.09.2016	सातवाँ दिन	(सोलह वेदी) कार्तिकपद श्राद्ध, दक्षिणाग्नि पद श्राद्ध, गार्हपत्याग्नि पद श्राद्ध, आहवनीयाग्नि पद श्राद्ध
23.09.2016	आठवाँ दिन	सोलह वेदी, सीताकुण्ड (बालू का पिण्ड) कन्वपद, मतंगवापी, अगस्तपद, इन्द्रपद, काश्यपपद, गजकर्णपद दूध तर्पण अन्नदान एवं रामगया श्राद्ध, सीताकुण्ड (बालू का पिण्ड) सौभाग्य दान एवं पांवपूजा
24.09.2016	नवम दिन	गयासिर, गयाकुप श्राद्ध (त्रिपिण्डी श्राद्ध)
25.09.2016	दशम दिन	मुण्डपृष्ठा श्राद्ध, आदि गदाधर (आदि गया), धौतपद श्राद्ध एवं चाँदी दान
26.09.2016	ग्यारहवें दिन	भीमगया, गौप्रचार, गदालोल श्रद्धा
27.09.2016	बारहवें दिन	विष्णु भगवान का पंचामृत स्नान पूजन एवं फल्गु में दूग्ध तर्पण
28.09.2016	तेरवहें दिन	वैतरणी गोदान एवं तर्पण
30.09.2016	पन्द्रहवें दिन	गायत्रीघाट दही चावल का पिण्ड आचार्य दक्षिणा पितृ विदाई

GOVT. ACCOMMODATIONS

SL	School Name	Name/Mobile no Of Principal	Lodging Capicity	No Of Room	No. of Toilet
1	T-Model Middile School, Gaya	9932464250, 9835440823	150	6	1
2	T-Model High School, Gaya	9430071333	500	12	10
3	Mahavir Middile School,Gaya	SSmt. Sumitra sevi, 9334146299	700	14	5
4	Mahavir Inter School,Gaya	Smt. Neelam Singh, 9934092583	700	14	5
5	Haadi Hasmi High School,Gaya	"Jnab Ragib Hasan9934228249"	300	4	10
6	Anugrah Girl Middile School,Gaya	Naredra kumar, 9308207524	200	7	3
7	Anugrah Girl High School, Gaya	Smt. Kusum Kumari 9798015306	500	12	4
8	Saheed High School, Gaya	Amresh Kumar, 9631053029	300	6	1
9	Ramruchi Girl High School, Gaya	Renu Jayswal, 9430839588	300	9	7
10	Chandra Sekhar Janta High School, Gaya	9931721224	400	4	2
11	Diat Parisad Distric Education Training Center, Gaya	Ratnaghose, 9431878156	100	2	1
12	Higher Secondary Zila School, Gaya	Rajaram Singh, 9430908326	850	Room 15 + 1 Haal	10
13	State Girl High Shool, Gaya	Poonam Kumari, 9430055106	500	10	8
14	Middil School Birajmohin, Gaya	Mamta Kumari, 9934221196	250	12	4
15	New Middile Shool, Chand Chaura,Gaya	Radhey Shyam Sharma ,7250278201	200	6	3
16	Middil School Ghugharitar, Gaya	Sunita Kumari sinha, 9973983749	120	3	3
17	Middle School Akshay Vat, Gaya	Nirmla Devi, 9430073310	200	6	3
18	Middile School Sameertakya, Gaya	Rajesh Kumar Sinha, 9835824116	150	8	2
19	Haridas Seminary	Ashok Kumar, 9234775737	500	7	5
20	Chandra Sekhar High School, Akshayavat, Gaya	Draupadi Kumari, 9931622032	300	6	6
21	Dankan Middile Shool, Sikariya More, Gaya	Kumari Mala , 9852291356	500	13	2
22	Rajendra Middile Shool, Godawari, Gaya	Mithlesh Sharma, 9472445718	150	7	2
23	Middile School Kendui, Gaya	Sanjay Kumar , 9798920599	200	4	4
24	Gaya Collage Play Ground, Gaya	Dr. S. K. Sharma , 9934098680	800	500	6
25	State Polytechnic, Gaya	Madan Prasad Yadav, 7831775712	600	50	6

HOTELS & GUEST HOUSES

1	MAHABODHI	Bodhgaya	2900801, 7546988900
2	HOTEL IMPERIAL	Bodhgaya	
3	DELTA INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200854, 9431225234
4	HOTEL GOUTAM	Bodhgaya	2200109, 943129009
5	ROYAL RESIDENCY	Bodhgaya	2200124, 9431831836
6	TAJ DARBAR	Bodhgaya	2200053, 9431289452
7	HOTEL GALAXY	Bodhgaya	2200006, 9430247704
8	HTL. ANAND INT.	Bodhgaya	2200026, 9934891205
9	BUDDHA RESENCY	Bodhgaya	
10	HOTEL URVELA	Bodhgaya	2200236
11	HOTEL VISHAL	Bodhgaya	2200633, 9835417477
12	HOTEL SHASHI	Bodhgaya	2200459
13	ANUKUL Guest House	Bodhgaya	2200118
14	SHANTHI BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200519
15	RAHUL BUDHA Guest House	Bodhgaya	2200536, 9431289421
16	HOTEL SUJATA	Bodhgaya	2200481,9431224698
17	R.K INTERNATIONAL	Bodhgaya	2200506
18	HOTEL TOSHITA	Bodhgaya	2200760, 9304636579
19	HOTEL NIRANJANA	Bodhgaya	2200475, 9431477395
20	LOTUS NIKKO	Bodhgaya	2200700, 2200789
21	HOTEL MAHAMAYA	Bodhgaya	2200676,9931276680
22	HOTEL TATHAGAT	Bodhgaya	2200106,9939491063
23	HOTEL BUDHA VIHAR INT.	Bodhgaya	2200506, 9572807755
24	HOTEL LUMBNI	Bodhgaya	2200351
25	HOTEL JEEVAK	Bodhgaya	2200646, 9934473633
26	BODHGAYA RIGENCY	Bodhgaya	8969466281
27	SAMBODHI RETREAT	Bodhgaya	6950080
28	HOTEL OM INT.	Bodhgaya	9199186640
29	HOTEL VIPASHNA	Bodhgaya	9934600777
30	KRITI Guest House	Bodhgaya	9430841313, 9006307888
31	ARIHANT Guest House	Bodhgaya	9507530300
32	RAINBOW Guest House	Bodhgaya	2200308, 9431280810
33	SHANTI SAKYA Guest House	Bodhgaya	2200439
34	HAPPY Guest House	Bodhgaya	
35	SHANTI Guest House	Bodhgaya	2200129, 9835818081
36	SANG PRIYA Guest House	Bodhgaya	
37	PUJA Guest House	Bodhgaya	
38	DEEP Guest House	Bodhgaya	
39	WELCOME Guest House	Bodhgaya	
40	SANGMITRA	Bodhgaya	9434070240
41	AMRAPALI Guest House	Bodhgaya	
42	JYOTI Guest House	Bodhgaya	
43	BEEYUTY Guest House	Bodhgaya	9472932045
44	ARYA Guest House	Bodhgaya	22001144
45	RAVI Guest House	Bodhgaya	9431155080
46	RAHUL Guest House	Bodhgaya	9931463849
47	HARSH & YASH Guest House	Bodhgaya	
48	EKWAL Guest House	Bodhgaya	9933655175
49	Hotel Royal View International	Gaya	0631-2220340
50	Hotel Darwar International	Gaya	9431223155
51	Hotel Gaya Regency,	Gaya	0631-2221153, 9934098892
52	Satyam International,	Gaya	9430057604
53	Hotel Ajatsatru	Gaya	9934480814
54	Annapurna Hotel	Gaya	9352791400

HOTELS & GUEST HOUSES

55	Hotel Gautam	Gaya	9386804133
56	Vikash Hotel	Gaya	9334233672
57	Gaurav Hotel	Gaya	9931075334
58	Aalok Hotel,	Gaya	9835293435
59	Mushkan Hotel,	Gaya	9939391978
60	Aanand Hotel,	Gaya	9304104555
61	Classic Hotel,	Gaya	9771532865
62	Amarnath Guest House	Gaya	9430281309
63	Raj Kumar Guest House,	Gaya	9304463428
64	Subhas Hotel,	Gaya	8521402739
65	Vishnu Bhojanalay	Gaya	9939208410
66	Vishnu Rest House,	Gaya	9472971649, 8092742622
67	Singh Station View,	Gaya	0631-2222045, 9973941235
68	Hotel Birat In,	Gaya	9234455311
69	Aakash Hotel,	Gaya	9471002103
70	Buddha Bihar	Gaya	9709866604
71	Lal Guest House,	Gaya	9934058151
72	Laxman Guest House,	Gaya	9973940360
73	Atithi Guest House,	Gaya	9431290446
74	Chabra Residency,	Gaya	9835414667
75	Grand Place,	Gaya	9122928709
76	Pal Guest House,	Gaya	9386067942
77	Chandralok Guest House,	Gaya	7352474945
78	Tirupati Guest House	Gaya	9097553241
79	Durga Guest House	Gaya	9430476313
80	Swathi Guest House	Gaya	9934414265
81	Shivam Guest House	Gaya	9835292117
82	Siddharth Hotel	Gaya	9102162888, 9102163888
83	Ratnya Priya Guest House	Gaya	0631-2222999
84	Hotel Orbit	Gaya	0631-2220958
85	Samman Hotel	Gaya	9934024179
86	Bishnu Maya, Rest House	Gaya	9771532865
87	Prithivi Rest House	Gaya	7549518665
88	Hotel Vrindawan,	Gaya	0631-2229999, 9934011735
89	Hotel Neelkamal,	Gaya	0631-2221050, 9955062668
90	City Surya,	Gaya	0631-2222321, 7783806661
91	Hotel Surya,	Gaya	0631-2224004, 9431081702
92	Hotel Royal Surya,	Gaya	9334477222, 9122536444
93	Hotel Heritage,	Gaya	8083490956
94	Hotel Garv,	Gaya	0631-2222069, 2222269
95	Fiesta Resort,	Gaya	9431224402
96	Hotel, Gharana,	Gaya	0631-2225512,9470416563
97	Saraogi Hotel,	Gaya	0631-2222575
98	Saraogi Place	Gaya	0631-2220999, 9431223203
99	Vishnu International,	Gaya	0631-2224422
100	Royal Guest House,	Gaya	9661533562
101	Chandan Guest House,	Gaya	0631-2220486
102	Hotel Vishal,	Gaya	0631-2222307
103	Hotel Vashudhara,	Gaya	0631-2220550
104	Palm Gurden	Gaya	9939408422
105	Hotel Vize	Gaya	9431289874
106	New Vize,	Gaya	9470411456
107	Kripal Lodge,	Gaya	9955062902

HOSPITALS

Doctor / Officer's Name	Mobile No.
Dr. Baban Kunwar, Civil Surgeon, Gaya	9470003278
Mr. Manish Kumar, Dist. Prog. Manager, Dist. Health Society, Gaya	9473191876
Dy. Superintendent, Jai Prakash Narayan Hospital ,Gaya	9470003263
Superintendent, Prabhavati Hospita, Gaya	9470003303 / 0631-2228458
In-charge Medical Officer, I.D Hospital, Gaya	9431838574
Dr. Navnit Nishachal, Haddi Hospital	9431408657
Dr. Shandhy Prasad, Shri Krishna Nurshing Home	9431271907
Dr. Giraja Kumari/Dr. Rajiv Ranjan, Kaushlaya Nurhsing Home	9162206927
Dr. Raran Kumar, Abhijit Nurshing Home	9431224147
Dr. Ranu Singh, Mateshwari Nurshing Home	9470054204
Dr. Uday Shankar Arun, Jiwan Rekah Nurshing Home	631 652097
Dr. Rajeshwar Sharma, Navjeevan Nurshing Home	9431263291
Dr. U. N. Bhadani, Chairman, Indian Red Cross Society, Gaya	9939444111
Dr. D. K. Sahay, Secretary, Indian Red Cross Society, Gaya	9771427504

AMBULANCE SERVICE

Name of Hospital / PHC	Mobile No.
Jai Prakash Narayan Hospital	102, 9852677738
Jai Prakash Narayan Hospital	108, 8863845573
Primary Health Center, DOBHI	7250406595 / 9097052118
Primary Health Center, MANPUR	9934003091
Primary Health Center, MOHANPUR GAYA	9934403608
P.H.C., BARACHATTI	9801253261
Primary Health Center, IMAMGANJ	9097332950
Primary Health Center, AMAS	9835818090

अन्य महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल

बोधगया

बोधगया विश्व के प्रमुख एवं पवित्र बौद्ध-तीर्थस्थलों में से एक है। यहीं बोधि वृक्ष के नीचे गौतम ने अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया जिसके उपरांत उन्हें बुद्ध कहा गया। हिमालय की तराई में स्थित कपिलवस्तु (वर्तमान नेपाल में) के शाक्य गणराज्य के राज कुमार के रूप में जन्में तथागत के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ जैसे ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण दोनों बिहार में ही घटित हुईं। बौद्ध धर्म का वास्तविक उद्‌भव बिहार में हुआ और बुद्ध के उपदेशों एवं उन के सरलतम जीवन शैली के उदाहरण और हर जीवित प्राणी के प्रति अन्य-अन्यतम करुणा के कारण पूरे विश्व मे फैल गया। महत्वपूर्ण यह भी है की बिहार राज्य का नाम भी (विहार) शब्द से व्युत्पन्न है जो जिसका तात्पर्य उन बौद्ध-विहारों से है जो प्रचुर मात्रा में बिहार में फैले थे। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के सैकड़ों वर्ष बाद मगध के मौर्य राजा अशोक (269 ईपू से 232 ईपू) ने बौद्ध धर्म के पुनरूत्थान, सुदृढ़ीकरण एवं व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए। अशोक ने बौद्ध भिच्छुओं के लिए चैत्य और विहार बनवाए। उसने अनेक अभिलेख खुदवाये जो प्रस्तर शिलालेखों के रूप में महत्वपूर्ण एतिहसिक धरोहर है, जिनमें बुध और बौद्ध धर्म से जुड़े अनेक बातों का पता चलता है। अशोक के अभिलेख जो आज भी अतिवशिष्ट हैं, विद्वानों और तीर्थ-यात्रियों के लिए बुद्ध के जीवन की घटनाओं एवं शिक्षाओं की जानकारी का महत्वपुर्ण स्रोत हैं। यहां अत्यंत भव्य महाबोधि मंदिर है जिस में वास्तविक बोधिवृक्ष अभी भी खड़ा है। इस मंदिर का स्थापत्य सैकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक विरासतों का समन्वय है, हालांकि इस की भवन निर्माण कला गप्त युगीन कला का अदभुत नमूना है। यह मंदिर विरासत के रूप में अभिलेख भी रखता है, जिनमें 7 वीं से 10 वीं सदी ई0 के बीच के श्रीलंका म्याँमार और चीन से आए तीर्थयात्रियों के यात्रा विवरण मिलते हैं। यह शायद वही मंदिर है जहाँ सातवीं सदी में ह्वेनसांग आया था।

महाबोधि मंदिर

यह मंदिर बोधिवृक्ष के पूर्व में स्थित है। इसका स्थापत्य अदभुत है। इसकी चौड़ाई 48 वर्ग फुट है जो सिलिंडर पिरामिड के रूप में इस की गर्दन तक उठती चली गई है, क्योंकि इसका आकर सिलिन्डरिकल है। मंदिर की कुल उँचाई 170 फुट है और मंदिर के शिखर पर छत्र है, जो धर्म की संप्रभुता का प्रतीक है। इसके चारों कोनों पर स्थित मीनार कलात्मक ढंग से बनाए गये हैं जो पवित्र बनावट को संतुलन प्रदान करते हैं। यह पवित्र इमारत पर फहराया गया एक महान बैनर है, जो दुनिया को सांसारिक समस्याओं से ऊपर उठकर , मानव के दुखमय जीवन को शांति प्रदान करने के लिए बुद्ध के पवित्र प्रयासों का प्रचार करने के लिए और ज्ञान के अच्छे आचरण और अनुशासित जीवन के माध्यम से दिव्यशांति प्राप्त करने के लिए किए गये प्रयास का प्रतीक है। मंदिर के अंदर मुख्य क्षेत्र में बुद्ध की बैठी हुई मूर्तिस्थित है जिस में वे अपने दाएँ हाथ से बनी हुई है जो श्रद्धालूओं के दान से लाई गई थी। मंदिर का पूरा छत्र कलात्मक निर्मित स्तूपों से भरा हुआ है। ये स्तूप विभिन्न आकर के हैं जो पिछले 2500 सालों के दौरान बनाए गये हैं। इनमें से ज्यादातर स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक हैं। प्राचीन वेदिका जो मंदिर को चारों ओर घेरती हैं पहली सदी ईपू. की है और यह उस सदी की रोचक स्मारकों में से एक है।

80 फुट बुद्ध प्रतिमा

महान बुद्ध की मूर्ति को 80 फुट की बुद्ध प्रतिमा के रूप मे जाना जाता है। इसका अनावरण एव लोकार्पन 18 नवंबर, 1989 को समारोहपूर्वक 14वें पवित्र दलाई लामा की उपस्थति मे किया गया था, जिन्होने इस 25 मीटर की प्रतिमा को आशीर्वाद प्रदान किया। यह महान बुद्ध की पहली प्रतिमा थी जिसे आधुनिक भारत के इतिहास में बनाया गया था। यह प्रतिमा महाबोधि मंदिर बोधगया के आगे स्थित है। यहाँ पर सुबह 7 बजे से 12 बजे तक दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक दर्शन किया जा सकता है।

अनिमेष लोचन चैत्य

यह विश्वास किया जाता है कि बुद्ध ने महान बोद्धिवृक्ष को बिना पलकें झपकाये देखते हुए यहाँ एक साप्ताह बिताया था। वर्तमान बोधिवृक्ष वास्तविक वृक्ष का संभवत: पांचवाँ उतराधिकारी है, जिसके नीचे बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। वज्रासन महाबोधि वृक्ष के नीचे एक पत्थर का प्लेटफार्म है, जिसपर मान्यता है कि बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बैठकर पूर्व की ओर देखते हुए ध्यान लगाया करते थे। **चक्रमण**– यह पवित्र चिन्ह है जो बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के तीसरे हफ्ते बाद में ध्यान की मुद्रा में टहलने से बना है। मान्यता है कि यहां बुद्ध ने अपने पदमचरण रखे थे। रतनगढ़ में बुद्ध ने एक सप्ताह बिताया था जहां विश्वास है कि उनके शरीर से पाँच रंग फूटने लगे थे।

कोटेश्वर नाथ मंदिर

गया जिला के बेलागंज प्रखंड के पाई बिगहा के आगे मेन कोटेश्वरनाथ मंदिर अवस्थित है। भगवान शिव के पवित्र मंदिर के रूप मे प्रसिद्ध यह मोरहर दरघा नदियों के संगम पर स्थित है। पटना से दक्षिण 120 किमी की दूरी पर स्थित कोटेश्वर मंदिर के बारे मे मान्यता है कि इसका निर्माण 8वीं सदी ई० के आसपास हुआ था। कोटेश्वर मंदिर का गर्भगृह लाल पत्थर के एक टुकड़े को काटकर बनाया गया है जिसमे एक विशाल शिवलिंग के आसपास 1008 छोटे शिवलिंग हैं, जो लगभग 1200 साल पुराना है। यह कहा जाता है कि वाणासुर का मेला और देवकुंड घने जंगल मे अवस्थित थे। उषा यहाँ मंदिर मे भगवान शिव की पूजा–अर्चना के लिए आती थी। जिस दौरान भगवान शिव प्रकट हुए और उसकी इच्छापूर्ति हेतु सहस्र लिंगों की स्थापना करने का निर्देश दिया। उसके बाद शिवलिंग की स्थापना हुई। इसके परिणाम स्वरूप भगवान शिव ने उसकी इच्छा पूरी की और उसका अनिरुद्ध से विवाह हुआ। अनिरुद्ध भगवान कृष्ण के पौत्र थे जिनके साथ पत्नी के रूप मे उषा ने अपना जीवन गुजारा। यह स्थान प्राचीन काट मे शिवनगर के रूप मे जाना जाता था। कई ग्रंथों मे उल्लेख है कि सहस्र शिवलिंग की स्थापना द्वापर युग के अंत में की गई थी।

यह विश्वास किया जाता है कि इस स्थान में इतनी शक्ति है कि जो भी तीर्थयात्री यहाँ आता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। स्वाभाविक रूप से प्रत्येक वर्ष सावन के महीने मे तीर्थयात्री यहाँ जलाभिषेक एवं पूजा अर्चना के लिए आते हैं। सामान्यता भगवान शिव के पवित्र स्थलों पर बड़ी संख्या में तीर्थयात्री सालों भर आते हैं, लेकिन सावन के पवित्र महीने मे यह संख्या और बढ़ जाती है। यह स्थान पक्की सड़क द्वारा मख्दूमपूर, शकुराबाद, घेजन, टेकारी और बेला रामपुर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर में द्रविड़ शैली मे हाल मे एक नया शिखर निर्मित किया गया है। हालाँकि इसके आंतरिक स्थापत्य वास्तविक स्वरूप में ही संरक्षित किया गया है। इसके गर्भगृह एव आंशिक बदलाव किए गये हैं। यह मंदिर मुख्यत: ईंटों और ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित है जिसे इसके प्रवेश द्वार अंतराल एवं स्तंभ मे देखा जा सकता है।

ढुंगेश्वरी मंदिर

दुँगेश्वरी गुहा मंदिर जसे महाकाल गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है बोधगया (बिहार) के उत्तर-पूर्व में 12 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ तीन पवित्र बुद्ध गुफाएँ हैं, जिनके बारे मे मान्यता है की यहाँ बुद्ध ने ध्यान लगाया था। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर प्राचीन गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में भगवान बुद्ध बोधगया आने के पूर्व कई वर्षों तक कठोर निग्रह के साथ तपस्या की थी। इन तीन मुख्य गुफाओं मे कई पवित्र बुद्ध आवशेष हैं और एक हिंदू-धर्म से जुड़ा है। ढुंगेश्वरी गुहा मंदिर स्थानीय लोगों में 'सुजाता स्थान' के नाम से लोकप्रिय है। इस मंदिर से जुड़ी एक प्रसिद्ध कहानी है। यह माना जाता है की कठोर तपस्या के कारण बद्ध बिल्कुल शकाय हो गये थे। जब वे बरगद वृक्ष के नीचे सुजाता का आग्रह स्वीकार किया और भोजन ग्रहन किया। बुद्ध इसके उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ना तो स्व के प्रति अति आग्रह और ना तो स्व के प्रति अतिनिग्रह ज्ञान प्राप्ति का सही तरीका है। बुद्ध ने माध्यम मार्ग के ज्ञान को प्राप्त किया। जो परम निर्वाण को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। दुँगेश्वरी गुहा मंदिर इसी घटना का प्रतीक स्मारक है। सिद्धार्थ गौतम के बारे मे विश्वास किया जाता है की बोधगया मे ज्ञान प्राप्ति करने हेतु जाने के पूर्व उन्होंने यहाँ छः वर्षों तक ध्यान लगाया था। दो छोटे मंदिर इस घटना की याद मे यहाँ बनाए गये हैं। यहाँ स्वर्ण से बनी एक बुद्ध मूर्ति बुद्ध के कठोर निग्रह को दर्शाती हुई एक गुफा मंदिर मे रखी गई है और लगभग 6 फुट ऊँची विशाल बुद्ध मूर्ति दूसरे मंदिर मे रखी है। एक हिंदू देवी ढुंगेश्वरी की मूर्ति भी गुहा मंदिर मे अंदर रखी गई है।

राजगीर

गया से 80 किमी तथा पटना से 110 किमी दूर स्थित राजगीर का नाम राजगृह से पड़ा जिसका तात्पर्य है राजा का घर। यह शहर भगवान बुद्ध के समय में प्रसिद्ध मगध साम्राज्य की राजधानी था, जब पाटलिपुत्र शहर नही बसा था। राजगीर नालंदा से 14 किमी की दूरी पर अवस्थित है। राजगीर भारत के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है। राजगीर की प्राकृतिक सुंदरता अद्‌भुत है क्योंकि यह पाँच पवित्र पहाड़ों से घिरा है। राजगीर शहर बौद्धों के साथ-साथ जैन लोगों के लिए भी अत्यंत प्रिय है। यहीं पहाड़ी पर दो गुफाएँ हैं, जो भगवान बुद्ध को विश्राम के लिए अत्यंत प्रिय थीं, यहीं पहाड़ी पर उन्होंने अपने दो प्रसिद्ध उपदेश भी दिए थे।

राजगीर के प्रमुख पर्यटक स्थल :

शांति स्तूप - रत्नागिरि पहाड़ी की चोटों पर स्थित अत्यंत सफेद पठारों से निर्मित यह संरचना बौद्धों के लिए सबसे आकर्षक स्थल है यहाँ स्थित चार सोने की मूर्तियाँ बुद्ध के जन्म, संबोधि, शिक्षाओं व मृत्यु को दर्शाती हैं।

गृधकूट पर्वत - यह भगवान बुद्ध के प्रिय स्थलों में से एक था, जहाँ उन्होंने संबोधि प्राप्ति के उपरांत कई बार उपदेश दिये। यहीं पर उन्होंने दो प्रमुख सूत्रों का प्रतिपादन किया - लोटस सूत्र और प्रज्ञानपरिमिता

प्राचीन अवशेष - यहाँ राजा बिंबिसार और आजातशत्रु से जुड़े अनेक स्थल, गुफाएँ एवं प्राचीन राजगृह शहर के अवशेष दर्शनीय हैं। यहाँ आजातशत्रु द्वारा निर्मित 5 वीं सदी ई.पू. का किला देखा जा सकता है जहाँ उसने अपने पिता को कैद करके रखा था। इसकी 115 कि.मी. लंबी बाहरी दीवार पठारों के खंडों से निर्मित है।

बराबर गुफाएँ

गया से 24 किमी दूर बिहार के जहानाबाद जिले में अवस्थित, बराबर की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गयी भारत की प्राचीनतम अवशिष्ट गुफाएँ है, जो ज्यादातर मौर्य साम्राज्य 322 का 185 ई.पू. के दौरान बनी जिसमें अशोक के कुछ अभिलेख भी हैं। यह मखदूमपुर प्रखंड मुख्याल्य से 11 किमी दूर स्थित है। बुद्ध धर्म को अपनाने के बावजूद अशोक ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता की नीति के तहत जैन एव अन्य संप्रदायों को भी फलने-फूलने का अवसर दिया। ये गुफाएँ मक्खली गोसाल द्वारा संस्थापित आजीवन संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा प्रयोग मे लाने के लिए बनाई गई थी। मक्खली गोसाला बुद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध और जैन धर्म के 24 वे अंतिम तीर्थकर महावीर के समकालीन थे। इन गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाई गई कई बुद्ध एवं हिंदू मूर्त्तियाँ हैं। बराबर की अधिकतर गुफाओं मे दो कमरे बने हैं, जिन्हें ग्रेनाइट की चट्टानों को काटकर बनाया गया है जिन की आंतरिक सतह पर ऊँचे दर्जे की चमकयुक्त पॉलिश की गई है और आकर्षक प्रभाव है। पहला कमरा एक बड़ा आयताकार हॉल है, जहाँ पूजा करने वेल लोग इकट्ठा होते थे और दूसरा कमरा छोटा है जो गोल एव गुंबदनुमा है, पूजा के लिए बनाया गया था। संभवतया इस दूसरे आंतरिक कमरे मे एक छोटा स्तूर जैसी संरचना होती थी लेकिन अब ये खाली है । ये सात गुफाएँ (सतगढवा) मौर्य सम्राट अशोक के समय में आजीवकों के लिए बनवाया गया था। ये गुफाएँ कठोर एकामक ग्रेनाइट चट्टानों को काटकर बनाई गई है जिनपर असाधारण पोलिश की कला का सुंदर नमूना प्रस्तुत करते हुए आंतरिक दीवारों पर असाधारण चमक वाली पॉलिश की गई है।

RAILWAY TIME TABLE
GAYA JUNCTION

UP

DOWN

DAYS	ARR	DEP	T.No.	TRAIN NAME	T. No.	ARR	DEP	DAYS
DAILY	00:50	00:55	13307	GANGA SATLEZ EXP.	13308	1:13	1:18	DAILY
M,W,Th	01:45	01:50	12175	CHAMBAL EXP. (GWL)	12176	22:58	23:03	T,Th,S
SAT	01:45	01:50	12147	CHAMBAL EXP. (AGRA)	12178	22:58	23:03	MON
T, F, Sn	01:45	01:45	19306	SHIPRA EXP.	19305	22:58	23:03	Sn,W,F
T,T,F,Sn	02:05	02:10	12815	PURI - NEW DELHI EXP.	12816	21:00	21:05	M,W,T,S
WD, SAT	02:05	02:10	12323	HOWRAH - NEW DELHI EXP.	12324	22:20	22:25	SUN,THU
DAILY	02:40	03:00	13329	GANGA DAMODAR EXP.	13330	01:30	01:50	DAILY
DAILY	02:55	03:00	12311	KALKA MAIL	12312	23:20	23:45	DAILY
M,W,SAT	03:10	03:15	12875	NEELANCHAL EXP.	12816	00:25	00:30	M,W,Sat
THU	03:10	03:15	18609	HATIYA - LOKMANYA TILAK EXP.	18610	23:42	23:44	SUN.
DAILY	03:45	04:05	18624	PATNA - HATIYA EXP.	18623	00:35	00:55	DAILY
T, THU	04:03	04:08	18103	JALIYAWALA BAGH EXP.	18104	14:28	14:33	Th, Sat
DAILY	04:15	04:25	14223	BUDDHA PURNIMA	14224	00:55	01:05	DAILY
DAILY	04:55	05:00	13009	HOWRAH - DEHRADOON EXP.	13010	21:17	21:27	DAILY
DAILY	05:22	05:27	12321	HOWRAH - MUMBAI MAIL	12322	03:00	03:05	DAILY
SUN	----	05:45	12389	**GAYA - CHENNAI EXP.**	12390	21:40	----	WED
SAT	05:50	05:55	12496	KOLKATA - BIKANER EXP.	12495	05:48	05:53	FRI
SUN	----	19:30	22409	**GAYA-ANANDVIHAR (GARIBRATH)**	22410	09:50	----	SUN
TUE	06:02	06:07	12938	HOWRAH - GANDHIDHAM EXP.	12937	05:48	05:53	MON
SUN	05:50	05:55	12805	BHUBNESHWAR - NEW DELHI	12806	21:52	21:55	MON
DAILY	06:28	06:33	12307	HOWRAH - JODHPUR EXP.	12308	20:13	02:18	DAILY
DAILY	06:15	06:20	12987	SEALDAH - JAIPUR EXP.	12988	07:43	07:48	DAILY
WED	07:00	07:05	15021	GORAKHPUR - SHALIMAR EXP.	15022	22:20	22:25	MON
DAILY	09:55	----	13305	**DHANBAD - GAYA INTERCITY**	13306	----	17:45	DAILY
DAILY	----	11:40	13023	**GAYA - HOWRAH EXP.**	13024	----	12:20	DAILY
DAILY	12:50	13:10	18626	HATIA - PATNA SUPER EXP.	18625	13:45	14:08	DAILY
TUES	----	13:00	15619	**GAYA - KAMAKHYA EXP.**	15620	05:35	----	TUES
DAILY	14:00	14:05	12801	PURUSHOTTAM EXP.	12802	13:30	13:35	DAILY
DAILY	----	1420	12397	**MAHABODHI EXP.**	12397	06:20	----	DAILY
Sn,W,Th	14:50	14:55	12381	POORVA EXP.	12382	09:15	09:18	T,W,SAT
MON	14:50	14:55	12391	HOWRAH - JAISALMER EXP.	12372	09:10	09:15	FRI
FRI	14:55	14:55	12353	HOWRAH - LALKUAN EXP.	12354	11:30	11:35	SUN
MON	16:50	17:00	12144	DIKSHA BHUMI EXP.	12143	08:50	08:55	SUN
TUE,SAT	18:38	18:43	12357	KOLKATA - AMRITSAR EXP.	12358	04:40	04:45	F, TUE
THU	19:00	19:05	13167	KOLKATA - AGRA CANTT. EXP.	13168	00:25	00:30	SUN
DAILY	20:00	20:20	12366	PATNA - RANCHI JAN SHATABDI	12365	08:00	08:20	DAILY
THU	20:12	20:17	12443	HALDIA - ANANDVIHAR EXP.	12444	09:33	09:38	WED
WED	20:12	20:17	12319	KOLKATA - AGRA CANTT.	12320	09:33	09:38	FRI
DAILY	19:48	19:58	13243	PATNA - BHABHUA INTERCITY	13244	07:30	07:35	DAILY
DAILY	21:05	21:15	13151	KOLKATA - JAMMU TAWI EXP.	13152	06:34	06:39	DAILY
SUN,W,F	21:30	21:35	12817	SWARNA JAYANTI EXP.	12818	10:05	10:10	T,F,Sn
EX. SUN	22:35	22:38	12301	KOLKATA RAJDHANI EXP.	12302	04:01	04:04	EX.SAT
DAILY	22:52	22:55	12313	SEALDAH RAJDHANI EXP.	12314	03:50	03:53	DAILY
W,Sa,Sn	23:08	23:11	12421	BHUBNESHWAR RAJDHANI EXP.	12422	04:18	04:21	T,Sa,M
M,T,F,Th	23:08	23:11	12443	BHUBNESHWAR RAJDHANI EXP.	12444	04:18	04:21	T,S,F,W
W, SUN	23:29	23:32	12439	RANCHI RAJDHANI EXP.	12440	03:36	03:33	W, SAT
THU	23:48	23:53	12942	ASANSOL - AHMEDABAD EXP.	12941	05:48	05:53	THU
DAILY	21:50	22:00	13348	PALAMU EXP.	13347	05:10	05:20	DAILY

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

Gaya

देश विदेश से आये तमाम श्रद्धालुओं का विष्णु नगरी गया में स्वागत, अभिनन्दन एवं कोटि-कोटि नमन। तीर्थ-यात्रियों की सेवा एवं उनकी संतुष्टि ही हमारा लक्ष्य ।

महत्वपूर्ण दूरभाष संख्या

गया (कोड - 0631)	कार्यालय	आवास	मोबाइल
आयुक्त, मगध प्रमंडल, गया	2225821	2229002	9473191426
पुलिस महानिरीक्षक, गया	2223085	2222349	9431822960
जिला पदाधिकारी, गया	2222900	2222800	9473191244
वरीय पुलिस अधीक्षक, गया	2225901	2225902	9431822973
नगर पुलिस अधीक्षक, गया	2224572	2225855	9473191722
उप विकास आयुक्त, गया	2224044	2222256	9431818351
निगम आयुक्त, गया	2220699	-	9470488794
अपर समाहर्त्ता, गया	2221024	-	9473191245
अनुमंडल पदाधिकारी, सदर, गया	2222357	-	9473191246
पुलिस उपाधीक्षक, नगर, गया	-	-	9431800110
सिविल सर्जन, गया	2220303	2420009	9470003278
जन शिकायत पदाधिकारी, गया	-	-	9631015267
जिला जन-संपर्क पदाधिकारी, गया	2226184	-	9431631095
अधीक्षक, मगध मेडिकल कॉलेज, गया	2210741	-	9470003301
प्रखंड विकास पदाधिकारी, नगर, गया	2210057	-	9431818068
अंचल अधिकारी, नगर, गया	-	-	8544412528
कार्यपालक अभियंता, विद्युत (शहरी), गया	-	-	7763814315
सहायक अभियंता, टेलीफोन, गया	-	2220000	9431200490
रेलवे स्टेशन प्रबन्धक, गया	-	2220069	9771427923
रेलवे टूरिस्ट इन्फौरमेशन सेन्टर, गया	2223635	-	-
रेलवे इन्क्वायरी, गया	2226131	2228283	139
संवास सदन समिति मेला नियंत्रण कक्ष, गया	2222436, 2222437, 2222438, 2222439		
रेड क्रॉस, गया	2220057	-	-
फायर ब्रिगेड, गया	2222258	-	9473199839

किसी भी जानकारी या समस्या के समाधान के लिए सम्पर्क करें :-

हेल्पलाईन 'ई-समाधान' (24×7) : 9304401000

Online Information & Complain Centre :

www.pinddaangaya.in

पितृपक्ष मेला
महासंगम 2016
– भावनाओं का समागम

प्रेतशिला एवं ब्रह्मकुण्ड

तर्पण करते यात्री

फल्गु की आरती

बोधगया में पिण्डदान

अक्षयवट में पिण्डदानी यात्री

बोधगया में पिण्डदान

बोधगया में पितर पूजा

विष्णुपद में श्राद्ध-कर्म

पितृपक्ष मेला महासंगम 2016 – आस्था का संगम

विदेशियों द्वारा पितर-पूजा

विदेशियों द्वारा पिण्डदान

बिहार तथा नेपाल में भूकम्प में मारे गये लोगों के लिए श्राद्धकर्म करते समाज सेवी शिववचन सिंह

पिण्डदान करती विदेशी महिलायें

पितर-पूजा का दृश्य

प्रेतशिला पर सत्तू उड़ाते पिण्डदानी

गौदान करते पिण्डदानी

घड़े की नाव पर सीताकुण्ड जाते पिण्डदानी

पितृपक्ष मेला
महासंगम 2016

– पूर्वजों के प्रति श्रद्धा

फल्गु में तीर्थयात्री

जलाध्जलि देते तीर्थ-यात्री

देवघाट पर तर्पण करते यात्री

पिण्डदान करती महिलायें

पितृपक्ष में पितरों की दीवाली

फल्गु के किनारे तीर्थ-यात्रीगण

फल्गु की रेत पर पिण्डदान

पितृपक्ष में निर्मित भव्य पण्डाल

पितृपक्ष मेला महासंगम 2016

– अद्भुत दृश्य

श्राद्धकर्म के पश्चात् शय्यादान करते तीर्थ-यात्री

तर्पण करते यात्री

फल्गु की आरती

फल्गु में स्नान-ध्यान

अपने पितरों का श्राद्ध-कर्म करते बालक-पुत्र

पिण्डदान करते यात्री

विष्णुपद क्षेत्र का विहंगम दृश्य

सिख समुदाय के यात्री पिण्डदान करते

पितृपक्ष मेला
महासंगम 2016

– गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

धर्मारण्य

सीताकुण्ड

वृद्ध परपितामहेश्वर

ब्रह्मयोनि पर्वत

प्रेतशिला पर्वत

रामशिला

पितामहेश्वर

पवित्र फल्गु

पितृपक्ष मेला
महासंगम 2016

– गया के मुख्य दर्शनीय स्थल

महाबोधि मन्दिर, बोधगया

80 फीट ऊँची बुद्ध प्रतिमा

माँ मंगलागौरी मन्दिर

बगला स्थान

दुर्लभ मूँगा के गणेश (रामशिला)

दुर्लभ स्फटिक शिवलिंग (रामशिला)

सुजाता गढ़, बोधगया

माँ दु:खहरणी मन्दिर

पितृपक्ष मेला महासंगम 2016

– तैयारियों की समीक्षा

पितृपक्ष की तैयारी का निरीक्षण करते जिलाधिकारी

पदाधिकारियों के साथ जिलाधिकारी

समाजसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ जिलाधिकारी

गयाधाम के पण्डों के साथ निरीक्षण

विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों के साथ तैयारी की देखरेख

पितृपक्ष की तैयार के संलग्न व्यक्तियों को निर्देश देते जिलाधिकारी

पण्डा समाज के प्रतिनिधियों के साथ जिलाधिकारी

विभिन्न वेदियों का निरीक्षण

पितृपक्ष मेला महासंगम 2016

– तैयारियों की समीक्षा

विष्णुपद मंदिर का भ्रमण करते जिला पदाधिकारी

सूर्यकुण्ड सरोवर की साफ-सफाई हेतु निर्देश देते हुए जिलाधिकारी

पितृपक्ष मेला की तैयारी की समीक्षा बैठक

पदाधिकारियों के साथ जिलाधिकारी

पितृपक्ष मेला क्षेत्र की साफ-सफाई का निरीक्षण

साफ-सफाई में योगदान करते जिलाधिकारी

अक्षयवट के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करते जिलाधिकारी

अक्षयवट के समीप जिलाधिकारी

गया विश्व में पितरों के उद्धार के लिए सर्वश्रेष्ठ तीर्थ-स्थल माना गया है। इसे तीर्थों का प्राण कहा गया है। पौराणिक काल से ही इसकी महत्ता प्रतिष्ठापित है। कथाओं में कहा गया है कि सतयुग के पूर्व ब्रह्म ने सृष्टि का निर्माण किया, तब इसका श्रीगणेश गया के ब्रह्मयोनि पर्वत से ही हुआ था। गया का पितृपक्ष मेला हर वर्ष भादों के शुक्लपक्ष के अनन्त चतुर्दशी के दिन से प्रारंभ होता है। इस वर्ष यह मेला दिनांक 15 सितम्बर, 2016 से प्रारंभ होकर 30 सितम्बर, 2016 तक चलेगा। गया में सारे भारतवर्ष के तीर्थाटन करने वाले यात्री, निर्धारित विधि से अपने पूर्वजों की श्राद्ध-क्रिया करने आते हैं। श्राद्ध-क्रियाओं में पूर्वजों की आत्माओं की शांति के लिए पिंडदान एवं तर्पण करना ही प्रधान कर्म है, जो मुख्यत: तीन स्थलों- फल्गु नदी के तट पर, विष्णुपद मंदिर में तथा अक्षयवट के नीचे संपादित किया जाता है।

विष्णुपद मंदिर वैष्णवों के लिए प्रमुख तीर्थस्थलों में एक विशिष्ट स्थान रखता हैं। वर्तमान विष्णुपद मंदिर का निर्माण इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने सन् 1766 ई० में जयपुर के प्रसिद्ध स्थापत्यकारों को बुलाकर कराया था। इस विशाल मंदिर की ऊँचाई 100 फीट तथा मण्डप 50 वर्ग फीट है। भगवान विष्णु के चरण चिन्ह के कारण ही इसका नाम विष्णुपद है, चरण चिन्ह 13 इंच लम्बा हैं।

ब्रह्मयोनि पहाड़ के पास अक्षयवट में एक विशाल वटवृक्ष है जहाँ गया में तीर्थ-कर्मों का अन्त होता हैं। कुछ तालाबों के तट पर भी पिंडदान किया जाता है, जिनमें उत्तर मानुष, सूर्यकुण्ड, वैतरणी, गोदावरी तथा सीताकुण्ड प्रधान हैं विष्णुपद मंदिर के पश्चिम में मार्कण्डेय नाम का शिव मंदिर है, जहाँ से मंगलागौरी मंदिर तक सीढ़ियाँ जाती हैं। विष्णुपद के निकट पश्चिम की ओर सूर्य मंदिर है। इस मंदिर में भगवान सूर्य के सारथी के साथ सात घोड़े वाली एक प्रतिमा है। इस मंदिर के सामने सूर्यकुण्ड हैं, जहाँ पिंण्डदान किया जाता है। गया नगर के चारों ओर पहाड़ की चोटियों पर अवस्थित धर्मस्थलों पर भी पिंडदान किया जाता है, जिसमें उत्तर में रामशिला पहाड़ी (715 फुट ऊँचाई), उत्तर-पश्चिम में प्रेतशिला पहाड़ी (873 फुट ऊँचाई) इत्यादि प्रमुख है।

पितृपक्ष मेला में आये श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ

आवासन व्यवस्था :-

यात्रियों के ठहरने के लिए मेला क्षेत्र में पण्डागृहों, धर्मशालाओं तथा होटलों में आवासन की व्यवस्था रहती हैं इसके अतिरिक्त निम्नलिखित 28 स्थलों पर आवासन की व्यवस्था की गई है।

1. +2 जिला स्कूल, गया	15. अनुग्रह कन्या मध्य विद्यालय, गया
2. रा० कन्या उच्च विद्यालय, रमना, गया	16. अनुग्रह कन्या उच्च विद्यालय, गया
3. रामचन्द्र कन्या उच्च विद्यालय, वनमाली बाबा	17. शहीद उच्च विद्यालय, गया
4. मध्य विद्यालय विराजमोहिन, गया	18. निगमा मॉनेस्ट्री, बोधगया
5. न्यू मध्य विद्यालय, चाँदचौरा, गया	19. डायट परिषद जिला प्रशिक्षण संस्थान, गया
6. मध्य विद्यालय, घुघरीटाँड़, गया	20. डायट संलग्न अभ्यास मध्य विद्यालय, गया
7. मध्य विद्यालय, अक्षयवट, गया	21. प्रखण्ड संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया
8. मध्य विद्यालय, समीरतक्या, गया	22. डंकन मध्य विद्यालय सिकड़िया मोड़, गया
9. हरिदास सेमिनरी, गया	23. राजेन्द्र मध्य विद्यालय, गोदावरी, गया
10. चन्द्रशेखर उच्च विद्यालय, अक्षयवट, गया	24. मध्य विद्यालय, केन्दुई, गया
11. टी. मॉडल मध्य विद्यालय, गया	25. कन्या उच्च विद्यालय, जेल प्रेस, गया
12. टी. मॉडल इन्टर विद्यालय, गया	26. रामरूची कन्या उच्च विद्यालय, गया
13. महावीर मध्य विद्यालय, गया	27. हादी हाशिमी उच्च विद्यालय, गया
14. महावीर इण्टर विद्यालय, गया	28. चन्द्रशेखर जनता महाविद्यालय, गया

सम्पर्क पदा० :- **श्री शंभुनाथ झा,** वरीय उप समाहर्त्ता, गया - 9471006318

यातायात व्यवस्था :-

तीर्थ यात्रियों को यातायात सुविधा उपलब्ध कराने हेतु जिला प्रशासन द्वारा 6 रूटों का निर्धारण किया गया है -

1. रेलवे स्टेशन से विष्णुपद	2. विष्णुपद से प्रेतशिला
3. गांधी मैदान से विष्णुपद,	4. विष्णुपद श्मशान घाट से बोधगया,
5. गया कॉलेज खेल परिसर उत्तरी गेट से रामशिला/प्रेतशिला,	6. कण्डी नवादा से गया कॉलेज खेल परिसर/विष्णुपद मंदिर

मेला अवधि में **रिंग बस सेवा** चलाई गई है। यात्रियों की सुविधा के लिए बस, ऑटो एवं रिक्सा भाड़ा निर्धारित कर दिया गया है। साथ ही, प्री-पेड ऑटो सेवा **गया रेलवे स्टेशन** से 34 विभिन्न स्थलों के लिए उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, टैक्सी ऑन कॉल की सुविधा निम्न टूर एवं ट्रैवेल्स के द्वारा उपलब्ध कराई जा सकेगी :-

डिलाईट टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० :- 9431225290	गुरूकृपा टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० :- 9934290558
अखण्ड ज्योति टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० :- 9431272040	प्रेम टूर एवं ट्रैवेल्स, गया, मो० :- 9430073077

सम्पर्क पदा० :- **जिला परिवहन पदाधिकारी,** गया - 7631770826

निःशुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर :-

तीर्थ यात्रियों को चिकित्सा विशेष सुविधा उपलब्ध कराने हेतु :-

1. अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, गया	2. जयप्रकाश नारायण अस्पताल, संक्रामक रोग अस्पताल एवं प्रभावती अस्पताल

24 घंटे कार्यरत शिविर

1. विष्णुपद मंदिर	2. रेलवे स्टेशन
3. गया कॉलेज खेल परिसर	4. निगमा धर्मशाला, बोधगया

शिविरों में डॉक्टर, पारा मेडिकल स्टॉफ एवं आवश्यक दवायें सुलभ रहेगी।

सम्पर्क पदा० :- **सिविल सर्जन,** गया - 9473003278

पण्डागणों की पहचानः-

पण्डों एवं उनके अधि त प्रतिनिधियों को **संवास सदन समिति, गया** के मुहर एवं हस्ताक्षर से फोटो आईडेंटिटी कार्ड निर्गत किया गया है। पहचान पत्र जरूर देखें।

सम्पर्क पदा० :- **सचिव, संवास सदन समिति,** गया - 9471413791

जन वितरण प्रणाली की दुकान :-

तीर्थयात्रियों को किरासन तेल उचित दर पर उपलब्ध कराने हेतु मेला क्षेत्र में 44 अस्थाई बिक्री केन्द्र की स्थापना की गई है तथा यात्रियों की सुविधा हेतु सुधा डेयरी के 9 स्टॉल लगाये गये ।

सम्पर्क पदा० - **जिला आपूर्त्ति पदा०,** गया - 9801034214

हेल्पलाईन :- इसके अतिरिक्त गया शहर में महत्वपूर्ण जगहों **"May I Help You"** सहायता केन्द्र की स्थापना की गई है। तीर्थ यात्री अपनी समस्याओं से प्रशासन को अवगत कराएँ।

सम्पर्क पदा० - **सहायक निदेशक,** सा० सु०, गया - 8292897401

पार्किंग स्थल :- नगर के पाँच स्थानों पर वाहनों के लिए पार्किंग स्थल बनाये गए है :-

सिकड़िया मोड़ बस स्टैण्ड	गया कॉलेज खेल परिसर
प्रेतशिला पहाड़ी के निकट खाली स्थान पर	केन्दुई
आई०टी०आई०/पॉलिटेक्निक मैदान परिसर	

छोटी-छोटी वाहनों का प्रवेश ब्रह्मसत तालाब के उत्तर तरफ प्रतिबंधित रहेगा।

सम्पर्क पदा० :- **जिला परिवहन पदाधिकारी,** गया - 7631770826

सूचना केन्द्र :- गया रेलवे स्टेशन एवं विष्णुपद मंदिर परिसर में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग का सूचना केन्द्र संचालित है। प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एवं कर्मचारी आपकी सेवा में 24 घंटे उपलब्ध हैं।

सम्पर्क पदा० :- **जिला जन-सम्पर्क पदाधिकारी,** गया - 9431631095

महत्वपूर्ण सरोवर :-

1. रूक्मिनी तालाब	2. वैतरणी तालाब	3. गोदावरी,	4. सूर्यकुण्ड,
5. ब्रह्मसागर,	6. रामशिला तालाब	7. पितामहेश्वर तालाब	

पिण्ड वेदी एवं सरोवरों की सफाई का कार्य इस वर्ष बड़े पैमाने पर नगर निगम, गया द्वारा कराई गई है, ताकि सभी सरोवरों में आक्सीजन के स्तर को बढ़ाया जा सके, इसके लिए कम्प्रेशर चलाया गया है तथा चूने एवं फिटकिरी से इसकी सफाई की गई हैं। पानी में क्लोरिन के स्तर को मानक के अनुसार करने के लिए ब्लिचिंग पाउडर एवं सोडियम क्लोराइड के घोलों को सरोवर में डाले गये हैं।

प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम :-

मेला में आये श्रद्धालुओं के स्वस्थ्य मनोरंजन के लिए प्रतिदिन **संध्या 6:00 से 7:30** तक **सांस्कृतिक कार्यक्रम** तथा आध्यात्मिक ज्ञानवर्द्धन के लिए मेला अवधि में **संध्या 7:30 बजे से 10:00** बजे तक **विष्णुपद मंदिर** के प्रांगण में देश के विख्यात प्रवचनकर्त्ताओं द्वारा **प्रवचन एवं भजन संध्या** आयोजित है।

विशेष अनुरोध :-

- सड़े-गले खाद्य सामग्रियों का सेवन न करे।
- नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले एवं असामाजिक तत्वों से सावधान रहे।
- किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा दी गई खाद्य सामग्रियों का सेवन न करें।
- चापाकल एवं शुद्ध जलकूपों से पेयजल लें और गंदे जल का व्यवहार पीने के लिए न करे।
- किसी भी समस्या या जानकारी के लिए निकटतम सहायता शिविर अथवा गश्ती दल से संपर्क करे। अफवाहों पर ध्यान न दें।
- वेदी, तालाब एवं सरोवरों को स्वच्छ रखें। पूजन सामग्रियों का विसर्जन तालाब में न करे।
- कृपया शौचालय का प्रयोग करें।

सुरक्षा व्यवस्था (Police Help) :-

तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने के लिए नगर के पुलिस पदाधिकारियों एवं थानों के नम्बर निम्नलिखित हैं :-

1. कोतवाली थाना मो०-9431822198	2. सिविल लाईन्स थाना, मो०-9431822199
3. मुफस्सिल थाना मो०-9431822201	4. डेल्हा थाना मो०-9431822219
5. बोधगया थाना मो०-9431822208	8. मगध मेडिकल थाना मो०-9431822222
7. रामपुर थाना मो०-9431822220	6. बेला थाना मो०-9431822209
9. विष्णुपद मंदिर थाना मो० - 9431092838	

इन स्थानों पर 24 घंटे कार्यरत है, मंदिर परिसर में भी **मेला थाना** का गठन किया गया है। इन सुरक्षा शिविरों पर दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल की तैनाती की गई है। आवश्यकता पड़ने पर इनकी सहायता लें।

आपातकालीन दूरभाष :-

पुलिस - 100 | **फायर - 101** | **एम्बुलेंस - 102, 108, 1099**

Fortnight of the Ancestors

pitrapaksha

Gaya

संस्कृतियों का संगम :

पितृपक्ष महासंगम

हेल्पलाईन (24×7) : 9304401000

www.pinddaangaya.in

ANDROID APP ON Google play

pinddaangaya